दारुल उ़लूम देवबन्द के

कारनामे

By:

मौलाना मुह़म्मदुल्लाह क़ासमी

Translation:

प्रोफेसर मुह़म्मद सुलैमान

(6)

दारुल उ़लूम देवबन्द के कारनामे

1. दारुल उ़लूम देवबन्द के उज्जवल कारनामे
2. अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक और शैक्षिक आन्दोलन
3. दारुल उ़लूम की प्रचार व सुधारात्मक सेवायें
4. दारुल उ़लूम की रूपरेखा पर मदरसों की स्थापना
5. दारुल उ़लूम के विद्वानों की रचनात्मक सेवायें
6. दारुल उ़लूम और उर्दू सहित्य की ख़िदमत
7. स्वतन्त्रता संग्राम में दारुल उ़लूम का योगदान

दारुल उ़लूम देवबन्द के उज्जवल कारनामे

दारुल उ़लूम देवबन्द ने शिक्षा संस्था के नाते जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के लिये ऐसे विद्वान पैदा किये हैं जिन्हों ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में काम किया है। दारुल उ़लूम देवबन्द ने अपने विद्वानों का एक ऐसा गुलदस्ता तैयार किया है जिस में रंग–बिरंगे फूल अपनी सुगंध से प्रसन्नता का वातावरण उतपन्न कर रहे हैं। इस वास्तविकता से कौन परिचित नहीं है कि ज्ञान के इच्छुक ही किसी क़ौम या राष्ट्र की वास्तविक शक्ति होते हैं। मुसलमानों में होनहार नौजवानों की कमी नहीं है, लेकिन आज ऐसे असंख्य नौजवान और बच्चे मौजूद हैं, जो शिक्षा का शौक़ तो रखते हैं मगर उन के मार्ग में आर्थिक परेशानियां रूकावट हैं। वे चलना चाहते हैं मगर चल नहीं सकते, उभरना चाहते हैं मगर उभर नहीं सकते। इस मजबूरी को अनुभव करके दारुल उ़लूम देवबन्द और उसके विद्वानों द्वारा स्थापित किये गये तमाम दीनी मदरसों में विद्यार्थियों के लिये मुफ़्त शिक्षा के साथ–साथ खाने–पीने और रहने का भी मुफ़्त प्रबन्ध किया।

दारुल उ़लूम देवबन्द ने ज्ञान के इच्छुकों के लिये रास्ता साफ़ कर दिया है। इन तमाम रुकावटों को समाप्त कर दिया है जो शिक्षा प्रप्ति में बाधक थीं। अतः आज तक दीनी मदरसों में शिक्षा पाने वाले निःसंदेह सफ़ल जीवन व्यतीत कर रहे हैं, और उप महाद्वीप में प्रतिदिन उनकी ज़रूरत बढ़ रही है। मदरसों से पढ़े लिखे व्यक्तियों का भविष्य इस लिहाज़ से भी संतोष जनक है कि शिक्षा प्राप्त कर लेने के पश्चात वे जीवन की किसी भी लाइन को अपनायें उसमें सफल रहते हैं और बेरोज़गारी की शिकायत इनके सम्बन्ध में बहुत कम ही सुनने में आती है जबकि इस समय सरकारी शिक्षा पाने वालों में बेरोज़गारी की शिकायत

आम है।

अपनी एक सौ पचास साल की तारीख़ में दारुल उ़लूम ने हिन्दुस्तानी मुसलमानों को जहां एक ओर सामाजी जीवन का उन्नतिशील दृष्टिकोण दिया है, तो वहीं दूसरी ओर उन को सूझबूझ का संतुलन भी दिया है। आज मुसलमानों का जो वर्ग इसलामी दृष्टिकोण को पूर्ण रूप से अपनाये हैं इस्लामी सोच का संतोष भरा आकर्षण और सही इस्लामी जीवन अपनाये हुए हैं, वे दारुल उ़लूम का इतिहास और शिक्षा का प्रयत्न और परिणाम है। धार्मिक शिक्षा होने के बरख़िलाफ़ यहां का वातावरण रूढ़िवादी या दक़ियानूसी नहीं रहा है। इसमें कोई शंका नहीं कि दारुल उ़लूम एक ऐसी शिक्षा संस्था है जो क़दीम व जदीद (नये–पुराने) के हसीन संगम पर क़ायम है और जिस का 150 साला शानदार इतिहास है।

दारुल उ़लूम की स्थापना अचानक ही नहीं हो गयी। इसकी स्थापना में भाग लेने वाले हज़रात केवल प्रत्यक्ष ज्ञान ही से वास्ता नही रखते थे बल्कि उनके दिल अल्लाह की तजल्लियों से प्रकाशमान भी थे जिन को विशेष आत्मज्ञान के द्वारा दारुल उ़लूम की स्थापना पर नियुक्त किया गया था। दारुल उ़लूम के पांचवें मोहतमिम हज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद अहमद साहब का कथन है। "सांसारिक कारणों से इस मदरसे को जो कुछ प्रसिद्धि, सम्मान, उन्नति प्राप्त हुई है यह केवल अल्लाह का उपहार और विशेष अहसान इस मदरसे पर है। सदैव से इस मदरसे को अल्लाह के बन्दों की संरक्षता नसीब रही जिन की तवज्जो बातनी से (आयात्मिक लगाव) से दिन प्रतिदिन इस मदरसे ने हर प्रकार की तरक़्क़ी प्राप्त की। सदस्यों में सदभावना, अध्यापकों में एकता प्रत्येक कार्य में भलाई इन्ही हज़रात के लगाव की अलामत है।" (याददाश्त बनाम अराकीन शूरा दिनांक 26 जुलहिज्जा 1315 हिजरी इजलास मजलिस–ए–शूरा)

इस अवसर पर यह जानना बहुत आवश्यक है कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों और दूसरे देशों में दारुल उ़लूम की शिक्षा के क्या परिणाम निकल रहे हैं क्योंकि किसी कार्य की सफलता का आंकड़ा वास्तव में उस के परिणाम से लगता है इस सम्बन्ध में एक समय पूर्व लाहौर के प्रसिद्ध दैनिक समाचार पत्र 'ज़मींदार' ने दारुल उ़लूम देवबन्द के सम्बन्ध

में लिखा था "इस समय हिन्दुस्तान की चारों दिशाओं के बीच धार्मिक ज्ञान की जानकार जितनी हस्तियां दिखाई देती हैं उनमें बड़ा भाग इसी ज्ञान के दरिया (दारुल उ़लूम) से शिक्षा प्राप्त किये हुए हैं। हिन्दुस्तान के बड़े–बड़े उलमा ने इसी मदरसे में शिक्षा प्राप्त की है। वास्तव में शैक्षिक सेवा में हिन्दुस्तान की कोई शिक्षा संस्था इसका मुक़ाबला नहीं करती। यही नहीं बल्कि बाहरी मुल्कों में भी एक दो को छोड़ कर ऐसा दारुल उ़लूम नहीं जो इससे टक्कर ले सके और जिस न दीन इस्लाम की इतनी सेवा की हो।" (दैनिक ज़मीदार लाहौर दिनांक 24 जून 1923 ई0 संदर्भ तारीख़ दारुल उ़लूम पृष्ठ 425 खण्ड एक)

वास्तविकता यह है कि मुसलमानों की सामूहिक ज़िन्दगी के इतिहास में दारुल उ़लूम की शैक्षिक और तबलीग़ी संघर्ष का बड़ा हिस्सा है। दारुल उ़लूम की लम्बी ज़िन्दगी में कितने ही तूफ़ान आये और राजनीति में कितने ही इन्क़लाब आये मगर यह संस्था जिन उद्देश्यों को लेकर चली थी बड़ी दृढ़ता और साबित क़दमी के साथ उन को पूरा करने में लगी रही। फ़िक्र व ख़्याल के इस उथल–पुथल और फ़ितना फैलाने वाले आन्दोलनों के दौर में अगर साधारण रूप से अ़रबी मदरसे और विशेष रूप से दारुल उ़लूम जैसी संस्था का अस्तित्व न होता तो कहा जा सकता कि आज मुसलमान किसी बड़े भंवर में फंसे होते।

प्रचार, प्रसार, शिक्षा–दीक्षा और समाज सुधार का कोई कोना ऐसा मैदान नहीं जहां दारुल उ़लूम के पढ़े–लिखे कार्यरत न हों और इस्लामी समाज के सुधारने में उन्हों ने अपना जीवन न लगाया हो। समाज सुधार के बड़े–बड़े जलसों में जो रौनक़ है वह दारुल उ़लूम के उच्च कोटि के उलमा के कारण ही है। बड़े–बड़े इसलामी मदरसों की मसनद तदरीस की ज़ीनत आज यही लोग हैं। ख़्वाजा ख़लील अहमद शाह लिखते है "दारुल उ़लूम देवबन्द जो हिन्दुस्तान ही में नहीं बल्कि पूरी दुनिया में इसलामी शिक्षा का केन्द्र है और जामिया अज़हर के बाद दुनिया में इसका एक विशेष स्थान है। यही मदरसा है जिस न हिन्दुस्तान में इस्लामी शिक्षा के दरिया बहाये हिन्दुस्तान के कोने–कोने में यहां से पढ़े हुए दीन की शिक्षा और इस्लाम की सेवा में लगे हुए हैं। दारुल उ़लूम देवबन्द ने दीन और दीन की शिक्षा की जो सेवा की है वह सूर्य की

भांति प्रकाशमान है। हां, कोई अन्तरात्मा का अंधा हटधर्म और सचाई का शत्रु अपनी आंखे बन्द करे तो इसका इलाज नहीं" (तारीख़ दारुल उ़लूम पृष्ठ 1:452)

इसलामी दुनिया के बहुत कम देश ऐसे हैं जहां से दीन की इच्छा रखने वाले अपनी संतुष्टि के लिये इस दारुल उ़लूम में आये न हों। अतः पिछली एक शताब्दी में हज़ारों विद्यार्थी इस शिक्षा संस्था से शिक्षा प्रप्त करके ज्ञान को फैलाने का काम कर रहे हैं। श्रीलंका, जावा, सुमात्रा, मलाया, ब्रमा, चीन, मंगोलिया, तातार, क़ाजान, साउथ अफरीक़ा, बुख़ारा, समरक़न्द, अफग़ानिस्तान, मिस्र, शाम, यमन, इराक़, यहां तक कि मदीना मुनव्वरा और मक्का मुअज्जमा से भी विद्यार्थी यहां पढ़ने के लिये आये। यह कुछ कम सम्मान है कि वह देश जो नबुव्वत के ज्ञान से सीधे रूप में कभी लाभान्वित न हुआ हो वह तमाम इसलामी दुनिया की दीनी शिक्षा का केन्द्र बन जाये, यहां तक कि हरमैन शरीफैन (मक्का–मदीना) में भी इसी ज्ञान के सूर्य की किरणें प्रकाश फैला रही हैं। यह सौभाग्य भी किसी दूसरी शिक्षण संस्था के भाग्य में नही आया कि इस के विद्यार्थी ने मदीना मुनव्वरा और विशेष रूप से मस्जिद नबवी में अध्यापन कार्य किया हो। ह़ज़रत मौलाना ख़लील अह़मद सहारनपुरी "बज़लुल मजहूल" के लेखक, ह़ज़रत मौलाना हुसैन अह़मद मदनी ने वर्षों तक मदीना मुनव्वरा ही की मस्जिद में ह़दीस नबवी को पढ़ाया और ज्ञान के दरिया बहाये जिस से अ़रब के अतिरिक्त, मिस्र, शाम और इराक़ के विद्यार्थीयों ने लाभ प्राप्त किया और ज्ञान की प्यास बुझाई। ह़ज़रत मौलाना हुसैन अह़मद मदनी के बड़े भाई ह़ज़रत मौलाना सय्यद अह़मद ने जो दारुउ़लूम से पढ़े थे, मदीना मुनव्वरा में मदरसतु–ल–शरिया के नाम से एक मदरसा जारी किया जिस से मदीना मुनव्वरह के लोग लाभ उठा रहे हैं। मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी ने मक्का मुकर्रमा में मदरसा सौलतिया स्थापित किया। यह मदरसा भी दारुल उ़लूम की रूप रेखा पर आधारित है। इस प्रकार मक्का मुकर्रमा ही में दूसरा मदरसा मौलाना इसहाक़ अमृतसरी ने स्थापित किया जो दारुल उ़लूम देवबन्द के पढ़े लिखे थे। (तारीखे दारुल उ़लूम 1:456)

अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक और शैक्षिक आन्दोलन

1857 ई. के स्वतन्त्रता संग्राम विफल हो जाने और मुग़लिया सल्तनत के समाप्त होने के बाद जब अंग्रेज़ों ने अपने राजनीतिक लाभ को सम्मुख रख कर इस्लामी शिक्षा की पुरानी दर्सगाहों (मदरसों) को एक तरफ़ा समाप्त कर दिया था उस समय न केवल इस्लामी सभ्यता और संस्कृति को जीवित रखने के लिये बल्कि मुसलमानों के दीन व ईमान की रक्षा के लिये आवश्यकता थी कि उच्च कोटि की बुनयादों पर प्रथम श्रेणी की दर्सगाह (मदरसा) स्थापित की जाये, जो हिन्दुस्तान के मुसलमानों को नास्तिकता और बेदीनी के फ़ितने से सुरक्षित रख सके। उस वक़्त इस्लाम की सुरक्षा की तमाम ज़िम्मेदारी उलमा पर थी। अल्लाह की मेहरबानी से उलमा ने किसी भी समय अपना कर्तव्य निभाने में कोई कमी नहीं छोड़ी और दारुल उ़लूम देवबन्द के द्वारा तमाम आशायें पूरी हुईं। बहुत ही सीमित समय में दारुल उ़लूम की प्रसिद्धि दूर दूर तक पहुंच गई। जिस से यह न केवल हिन्दुस्तान बल्कि अफ़ग़ानिस्तान और मध्य ऐशिया, बर्मा, इण्डोनेशिया, मलेशिया, तिब्बत, श्रीलंका और पूर्व व दक्षिण अफ्रीक़ी देशों के मुसलमानों की एक अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान बन गई, जिस में इस वक़्त भी भारत व भारत से बाहर के लगभग चार हज़ार विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं।

दारुल उ़लूम देवबन्द केवल एक मदरसा ही नहीं बल्कि वास्तव में एक आन्दोलन है, एक संपूर्ण विचारधारा है, जिस से हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और बंग्लादेश के अतिरिक्त पूरे एशिया और दक्षिण पूर्वी अफ़्रीक़ा आदि मुल्कों के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उप महाद्वीप में जितने भी मदरसें हैं उन के तमाम अध्यापक लगभग किसी न किसी रूप में दारुल उ़लूम ही से पढ़े हुए हैं और प्रतिवर्ष सैकडों विद्यार्थी यहां से

शिक्षा प्राप्त करके, अध्यापन, प्रचार–प्रसार और लेखन कार्य के द्वारा दीन के प्रसार का कर्तव्य को पूरा करते हैं और अब अल्लाह की कृपा से यूरोप, ब्रिटेन और अमेरिका तक यह सिलसिला फैल चुका है।

दारुल उ़लूम देवबन्द ने उपमहाद्वीप के मुसलमानों की दीनी ज़िन्दगी में उन को एक श्रेष्ट जीवन पर पहुंचाने का बड़ा कारनामा अन्जाम दिया है। यह न केवल अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है बल्कि मानसिक उन्नति, सभ्यता और सामाजिक हौसला–मन्दियों का ऐसा केन्द्र भी है जिस की ठीक शिक्षा, उच्च चरित्र और नेक नियती पर मुसलमानों को सदैव भरोसा और अभिमान रहा है। जिस प्रकार अ़रबों ने एक समय में यूनानियों के ज्ञान को नष्ट होने से बचाया था ठीक इसी प्रकार दारुल उ़लूम देवबन्द ने उस ज़माने में इसलामी ज्ञान को विशेष रूप से ह़दीस के इल्म की जो सेवा की है वह इसलाम की इल्मी तारीख़ में एक सुनहरे कारनामे की हैसियत रखती है। दारुल उ़लूम देवबन्द ने हिन्दुस्तान में न केवल दीनी शिक्षा और इसलामी मूल्यों की रक्षा के ज़बरदस्त साधन इकट्ठे किये हैं बल्कि इस ने तेरहवीं सदी हिजरी के अंत में और चौदहवीं सदी में हमारे सामाजिक और राजनीतिक जीवन पर भी बहुत लाभदायक और लम्बे समय के लिये प्रभाव डाले हैं। 1857 ई. के आन्दोलन में हारने के पश्चात मुसलमानों की शैक्षिक और सांस्कृतिक वातावरण में जो सन्नाटा छा गया था अगर उस समय दारुल उ़लूम की स्थापना न होती तथा यह मुसलमानों का मार्गदर्शक न बनता, तो नहीं कहा जा सकता कि आज हिन्दुस्तानी मुसलमानों की तारीख़ क्या होती।

पिछली डेढ़ शताब्दी में दारुल उ़लूम देवबन्द ने दीन की शिक्षा, उपदेश विश्वासों में सुधार, चरित्र की रक्षा की जो महान सेवा की है और कर रहा है वह दुनिया पर स्पष्ट हैं अतः बहुत से देशों में दारुल उ़लूम से उत्तीर्ण तालिब इल्म (विद्यार्थी) वहां के मुसलमानों की दीनी रहनुमाई और प्रचार या सुधार करने में लगें हैं। महान विचारक मौलाना अली मियां नदवी लिखते हैं: "दारुल उ़लूम से पढ़े लोगों का जो समाज के आम लोगों से सम्बन्ध हैं वह किसी धार्मिक जमात का नहीं है। सारे हिन्दुस्तान में अ़रबी मदरसों का जाल बिछा हुआ है और वहां पर दारुल उ़लूम के पढ़े उस्ताद हैं।" (असर–ए–जदीद का चैलेंज पृष्ठ 36)

इस लिये दारुल उ़लूम के वजूद पर उपमहाद्वीप के मुसलमान बेहद अभिमान प्रकट करते हैं। हिन्दुस्तान में ब्रतानवी शिक्षा प्रबन्ध के जारी होने के बाद जब यहां एक नई सभ्यता और नये दौर का आरम्भ हो रहा था इस नाज़ुक समय में दारुल उ़लूम के पूर्वजों नें धार्मिक शिक्षा की स्थापना का आन्दोलन आरम्भ किया। अल्लाह की कृपा से उन की तहरीक मुसलमानों में लोकप्रिय सिद्ध हुई। अतः उपमहाद्वीप में स्थान–स्थान पर दीनी मदरसें जारी हो गये और एक लम्बे चौड़े जाल की सूरत में प्रति दिन विस्तार पाते जा रहे हैं।

दारुल उ़लूम के आरम्भिक काल ही में दारुल उ़लूम के विद्वानों के सम्बंध में यह बात सोची जाने लगी थी कि दारुल उ़लूम से पढ़ने के बाद उस के विद्वानों के लिये इ़ज़्ज़त व सम्मान के साथ उस के रोज़ी रोटी के दरवाज़े खुल जाते हैं अतः 1298 हि0 की रूएदाद (रिपोर्ट) में लिखा है–"ऐसा नहीं कि दारुल उ़लूम से फ़रागत प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी को आर्थिक कठिनाई का शिकार होना पड़ा हो जैसा कि दारुल उ़लूम स्थापना के समय कुछ लोगों का विचार था बल्कि अल्लाह ने यहां के विद्यार्थियों को बड़ा सम्मान प्रदान किया। यहां से जो विद्यार्थी पढ़ कर निकलते उन को समाज में बड़ा सम्मान मिलता और आर्थिक रूप से भी उन की दशा अच्छी होती।" (रूदाद जलसा इनाम 1298 हि. पृष्ट 15)

दारुल उ़लूम से जो व्यक्ति पढ़ कर निकले उन्हों ने शिक्षा दीक्षा, आत्मिक शुद्धि, चरित्र निर्माण, लेखन, फ़िक़ह व फ़तावा, मुनाज़रा, पत्रकारिता, भाषण, हिकमत आदि में जो अमूल्य सेवायें की हैं वे किसी विशेष वर्ग में सीमित नहीं है बल्कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के हर–हर प्रांत के आतिरिक्त विदेशों में भी फैल चुकी हैं। दारुल उ़लूम ने अपने स्थापना दिवस से अब तक इस उपमहाद्वीप में जो महान सेवायें की हैं उनका अनुमान निम्न तालिका से किया जा सकता है कि किस प्रकार उस ने दुनिया भर में अपने विद्वानों को पहुंचा दिया है जो पूरे क्षेत्र में चाँद और सूरज बन कर चमक रहे हैं और सृष्टि को जिहालत से निकाल कर ज्ञान की रौशनी दे रहे हैं।

दारुल उ़लूम से फ़ारिगों की मुल्कवार एक सौ पचास साल की फिहरिस्त निम्न तालिका में दी जाती है। लेकिन उन विद्यार्थियों की

संख्या जिन्हों ने दारुल उ़लूम से लाभ उठाया लेकिन शिक्षा पूरी न कर सके इस में शामिल नहीं है।

दारुल उ़लूम देवबन्द के फ़ुज़ला (विद्वानं)

1283/1866 से 1428/2007 तक की देशों के अनुसार संख्या –

हिन्दुस्तान	31275	पाकिस्तान	1524
बंग्ला देश	3297	मलेशिया	525
अफ़्रीक़ा	237	बर्मा	164
अफ़ग़ानिस्तान	121	नेपाल	119
रूस	70	चीन	44
ब्रतानिया	21	तुर्किस्तान	20
श्रीलंका	19	अमेरिका	17
ईरान	11	थाईलैण्ड	8
फिजी	7	सूडान	7
लबनान	6	वैस्टइण्डीज़	4
सऊदी अ़रब	2	इराक़	2
कुवैत	2	न्यूज़ीलैण्ड	2
मिस्र	1	मसक़त	1
यमन	1	मालदीव	1
इण्डोनेशिया	1	कम्बोडिया	1
फ्रांस	1		

हिन्दुस्तान के विद्वानों की संख्या ––	31275
विदेशी विद्वानों की संख्या ––	5465
कुल संख्या ––	36740

यदि दारुल उ़लूम देवबन्द के उलमा के हाथों स्थापित किये गये मदरसों के उलमा को भी उन के वास्ते से दारुल उ़लूम के ही स्नातक गिना जाये जबकि वास्तविकता भी यही है कि वह दारुल उ़लूम देवबन्द के फ़ुज़ला हैं, तो इस प्रकार इन की संख्या लाखों तक पहुंच जाती है। जिन के द्वारा दारुल उ़लूम देवबन्द का इल्मी व दीनी लाभ अब तक दुनिया के चप्पे–चप्पे में करोड़ों लोगों तक पहुंच चुका है।

दारुल उ़लूम की प्रचार व सुधारात्मक सेवायें

ईस्ट इण्डिया कम्पनी, जिसका उद्देश्य प्रत्यक्ष रूप में व्यापार करना और वास्तविक उद्देश्य हिन्दुस्तान में ईसाइयत का प्रचार और राजनीतिक सत्ता प्राप्त करना था, धीरे–धीरे यह हिन्दुस्तान की सियासी, शैक्षिक और प्रशासनिक मामलों में हस्तक्षेप करने लगी थी। इस कम्पनी ने अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिये स्थान–स्थान पर बाईबिल सोसाइटियां स्थापित की थीं। इंजील का अनुवाद देश की तमाम भाषाओं में किया गया और पूरी शक्ति के साथ ईसाइयत का प्रचार आरम्भ हो गया। कम्पनी की योजना यह थी कि भारत में बसने वालों विशेष रूप से मुसलमानों को जाहिल और निर्धन बना कर रखा जाये, जिसके लिये 1258 हि0 तदनुसार 1838 ई0 का शैक्षिक पाठयक्रम लार्ड मैकाले द्वारा तैयार किया गया। जिस की आत्मा यह थी कि एक ऐसी जमात (वर्ग) तैयार की जाये जो रंग और नस्ल के आधार पर हिन्दुस्तानी हो मगर मन और मस्तिष्क व कार्यों के आधार पर ईसाइयत के सांचे में ढली हो।

अंग्रेज़ी सभ्यता की यह चाल मुसलमानों की धार्मिक ज़िन्दगी, क़ौमी मूल्य, और शिक्षा ज्ञान को बरबाद करने वाली चाल थी जिस को स्वीकार करने के लिये वे किसी प्रकार भी तैयार नही हो सकते थे। अभी तक वे अपने धार्मिक जीवन को सुरक्षित रखने के लिये कोई उपाय नहीं सोच पाये थे कि उसी बीच 1857 ई0 का ग़दर (प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम) शुरू हो गया जिस की अथाह बरबादियों ने लोगों के दिलों को भयभीत कर दिया था। मन और मस्तिष्क मुर्दा हो चुके थे। पूरी क़ौम पर सुस्ती और शिथिलता छा गयी थी। हिन्दुस्तान में मुसलमानों के इतिहास में यह सबसे भयानक और ख़तरनाक समय था। ऐसे आपातकालीन समय में जबकि मुसलमानों के लिये निहायत बरबाद करने वाली दशा

उत्पन्न कर दी गयी थी, मुसलमानों ने इसको अनुभव किया, और इस के मुक़ाबले के लिये एक तरफ़ तो पूरे देश में स्थान –स्थान पर दीनी मदरसे स्थापित करके एक सुरक्षित क़िला बनाया, जिस का परिणाम यह हुआ कि मुल्क को सियासी हार के मानसिक प्रभाव को एक सीमा तक सुरक्षित कर दिया। दूसरी ओर ह़ज़रत मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी, ह़ज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी, मौलाना अबुल मंसूर और डाक्टर वज़ीर खां आदि हज़रात ने पूरी हिम्मत और वीरता के साथ ईसाइ मिश्नरीज़ का ज़बरदस्त मुक़ाबला किया और हिन्दुस्तान के मुसलमानों को ईसाई बनाने के ईसाई प्रचारकों के इरादे को सफ़ल नही होने दिया।

उस समय ईसाई प्रचारक प्रचार के लिये चार तरीक़े अपनाये हुए थेः–

(1) शिक्षा किसी भी धर्म की तबलीग़ (प्रचार) के लिये सबसे बड़ा साधन है। उस समय प्रत्येक मिशन स्कूल में इंजील की शिक्षा अनिवार्य थी। उस समय उलमा ने मुस्लिम बच्चों के दीन व ईमान की सुरक्षा के लिये यह बात आम कर दी कि मिशन स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे क्रिसचन (ईसाई) बन जाते हैं। इस लिये मुसलमानों ने अपने बच्चों को मिशन स्कूल में प्रवेश दिलाने में सावधानी बरती और पूरी शक्ति से अंग्रेज़ी शिक्षा का विरोध किया। यह एक प्रकार की सुरक्षा ही थी जो ईसाई मिशन के ख़िलाफ़ मुसलमानों की ओर से अमल में लायी गयी मुसलमानों में यह जागृति उलमा ने ही पैदा की थी।

(2) ईसाई मिशनरियों ने प्रचार का दूसरा साधन अस्पतालों को बनाया। अस्पतालों में बीमारों को प्रभावित करने के लिये प्रयत्न किया जाता था। यह सिलसिला अभी भी जारी है। इस लिये एलोपेथिक इलाज क विरोध किया गया। मुसलमान अपने इलाज के लिये अधिकतर यूनानी जड़ी बूटी और अयुर्वेदिक दवाओं को ही अपनाते थे। यही कारण है की यूनानी इलाज के देसी तरीक़े आज तक हिन्दुस्तान में प्रचलित हैं।

(3) ईसाई मिशनरी का तीसरा तरीक़ा साधारण जनता के बीच में भाषण और मुनाज़रा (वादविवाद) का था। हमारे उलमा ने इस मैदान में भी ईसाई प्रचारकों का बढ़–चढ़ कर मुक़ाबला किया और अपनी अटूट दलीलों से ईसाई मिशनरियों को हराया। उन की योजनायें मिट्टी में मिल

गयीं। इस सम्बन्ध में दिल्ली, आगरा और शाहजहांपुर के नाम विशेष रूप से लिये जा सकते हैं। आगरा में मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी और शाहजहांपुर में ह़ज़रत मौलाना क़ासिम साह़ब नानौतवी ने अपने साथियों के साथ मिलकर ईसाई पादरियों का ऐसा मुक़ाबला किया कि वे ठहर न सके (शाहजहांपुर का वादविवाद विस्तार से 'गुफ्तगू–ए–मज़हबी' के नाम से छप चुका है।) उपरोक्त स्थानों के अलावा और भी बहुत से स्थानों पर उलमा ने पादरियों से वार्तालाप किये और इस प्रकार ईसाई मिशन के प्रभाव को फैलने से रोकने में बहुत कठोर कार्य किया। इस काम में निःसंदेह हिन्दुस्तान के बहुत से उलमा का हिस्सा रहा है। और इनकी इस महत्वपूर्ण सेवा को नज़र अंदाज़ नहीं किया जा सकता। मगर इस सम्बन्ध में उलमा देवबन्द ने जो महान सेवा की है वह अपने स्थान पर अलग विशेष स्थान रखती है।

(4) ईसाई मिशन के प्रचार का चौथा तरीक़ा लेखन का कार्य था। इस में भी प्रचार प्रसार का वही गन्दा तरीक़ा अपनाया गया था जिस में ईसाइयत की अच्छाई बयान करने से अधिक ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और इस्लाम पर हमले किये जाते थे। उलमा ने इस मैदान में भी ईसाई मिशनरियों को चैलेंज किया। जिसके परिणाम स्वरूप उसकी प्रतिदिन की बढ़ौतरी किसी सीमा तक कमज़ोर पड़ गयी। ह़ज़रत मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी ने 'इज़हारुल हक़' के नाम से किताब लिख कर मिशनरियों के आरोपों के परख़च्चे उड़ा दिये। ग़र्ज़ देवबन्द और उस के उलमा ने उस समय दीन की रक्षा की ख़ातिर हर सम्भव प्रयत्न किया और प्रत्येक आंतरिक और बाहरी फ़ितने से बचने के लिये सफ़ल प्रयत्न करके हर सम्भव तरीक़े से इसलाम की रक्षा की। साथ ही दीन की सुरक्षा के लिये दीनी मदरसों का जाल फैला कर इस दुष्ट प्रचार का मुक़ाबला करने की कोशिशें कीं। इस्लामी नीतियों को सार्वजनिक जनता तक पहुंचाने के लिये पुस्तकों का प्रकाशन किया। इस में कुछ पुस्तकें ईसाइयत के रद्द में भी प्रकाशित की गयीं, और उन किताबों के द्वारा ईसाई आरोपों के उत्तर से जनता को आश्वस्त किया गया। उलमा–ए–उरुल उ़लूम ने हज़ारों पुस्तकों को प्रकाशित करके लिट्रेचर मुसलमानों को दिया जिसके कारण ईसाई मिशन के मार्ग में बहुत बड़ी रुकावट खड़ी हो गयी। इस प्रकार ईसाई मिशन को अपने

प्रचार में असफ़लता का सामना करना पड़ा।

मुसलमानों के धर्म परिवर्तन का फितना

1341 हि. तदानुसार 1923 ई0 में आर्य समाज के शुद्धि व संगठन ने ज़बरदस्त फ़ितना और इस के कारण बहुत से मुसलमान दीन से फिरने लगे। विशेस रूप से आगरा व आस पास के मलकानों में धर्म परिवर्तन से हिन्दुस्तान के मुसलमानों में बड़ा आक्रोश पैदा हो गया था। इस कारण भारत की अंजुमनें और मदरसे तुरन्त इसको दूर करने के लिये तत्पर हुए। इस संस्था ने बड़ी हिम्मत व साहस के साथ इसमें भाग लिया और अपने पचास प्रचारक उस क्षेत्र में भेजे जो काफ़ी समय तक बड़े प्रयत्न के साथ प्रचार का काम करते रहे, इस उद्देश्य के लिये आगरा में एक स्थायी प्रचार कार्यालय स्थापित किया और इस धर्म परिवर्तन के क्षेत्र में बीस मदरसे क़ायम कर दिये जिन में मलकानों और उनके बच्चों को इस्लाम के विश्वासों और दीन की आवश्यक शिक्षा दी जाती थी। इस प्रयत्न का यह लाभ हुआ कि धर्म परिवर्तन का बढ़ता हुआ सैलाब रूक गया। (रूदाद 1341 हि. पृष्ठ 22—26)

दारुल उ़लूम देवबन्द के प्रचारकों को धर्म परिवर्तन रोकने में जो सफलता प्राप्त हुई वह सभी जानते हैं। दीन की रक्षा, विरोधियों पर रोक और मुसलमानों के सुधार के सम्बन्ध में दारुल उ़लूम के अध्यापक, प्रचारक और प्रबन्धकों का हिस्सा सारे हिन्दुस्तान में बढ़—चढ़ कर है। उदाहरण स्वरूप अगर इन असीमित प्रयत्नों को देख लिया जाये जो आर्य समाज ने इस्लाम का विरोध किया तो आप को स्पष्ट पता चल जायेगा कि इन विरोधों के मुक़ाबले में सबसे अधिक प्रभाव के आधार पर जो सीना तान कर आगे बढ़ा वह दारुल उ़लूम देवबन्द ही है जो हिन्दुस्तान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दीनी व समाजी संस्कृति की सुरक्षा और स्थायित्व का साधन बना।

क़ादयानी फ़ितना

अंग्रेज़ी शासन काल में पश्चमी सभ्यता और ईसाई मिशनरियों के आक्रमण के अतिरिक्त इस्लाम धर्म में तरह—तरह की शंकायें पैदा की जाती थीं चाहे उसका सम्बन्ध शरीअ़त व क़ानून से हो, संस्कृति और सभ्यता से हो, या सामाजिक, आर्थिक या इतिहास से हो। हिन्दुस्तानी

उलमा ने इन दोनों आन्दोलनों और शक्तियों का पूरी ताक़त के साथ मुक़ाबला किया, विशेष रुप से देवबन्द के उलमा ने माफ़ी और रक्षात्मक मार्ग न अपना कर उन पर आक्रमण और आलोचना का मार्ग अपनाया। इस के परिणाम स्वरूप ईसाईयों का प्रचार और शंकायें डालने आदि का कार्यक्रम कमज़ोर पड़ गया, और मुसलमानों के अन्दर इस्लाम के प्रति नया विश्वास उत्पन्न हो गया और अपनी संस्कृति सभ्यता व इतिहास पर गर्व करने लगे। ईसाई मिशनरियों को जब अपने तमाम हरबों (चालों) में असफलता का मुंह देखना पड़ा, और उनकी तमाम चालें असफल हुयीं, तो मुसलमानों के अन्दर ही ऐसे व्यक्तियों की तलाश आरम्भ हुई जो मुसलमानों के लिये आस्तीन का सांप सिद्ध हों और इस्लाम की पवित्र शिक्षा को गन्दा कर सकें, चुनाचे अंग्रेज़ों के संकेत पर पंजाब का मिर्ज़ा गुलाम अह़मद क़ादियानी पहले मसीह मौऊ़द, फिर महदी और ज़िल्ली व बरूज़ी का फ़लसफ़ा बयान करने के बाद योजनानुसार नबुव्वत का दावा कर बैठा जबकि मुसलमानों का विश्वास है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर नबुव्वत का सिलसिला बंद हो गया और आप के बाद कोई नबी नहीं आएगा। यह क़ादियानियों का मसला सूबा पंजाब से उठा और पाकिस्तान होता हुआ मुसलमानों के दीन व ईमान पर चोट करते हुए इस ने इसराईल और लन्दन को अपना कार्यक्षेत्र बना लिया।

देवबन्दी उलमा ने आरम्भ से ही इस बड़े फ़ितने की गंभीरता को अनुभव किया। दारुल उ़लूम के संस्थापक ह़ज़रत मौलाना क़ासिम मुह़म्मद नानौतवी ने तो अपनी दीनी सूझबूझ के आधार पर इस फ़साद के उत्पन्न होने से पहले ही अनुमान लगा लिया था, अतः उन्हों ने इस विषय के तर्क पर आधारित पुस्तकें लिखीं। क़ादयानी फ़साद के सर उठाते ही उसके मुक़ाबले में ह़ज़रत मौलाना सय्यद अनवर शाह कश्मीरी, मौलाना सैयद मुह़म्मद अ़ली मूंगीरी, मौलाना मुर्तज़ा हसन चान्दपुरी, मौलाना अह़मद अली लाहौरी, मौलाना हबीबुर्रहमान लुधियानवी, मौलाना मुफ़्ती शफ़ी देवबन्दी, मौलाना मुह़म्मद इदरीस कान्धलवी, मौलाना बदरे आलम मेरठी, मौलाना मुह़म्मद अली जालन्धरी और क़ाज़ी अहसानुल्लाह शुजाआबादी आदि विद्वानों ने जो महान सेवायें की हैं वह तारीख़ का एक महत्वपूर्ण अध्याय हैं।

यह कहना ग़लत न होगा कि क़ादयानी फ़ितने को समाप्त करने के लिये दृढ़ता से काम करने का साहस दारुल उ़लूम को मिला है। हिन्दुस्तान में ह़ज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी पूर्व शेख़ुल ह़दीस देवबन्द के भरपूर पीछा करने के कारण क़ादियानी फ़िरक़ा लगभग समाप्त हो गया था। 1947 ई0 में भारत विभाजन के बाद क़ादियानियों ने अपनी सरगर्मियों का केन्द्र चनाब नगर (पाकिस्तान) को बनाया, मगर पाकिस्तान में भी दारुल उ़लूम के पढ़े विद्वानों की देखरेख में क़ादियानियों का घेराव जारी रहा अतः उनकी लगातार कोशिशों के प्रयत्न से पाकिस्तान की क़ौमी असम्बली ने क़ादियानियों को 1974 ई0 में ग़ैरमुस्लिम अल्पसंख्यक घोषित कर दिया। इस आन्दोलन का संचालन दारुल उ़लूम के प्रसिद्ध विद्वान ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ बनूरी कर रहे थे।

अप्रैल 1984 ई0 में जब पाकिस्तान के राष्ट्रपति स्वर्गीय जनरल ज़ियाउलहक़ ने क़ादयानियत पर रोक लगाई तो क़ादियानियों का प्रसिद्ध विद्वान मिर्ज़ा ताहिर भागकर लन्दन पहुंच गया। इस पर क़ादियानियों ने अपने प्रचार का रूख़ हिन्दुस्तान की तरफ़ मोड़ दिया स्थान–स्थान पर जलसे और सभायें आयोजित करके साधारण लोगों को धोखा देने लगे। अल्लाह की कृपा से देवबन्द की मजलिस–ए–शूरा के कार्यकर्ताओं ने दारुल उ़लूम की स्थापना के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपने पूर्वजों के अनुसार इस धर्म परिवर्तन के फ़ितने को सर उठाने से पूर्व ही भांप लिया और उन्हों ने ह़ज़रत मौलाना सैय्यद असद मदनी, अध्यक्ष जमीअतुल उलमा–ए–हिन्द व शूरा मेम्बर दारुल उ़लूम की विशेष कोशिश पर क़ादियानियत का पीछा करने के लिये सामूहिक प्रयत्न की आवश्यकता का एहसास मुसलमानों में विशेष रूप से अ़रबी मदरसों के ज़िम्मेदारों में पैदा किया। जिस के लिये 29 से 31 अक्तूबर 1986 ई॰ को तीन दिन का अन्तरराष्ट्रीय अधिवेशन 'तहफ़्फ़ुज़ ख़त्मे नबुवत' दारुल उ़लूम देवबन्द में कराया। इस के स्वागताध्यक्ष ह़ज़रत मौलाना मरग़ूबुर्रहमान मोहतमिम दारुल उ़लूम देवबन्द थे और इस अधिवेशन का उद्घाटन ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली मियां नदवी नाज़िम दारुल उ़लूम नदवतुल उलमा लख़नऊ ने किया। इस फ़साद को समाप्त करने के लिये जलसे में सम्मिलित व्यक्तियों के दिलों में नया उत्साह

पैदा हुआ। इसी अवसर पर 'आल इंडिया तहफ़्फ़ुज़ ख़त्मे नबुव्वत' की स्थापना की गयी। 31 अक्तूबर को अधिवेशन की समाप्ति पर जनाब डॉक्टर अब्दुल्लाह उमर नसीफ़ पूर्व जनरल सेक्रेट्री राबता आलमे इस्लामी मक्का मुकर्रमा ने सम्बोधित करते हुए कहा–"मैं दारुल उ़लूम देवबन्द को मुबारकबाद पेश करता हूँ। वास्तव में दारुल उ़लूम के पूर्वजों ने हिन्दुस्तान में क़ादियानियत के ख़तरनाक फ़ितने के दोबारह प्रयत्न करने को समाप्त करने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय जलसा करके अपनी जागरूकता का परिचय दिया है। मैं इस तारीख़ी जलसे में भाग लेने को अपना सौभाग्य समझता हूं"।

मुस्लिम पर्सनल लॉ

अंग्रेज़ी सरकार के समय में जब भी मुस्लिम पर्सनल लॉ में फेर बदल या कोई ऐसा क़ानून बनाने का प्रयत्न किया गया जो इस्लामी शरीअ़त के विरूद्ध हो सकता था तो उलमा–ए–देवबन्द ही उस का डट कर विरोध करते थे और हर समय अपने कर्तव्य की पहचान का सुबूत देते थे। शारदा एक्ट और वक़्फ़ बिल के अवसरों पर साहस और सफ़ाई के साथ देवबन्द के उलमा ने इसलाम का दृष्टिकोण पेश करने में कभी झिझक अनुभव नहीं की। 1917 ई0 में मुसलमानों के अवश्यक अधिकारों की मांग को लेकर दारुल उ़लूम देवबन्द के पाँचवें मोहतमिम ह़ज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद साह़ब ने 'तजवीज़ उलमा–ए–देवबन्द' के शीर्षक से एक तहरीर (लेख) ब्रिटिश सरकार को सौंपी। यद्यपि ब्रिटिश सरकार के ध्यान न देने के कारण यह तजवीज़ मंज़ूर न हो सकी लेकिन उलमा–ए–देवबन्द की ओर से ठीक समय पर अपनी ज़िम्मेदारी को निभाने का सुबूत दिया गया।

इस के बाद एक लम्बे समय के बाद आठवीं दहाई में हकीमुल इसलाम ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब पूर्व मोहतमिम दारुल उ़लूम देवबन्द ने ऑल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की क़यादत की और मुसलमानों के धार्मिक और पारिवारिक क़ानून के लिये कार्य करते रहे और आज भी बोर्ड की कलीदी ज़िम्मेदारियां दारुल उ़लूम के पढ़े लिखे लोगों के हाथों में हैं जिन को वे भली भांति पूरा कर रहे हैं। देवबन्द के उलमा को यह विशेषता प्राप्त है कि उन्हों ने हर मामले में

धार्मिक दृष्टिकोण को सामने रखा और बाहरी आवाज़ो और आन्दोलनों से प्रभावित नहीं हुए। अतः मुस्लिम प्रसनल लॉ में परिवर्तन के विरोध में सब से अधिक प्रभाविक आवाज़ जिस वर्ग की रही है वह उलमा–ए–देवबन्द हैं।

फ़ितनों का मुक़ाबला

दारुल उ़लूम के कार्यकर्ताओं ने आरम्भ ही से धार्मिक हमदर्दी और इस्लामी भावना से भरपूर रह कर अपने अध्यापन के कार्यों के साथ इसलामी दुनिया पर गहरी दृष्टि रखी है। जहां कहीं भी किसी फ़ितने ने सर उठाया तो देवबन्द के विद्वानों ने उसका पूर्ण रूप से पीछा कर के अपनी ईमानी शक्ति का प्रदर्शन किया। महान विचारक ह़ज़रत मौलाना अबुल हसन अली मियां नदवी के कथनानुसार – "जिस विशिष्टता पर दारुल उ़लूम की नींव पड़ी और जो उसका वास्तविक उद्देश्य था वह दीन की हमदर्दी और इस्लाम की रक्षा का जज़बा था। यह है दारुल उ़लूम की विशेषता। ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी और उनके उच्च स्तर साथी मौलाना रशीद अह़मद गंगोही के अन्दर जो भावनायें काम कर रही थी उसने इनसे दारुल उ़लूम की नीव रखवाई। मैं समझता हूँ कि यह बात उचित नहीं होगी ंकि यह केवल पढ़ने–पढ़ाने का केन्द्र स्थापित किया गया था। इससे बढ़ कर संस्थापकों के प्रति अन्याय नहीं हो सकता। ऐसा कहने वालों को उन बजुर्गों की आत्माओं के सामने लज्जित होना पड़ेगा। जिस समय यह कहा जाता था कि यह केवल एक मदरसा है ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द तड़प उठते थे। उन के अनुसार यह इसलाम का एक क़िला (दुर्ग) है और इस के अनुयाईयों की ट्रेनिंग के लिये एक छावनी और मुग़लिया सरकार के समाप्त होने वाले चराग़ (सरकार) का वैकल्पिक था।" (पाजा सुराग़–ए–ज़िन्दगी)

अन्त में दीन के मदरसों से उपमहाद्वीप के मुसलमानों को क्या लाभ पहुंचा? इस सम्बन्ध में अ़ल्लामा इक़बाल के विचार भी सामने रखने चाहिएं। एक बार उन्हों ने अपने एक विश्वसनीय, हकीम अह़मद शुजा से फ़रमाया थाः "इन मदरसों को इस ह़ालत में रहने दो, ग़रीब मुसलमानों के बच्चों को इन्हीं मदरसों में पढ़ने दो, अगर यह मुल्ला और दरवेश न रहे तो जानते हो क्या होगा? जो कुछ हो सकता है मैं अपनी आंखो से

देख आया हूँ। अगर हिन्दुस्तान के मुसलमान इन मदरसों के प्रभाव से वंचित हो गये तो बिलकुल इसी प्रकार होगा जिस प्रकार उन्दलुस (स्पेन) में मुसलमानों के आठ सौ बरस राज्य के बावजूद आज ग़र्नाता और क़ुरतबा के खण्डर और अल–हुमारा के निशानों के सिवा इस्लाम के सहयोगियों और इस्लामी सभ्यता का कोई निशान नहीं है। हिन्दुस्तान में भी आगरा के ताज महल और दिल्ली के लाल क़िले के सिवा मुसलमानों की आठसौ साला हुकूमत और उनकी संस्कृति और सभ्यता का कोई निशान नहीं मिलेगा।" (ख़ून बहा, हकीम अह़मद शुजा 1:439)

दारुल उ़लूम की रूप रेखा पर दीनी मदरसों की स्थापना

हिन्दुस्तान में पहले मदरसों का प्रबन्ध तेरहवीं सदी हिजरी तक लगभग समाप्त हो चुका था। कहीं–कहीं स्थानीय प्रबन्ध में डांवांडोल मदरसों का अस्तित्व बराये नाम बाक़ी था। जिन में संसारिक शिक्षा को महत्ता दी जाती थी ह़दीस, तफ़सीर आदि की शिक्षा का बहुत कम रिवाज (प्रचलन) था। इस के विपरीत दारुल उ़लूम की स्थापना लिल्लाही विचार धारा पर की गयी थी। इसलिये यहां संसारिक शिक्षा के स्थान पर धार्मिक शिक्षा, तफ़सीर (व्यख्य) ह़दीस और फ़िक़्ह को महत्ताा दी गई है। आगे चलकर उपमहाद्वीप में जितने भी दीनी मदरसें स्थापित हुए हैं उन में भी कम या अधिक दारुल उ़लूम के इसी तरीक़े को पसन्द किया गया। अतः दारुल उ़लूम की स्थापना के छह माह बाद जब 1283 में सहारनपुर में मदरसा मज़ाहिर उ़लूम की स्थापना हुई तो उस ने भी वही निसाब (पाठयक्रम) जारी किया जो दारुल उ़लूम में जारी था। फिर धीरे–धीरे दारुल उ़लूम की रूप रेखा पर विभिन्न स्थानों पर मदरसें स्थापित हो गये। थाना भवन जिला मुज़फ़्फ़रनगर में हाफ़िज़ अब्दुल रज़्ज़ाक़ साहब ने एक दीनी मदरसे की स्थापना की और उसको शैक्षिक और इन्तज़ामी तौर पर दारुल उ़लूम की शाख़ नियुक्त किया। 1285/1869 की रूदाद में लिखा है "हमको अतिप्रसन्नता है कि अधिकतर हज़रात अपने साहस से अ़रबी मदरसों को विस्तार देने में प्रयत्नशील हैं तथा विभिन्न स्थानों, दिल्ली, मेरठ, खुर्जा, बुलन्दशहर, सहारनपुर आदि में मदरसें स्थापित किये और दूसरे स्थानों जैसे अलीगढ़ आदि स्थानों पर स्थापित करने की योजना चल रही है। (रूदाद पृष्ठ 70, 1285 हि.)

हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी ने अपने भाषण में फ़रमाया था:

"अकसर मदरसे इसी मदरसे (दारुल उ़लूम) की प्रेरणा से ही स्थापित किये गये हैं अगर कोई मदरसा इससे तरक़्क़ी पाजाये वह बुद्धिमानों के नज़दीक देवबन्द ही की प्रछाई होगी"। (रूदाद 1290 हि0 पृष्ठ 12)

दारुल उ़लूम की रूप रेखा पर इस समय जो मदरसे स्थापित हुए दारुल उ़लूम की रूदादों में विस्तार से उनका वर्णन किया गया है। 1297/1880 की रूदाद में लिखा है, "हमें बड़ी प्रसन्नता है और अल्लाह की कृपा है कि इस साल, मेरठ, गुलावठी, दानपुर में इस्लामी नये मदरसे स्थापित हुए हैं और उनका सम्बन्ध कम या अधिक इस मदरसे (दारुल उ़लूम देवबन्द) से है। इन स्थानों के निवासियों को धन्यवाद देते हैं और अल्लाह से दुआ है कि इन मदरसों को स्थायित्य (क़ायम) हो और प्रतिदिन उन्नति करें और बड़े–बड़े शहरों और क़स्बों के मुसलमानों को इस प्रकार के अच्छे कार्य करने की तौफ़ीक़ हो। ए अल्लाह वह दिन दिखा कि कोई बस्ती मदरसों से खाली न रहे। और गली कूचे में इल्म का बोलबाला हो और अज्ञानता दुनिया से समाप्त हो जाये, आमीन।" (रूदाद 1297 हि0 पृष्ठ 61–63)

प्रसिद्ध शहर मेरठ में हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी ने अपने क़याम के दौरान एक मदरसा स्थापित किया था, यह मदरसा दारुल उ़लूम की शाख़ था, इस के प्राथमिक अध्यापक दारुल उ़लूम देवबन्द के पढ़े लिखे थे। मौलाना नाज़िर हसन देवबन्दी, मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान देवबन्दी और मौलाना हबीबुर्रहमान उस्मानी, जो बाद में सिलसिलेवार दारुल उ़लूम के मुफ़्ती ए आज़म और मोहतमिम हुए। इन सबने इस मदरसे में पढ़ाया है। मौलाना क़ाज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद और मौलाना सिराज अह़मद मेरठी जैसे विद्वान इस मदरसे के प्रथम विद्यार्थी थे।

मुरादाबाद के मदरसे की स्थापना के सम्बन्ध में 1297 हि. (1880 ई.) की रूदाद में लिखा है "मुरादाबाद एक प्रसिद्ध शहर है वहां के ग़रीब मुसलमानों ने हज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी के भरोसे पर दो तीन साल से एक मदरसा इसलामी स्थापित किया है। यद्यपि आरम्भ में यह मदरसा बहुत छोटा था परन्तु अब काफ़ी उन्नति पर है और अधिक उन्नति करेगा। इस मदरसे के कार्यकर्ता प्रयत्नशील और अमानतदार हैं। अल्लाह तआला इन के प्रयत्न में बढ़ोतरी करे और इस

कारखाने को क़ायम रखे, तथा और अधिक उन्नति दे, आमीन।" (रूदाद 1297 हि0 पृष्ठ 61—63)

इस अवसर पर यह बात याद रखनी है कि आज मदरसों का स्थापित करना कुछ अधिक कठिन नहीं है, मगर सौ साल पहले का विचार किया जाये जब इस प्रकार के मदरसों का चलन नहीं था और लोग मदरसों की स्थापना के तरीक़े और उनकी आवश्यकताओं से अधिक जानकारी नहीं रखते थे। इन हालात में सरकार की सहायता के बगैर केवल मुसलमानों के चन्दे के भरोसे पर दीनी मदरसे स्थापित करना एक बड़ा काम था। उस समय से लेकर अबतक उप महाद्वीप में अल्लाह की कृपा से असंख्य दीनी मदरसे स्थापित हो चुके हैं, और प्रति दिन इन की संख्या बढ़ती जा रही है। इनमें से बहुत से मदरसों का दारुल उ़लूम के साथ इल्हाक़ (सम्बद्धता) भी है। हिन्दुस्तान के अधिकतर मदरसों को आपस में मिलाने के लिये राबता मदारिस अरबिया का मरकज़ (केन्द्र) दारुल उ़लूम में बनाया गया है, जो राबता मदारिस, देवबन्दी जमात के संगठन और एकता का एक लाभदायक साधन है। दारुल उ़लूम का उद्देश्य केवल आलिम बना देने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इस के लगनशील व्यक्तियों से ऐसा वातावरण भी बन गया है जिन से स्थान—स्थान पर दीनी मदरसें स्थापित होते चले गये। दारुल उ़लूम की स्थापना के पश्चात मुल्क में जिस अधिकता के साथ दीनी मदरसे स्थापित हुए इससे ऐसा प्रतीत होता है कि मानों इस समय मुसलमानों में दीनी मदरसे स्थापित करने की बड़ी लगन थी। लेकिन मदरसे को चलाने के लिये पुराने साधन समाप्त हो चुके थे इस लिये साहस ढीले पड़ गये थे, मगर जब दारुल उ़लूम देवबन्द ने पहल की तो मुसलमानों के सामने एक नया रास्ता खुल गया। इसी के साथ कुछ मदरसों के प्रबन्धकों ने दारुल उ़लूम की हैसियत को एक केन्द्र मानकर यह उचित समझा कि अपने—अपने मदरसों को दारुल उ़लूम देवबन्द के आधीन कर दें।

यह वास्तविकता है कि आज उपमहाद्वीप में जिस क़दर भी दीनी मदरसे दिखाई देते हैं उन में से अधिकतर वही हैं जो दारुल उ़लूम देवबन्द के नक़्शे क़दम (रूपरेखा) पर स्थापित किये गये हैं। इस लिये दीनी मदरसों की शिक्षा की ज़िम्मेदारियां अधिकतर दारुल उ़लूम से

फ़ारिग़ विद्वानों से पूरी की जाती है। इस प्रकार दारुल उ़लूम देवबन्द का वजूद इसलाम की नई तारीख़ में एक नये युग की हैसियत रखता है, और यहीं से इस समय पूरे उपमहाद्वीप में दीनी शिक्षा की संस्थाओं का जाल फैला हुआ है। बहुत से हज़रात दीनी मदरसों विशेषकर दारुल उ़लूम से शिक्षा प्राप्त करने के बाद दीनी मदरसा स्थापित करने की लगन को लेकर निकलते हैं। उन्हों ने बहुत से मदरसों को स्थापित किया, अतः दारुल उ़लूम की स्थापना से अब तक उप महाद्वीप में इतनी बड़ी संख्या में मदरसे क़ायम करना आसान नहीं है।

हिन्दुस्तान की सीमाओं में मौजूद मदरसों की संख्या का कोई निश्चित रिकॉर्ड नहीं है, हालांकि दारुल उ़लूम देवबन्द के राब्ता मदारिस इस्लामिया अरबिया के ज़रिये हिन्दुस्तान के तक़रीबन ढाई हज़ार से ज्यादा मदरसे दारुल उ़लूम से संबद्ध हैं।

पाकिस्तान में विफ़ाकुल मदारिस इस्लामिया के नाम से एक बोर्ड क़ायम है जिसके छोटे—बड़े सभी सदस्य मदरसों की तादाद भी हज़ारों में है जिन में अकसर और बड़े दीनी मदरसे देवबन्दी विचारधारा के हैं।

बंगलादेश के चप्पे—चप्पे में भी दीनी मदरसों का जाल बिछा हुआ है जो वास्तव में दारुल उ़लूम की देन है। पाकिस्तान व बंग्लादेश के अतिरिक्त दक्षिण अफ़्रीक़ा, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, ज़ाम्बिया, मॉरीशस, फ़िजी आदि मुलकों में दारुल उ़लूम की रूप रेखा पर मदरसे क़ायम हैं और दारुल उ़लूम से संबद्धता पर गर्व महसूस करते हैं।

दारुल उ़लूम के विद्वानों की रचनात्मक सेवायें

दारुल उ़लूम के विद्वानों ने पठन पाठन और भाषण व उपदेश और दूसरे कार्यों के साथ–साथ लेखन कार्य के क्षेत्र में भी महान कारनामें अंजाम दिये हैं। वे न केवल उप महाद्वीप के मुसलमानों के लिये बल्कि इसलामी दुनिया के लिये भी एक गर्व की बात है। दीनी ज्ञान से सम्बंधित कोई विद्या ऐसी नहीं है जिस में इन की पुस्तकें नहीं हैं। इन में बड़ी–बड़ी पुस्तकें भी हैं और छोटे–छोटे रिसाले और किताबचे भी हैं। ये पुस्तकें अधिकतर तो अ़रबी, फ़ारसी और उर्दू भाषा में हैं मगर इन के अतिक्ति दूसरी भाषाओं में भी मिलती हैं।

दारुल उ़लूम देवबन्द की सेवाओं के दो रुख हैं, (1) आंतरिक, जिस का सम्बंध पढ़ाने लिखाने से है (2) और दूसरा रूख बाहरी जो आम मुसलमानों और मुल्क से सम्बन्धित है। जन सम्पर्क, उपदेश, प्रचार, फ़तवा, दीनी व राष्ट्रीय मामलात में क़ौम की शरई (धार्मिक) मार्ग दार्शन और तस्नीफ़ व तालीफ़ (रचनात्मक कार्य) इस के अहम विषय हैं। इस सिलसिले में दारुल उ़लूम से जो क़ाबिल क़दर सेवायें प्राप्त हुईं वह उप महाद्वीप की तारीख़ में अपनी मिसाल आप हैं। केवल तस्नीफ़ व तालीफ़ ही के मैदान में एक अकेले महानविद्वान हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी की छोटी बड़ी किताबों की संख्या एक हज़ार से अधिक है। धार्मिक और सुधारात्मक दृष्टिकोण से जीवन का कोई पक्ष ऐसा नहीं है जिस में हज़रत थानवी की पुस्तक न हो। वह लेखन (तस्नीफ़) की अधिकता और उपयोगिता के आधार पर अपना जवाब नहीं रखते। हिन्दुस्तान में धार्मिक लगाव रखने वाला कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जो हज़रत थानवी के लिखे "बहिश्ती ज़ेवर" से वाक़िफ़ न हो।

हज़रत थानवी और दूसरे कुछ देवबन्दी विद्वानों की एक विशेषता

यह भी है कि उन्हों ने अपनी तस्नीफ़ात (रचनाओं) के अधिकार सुरक्षित नहीं रखे। बल्कि सामान्य लाभ के लिये आम कर दिया है। इन विद्वानों को व्यापार और आर्थिक लाभ की ज़रूरत कभी नहीं रही, बल्कि सुधार के लाभ का नज़रिया रहा। देवबन्द के विद्वानों के इस लेखनी के धन का केन्द्र बिन्दु अ़रब देश शाम (सीरिया) के एक महान विद्वान शेख़ अबू गुद्दह के अनुसारः "गहरे ज्ञान और विस्तृत अध्यन के अतिरिक्त, तक़वा, सुधार और आत्मिकता है।" अतः शेख़ अबू गुद्दह ने देवबन्द के विद्वानों की तसनीफ़ का समर्थन व उपयोगिता को मानते हुए यह इच्छा व्यक्त की है कि इनमें जो किताबें उर्दू और फ़ारसी भाषा में हैं उनका अ़रबी में अनुवाद कराया जाये ताकि अ़रब दुनिया को भी उन से लाभ पहुंचे। उन का कथन हैः "मुफ़्तियों के फ़त्वे से मालामाल इस अज़ीमुश्शान (महानसंस्था) इदारे के विद्वानों की सेवा में वर्णन करते हुए एक प्रार्थना करना चाहता हूँ बल्कि अगर थोड़ी सी हिम्मत करूं तो कह सकता हूँ कि यह वाजबी अधिकार है, जिसका मैं अध्यन करना चाहता हूँ जिसकी मांग मैं करना चहता हूँ वह यह है कि विद्वानों का यह कर्तव्य है कि अपने बौद्धिक परिणामों और चिंतन मूल्यवान खोजपूर्ण ज्ञान को अ़रबी भाषा में बदलकर इसलामी दुनिया के दूसरे विद्वानों को लाभ प्राप्त करने का अवसर प्रदान करें। यह कर्तव्य इन हजरात पर इसलिये बनता है कि जब कोई व्यक्ति हिन्दुस्तान के किसी विद्वान की कोई तस्नीफ़ (रचना) पढ़ता है तो उस में उस को वह नई तहक़ीक़ (जानकारी) मिलती हैं जिन का केन्द्र बिन्दु गहरे ज्ञान और विशाल अध्यन के अलावा, तक़वा, (परहेज़गारी) व सुधार और आत्मिकता होता है।" (तारीख़ दारुल उ़लूम पृष्ठ 530)

चूंकि हिन्दुस्तान के यह उलमा नेकी, भलाई, आत्मीयता और ज्ञान में डूब जाने जैसी शर्तों पर न केवल पूरे उतरते हैं बल्कि अपने पूर्वजों के सच्चे उत्तराधिकारी और उनके नमूने हैं इस लिये उनकी किताबें बहुत सी नई जानकारी समयनुसार कितनी ही कारामद वस्तुओं पर आधारित है। बल्कि इन हज़रात की कुछ किताबें तो वे हैं जिन में ऐसी चीज़ें मिलती हैं जो पहले (मध्यकालीन) पूर्वजों, मुफ़स्सिरों, मुहद्दिसों और बुद्धि जीवियों के यहां भी नहीं मिलती।

दारुल उ़लूम देवबन्द से अब तक जिन लोगों ने अपनी शिक्षा प्राप्त

की है उन की संख्या लगभग 100000 है। दारुल उ़लूम देवबन्द के विद्वानों में से जिन लेखकों को एक नुमाया स्थान प्राप्त है केवल उन के वर्णन के लिये एक बड़ी पुस्तक की आवश्यकता है। यह विषय अपने आप में अपना अलग अस्तित्व रखता है, जिसमें संस्था के विद्वानों जो मश्रिक़ (पूर्व) से मग़रिब (पश्चिम) और शुमाल (उत्तर) से जुनूब (दक्षिण) तक फैले हुए हैं, और एक सौ पचास साल के विभिन्न भागों में इल्मी और दीनी सेवा में लगे हों उन के हालात आसानी से नहीं मिल सकते। इस के अलावा यहां संक्षेप में साथ तमाम किताबों और लेखकों के नाम भी पेश नहीं किये जा सकते। इसलिये यहां केवल कुछ प्रसिद्ध लेखकों की किताबों (पुस्तकों) को ही दर्शाया जा रहा है। अलबत्ता इस से अनुमान लगाया जा सकता है कि देवबन्द के उलमा ने लेखन के क्षेत्र में कितना काम किया है। और पठन–पाठन के अलावा पुस्तकों के रूप में भी कितना मूल्यवान संग्रह इकट्ठा किया है। ये पुस्तकें शिक्षा और तात्विकता के दरिया बहाती हैं।

कुरआन के अनुवाद व तफ़्सीर (व्याख्यायं) और उन से सम्बंधित रचनायें

यह तो सिर्फ़ एक झलक कुरआनी खिदमात के सम्बंध से इन नामों की है जिन का हमें पता चल सका है वरना ह़क़ीक़त यह है कि दुनिया के चप्पे चप्पे में देवबन्द के विद्वान कुरआन व ह़दीस की व्याख्या और प्रकाशन में लगे हुए हैं जिन की संख्या जानना कठिन ही नहीं असम्भव है।

क्र.	पुस्तक का नाम/लेखक का नाम
1	तर्जुमा कुरआन शरीफ़ ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन
2	तर्जुमा कुरआन शरीफ ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
3	तर्जुमा कुरआन शरीफ़ (कश्मीरी) मौलाना यूसुफ़ शाह कश्मीरी
4	मूज़िहुल फ़ुर्क़ान (हाशिया तर्जुमा शैख़ुलहिन्द) मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी, देवबन्दी,
5	हवाशी कुरआन मजीद तर्जुमा शाहअब्दुल क़ादिर ह़ज़रत मौलाना अह़मद लाहौरी
6	एजाज़ुल कुरआन ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी
7	तफ़्सीर सनाई (उर्दू) मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी,
8	तफ़्सीर बयानुल कुरआन हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी,
9	तफ़्सीर अल कुरआन (अ़रबी) मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी,

10	तफ़्सीर मऊज़तैन हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी,
11	तर्जुमा तफ़्सीर जलालैन हज़रत मौलाना मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान
12	तफ़्सीर मआरिफ़ुल कुरआन हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी
13	तफ़्सीर मआरिफ़ुल कुरआन हज़रत मौलाना मुहम्मद इदरीस कांधलवी
14	तफ़्सीर अलहावी (तक़रीर बेज़ावी) मौलाना जमील अहमद मुफ़्ती शकील अहमद
15	तदवीने कुरआन हज़रत मौलाना मनाज़िर हसन गीलानी
16	अत्तअव्वुज़ फ़िल इसलाम हज़रत मौलाना ताहिर क़ासमी
17	हाशिया तफ़्सीरे बैज़ावी (अ़रबी) हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान अमरोहवी
18	दीनी दावत के कुरआनी उसूल हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तय्यब साहब
19	सबकुल ग़ायत फ़ी नस्क़िल आयात हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
20	अल अवनुल कबीर शरह अल फ़ौज़ुल कबीर हज़रत मुफ़्ती सईद अहमद साहब पालनपुरी
21	फ़हमे कुरआन हज़रत मौलाना सईद अहमद अकबराबादी
22	क़ससुल कुरआन हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्यौहारवी
23	कमालैन तर्जुमा जलालैन हज़रत मौलाना नईम साहब देवबन्दी
24	मुश्किलातुल कुरआन (अ़रबी) हज़रत मौलाना सय्यद अनवर शाह कशमीरी

25	मिनहतुल जलील हज़रत मौलाना मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान उस्मानी
26	वही इलाही हज़रत मौलाना सईद अहमद अकबराबादी
27	हदयतुल महदयीन फ़ी आयाति ख़ातमिन्नबियीन हज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी देवबन्दी
28	तफ़्सीर दरसे कुरआन हज़रत मौलाना अब्दुल हई फ़ारूक़ी
29	तफ़्सीरे अहमदी मौलाना अहमद अली लाहौरी
30	तक़रीरुल कुरआन मौलाना मुहम्मद ताहिर साहब देवबन्दी
31	तफ़्सीर हबीबी मौलाना हबीबुर्रहमान साहब मरवानी
32	अनवारुल कुरआन (पश्तो भाषा में) मौलाना सय्यद अनवारुल हक़ काका खेल
33	हिदायतुल कुरआन (9 पारे) मौलाना मुहम्मद उस्मान काशिफ़ अल हाश्मी
34	हिदायतुत कुरआन तक्मीलह मुफ़्ती सईद अहमद पालनपुरी
35	मिफ़्ताहुत कुरआन मौलाना शब्बीर अज़हर मेरठी
36	तफ़्सीरुल कुरआन मौलाना शाइक़ अहमद उस्मानी
37	फ़ैज़ुर्रहमान मौलाना याकूबुर्रहमान उस्मानी
38	तफ़्सीर सूरह बक़र मौलाना अब्दुल अज़ीज़ साहब हज़ारवी
39	अदुररूलमकनून फ़ी तफ़्सीर सूरतुल माऊन प्रोफ़ेसर हकीम अब्दुस्समद सारम साहब

40	तर्जुमा तफ़्सीर इब्न अब्बास मौलाना अब्दुर्रहमान कांधलवी
41	मुस्तनद मवज़िहुल फुरक़ान मौलाना अख़लाक़ हसन क़ासमी देहलवी
42	तर्जुमा तफ़्सीरे मदारिक मौलाना सय्यद अंजर शाह मसऊदी कशमीरी
43	तफ़्सीर तक़रीरुल क़ुरआन मौलाना अज़ीज़ुर्रहमान साहब बिजनौरी
44	तफ़्सीरे माजदी मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी
45	बयानुल क़ुरआन अला इल्मिल बयान मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी
46	यतीमतुल बयान मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ बिन्नौरी
47	हिकमतुन्नून मौलाना मुहम्मद ताहिर साहब देवबन्दी
48	उ़लूमुल क़ुरआन मुफ़्ती तक़ी उस्मानी (पाकिस्तान)
49	तफ़्सीरों में इसराईली रिवायात मौलाना निज़ामुद्दीन असीर अदरवी
50	लुग़ातुल क़ुरआन मौलाना अब्दुर रशीद नोमानी
51	तफ़्सीर बयानुस्सुबहान मौलाना अब्दुल दाईम अल जलाली
52	दरसे क़ुरआन मुफ़्ती ज़फ़ीरुद्दीन साहब मिफ़्ताही
53	मअरका ईमान व मादियत (सूरह कहफ़) मौलाना अबुल हसन अलीमियां नदवी
54	तज़कीर बि–सूरह कहफ़ मौलाना सय्यद मनाज़िर अहसन गीलानी

55	जाईज़ह तराजिमे क़ुरआन मौलाना सालिम क़ासमी
56	क़ुरआन और उसके हुक़ूक़ मुफ़्ती ह़बीबुर्रहमान खैराबादी
57	दरसे क़ुरआन की सात मजलिसें मौलाना हुसैन अह़मद मदनी
58	क़ुरआन पाक और साइंस मौलाना ख़लील अह़मद साहब
59	अत्तनक़ीदुस्सदीद अ़ला त्तफ़्सीरिल जदीद अबुल मआसिर मौलाना ह़बीबुर्रहमान आज़मी
60	क़ुरआन मजीद और इंजीले मुक़द्दस मौलाना मुहम्मद उस्मान फ़ारक़लीत
61	उ़लूमुल क़ुरआन मौलाना उबैदुल्लाह असअदी क़ासमी
62	अनवारुल क़ुरआन मौलाना मुहम्मद नईम साहब देवबन्दी
63	बयानुल क़ुरआन (अव्वल, दोम) मौलाना अह़मद हसन साहब
64	तफ़्सीर सूरह हुजरात अल्लामा शब्बीर अह़मद उस्मानी
65	रूहुल क़ुरआन अल्लामा शब्बीर अह़मद उस्मानी
66	तफ़्सीर सूरह फ़ातिह़ा, यूनुस, यूसुफ़, कहफ़ मौलाना अह़मद सईद साह़ब देहलवी
67	अह़सनुत्तफ़ासीर मौलाना सय्यद हसन देहलवी
68	ह़ल्लुल क़ुरआन मौलाना ह़बीबुर्रह़मान कैरानवी
69	अलफ़वजुल अज़ीम शरह उर्दू अलफ़वजुल कबीर मौलाना ख़ुरशीद अनवर साह़ब फ़ैज़ाबादी
70	अलरवज़ुन्नज़ीर शरह़ उर्दू अल फ़वजुल कबीर मौलाना ह़नीफ़ साह़ब गंगोही

71	अल ख़ैरुल कसीर शरह उर्दू अल फ़वज़ुल कबीर मुफ़्ती अमीन साह़ब पालनपुरी
72	सिराजुल मुनीर तर्जुमा तफ़्सीर कबीरे अव्वल मौलाना शैख़ अब्दुर्रहमान साह़ब
73	ग़ायतुल बुरहान फ़ी तावीलिल क़ुरआन हकीम सय्यद हसन साह़ब
74	फ़ैज़ुल करीम तफ़्सीर क़ुरआन अज़ीम मौलाना सिबग़तुल्लाह साह़ब
75	तफ़्सीर कलामुर्रहमान मौलाना ग़ुलाम मुह़म्मद साह़ब
76	तफ़्सीर तालीमुल क़ुरआन मौलाना क़ाज़ी ज़ाहिद अल हुसैनी साह़ब
77	जवाहिरुत्तफ़ासीर मौलाना अब्दुल ह़कीम लखनवी
78	दरसे क़ुरआन मौलाना क़ारी अख़लाक़ साह़ब देवबन्दी
79	तफ़्हीमुल क़ुरआनः एक तह़क़ीक़ी जायज़ह मुफ़्ती जमीलुर्रहमान प्रताप गढ़ी
80	तर्जुमा व व्याख्या (तफ़्सीर) हिन्दी मौलाना अरशद मदनी/प्रोफेसर मु. सुलैमान
81	जमालैन शरह जलालैन मौलाना जमाल अह़मद मेरठी
82	मुन्तखब लुग़ातुल क़ुरआान मौलाना नसीम अह़मद बाराबंकवी

देवबन्द के विद्वानों की ह़दीस की सेवायें

दारुल उ़लूम देवबन्द ने ह़दीस के हर हर पक्ष को उजागर करने के लिये सेवा की है। अतः ह़दीस की पढ़ाने और लिख्ने में दारुल उ़लूम के कार्यों से इतिहास के पृष्ठ भरे पड़े हैं। यह केवल दावा नहीं है, बल्कि इन सेवाओं से प्रभावित हो कर इस्लामी दुनिया के प्रसिद्ध देश मिश्र के विद्वान और रिसाला “अल—मनार” के सम्पादक अल्लामा सय्यद रशीद रज़ा लिखते हैं— “हमारे भाई हिन्दुस्तानी विद्वानों का ध्यान इस ज़माने में ह़दीस के ज्ञान की ओर न जाता तो पूर्वी देशों से यह ज्ञान समाप्त हो चुका होता, क्योंकि मिस्र, शाम, इराक़ और हिजाज़ में दसवीं सदी हिजरी से चौदहवी हिजरी के आरम्भ तक यह ज्ञान बिल्कुल अंतिम अवस्था तक पहुंच गया था।” (तारीख़ दारुल उ़लूम पृष्ठ 231 जिल्द एक)

इसी पर बस नहीं, एक बार यूसुफ़ सय्यद हाशिमुर्रफ़ाई वज़ीर हुकूमत कुवैत की अध्यक्षता में एक वफ़्द दारुल उ़लूम देखने आया था। यूसुफ़ सय्यद हाशिमुर्रफ़ाई ने जलसा आम में भाषण देते हुए यहां तक कह दिया कि इस्लाम पर आक्षेप को दूर करने के लिये हम महान विद्वानों के मोहताज हैं, इस के लिये हमें हाफ़िज़ ज़हबी और हाफ़िज़ इब्न ह़जर के स्तर के विद्वानों की आवश्यकता है और हमें गर्व है कि इस स्तर के उलमा और विद्वान दारुल उ़लूम में मौजूद हैं।┘ ┘ (तारीख़ दारुल उ़लूम पृष्ठ 416 जिल्द एक)

देवबन्द के उलमा ने ह़दीस का कार्य करने का एक अलग तरीक़ा अपनाया और हालात के अनुसार ह़नफ़ी विचारधारा को प्राथमिकता दी और इस के प्रचार—प्रसार पर ध्यान दिया। दारुल उ़लूम में ह़ज़रत नानौतवी, ह़ज़रत शैख़ुल हिन्द, ह़ज़रत कश्मीरी, ह़ज़रत मदनी और दूसरे हज़रात ने ह़दीस के पठन—पाठन को इतना बढ़ावा दिया कि आज ह़दीस की कोई मशहूर दरसगाह इससे खाली नज़र नहीं आती। ह़दीस के पढ़ाने की एक और विशेषता यह है कि ह़दीस को ग़ौर व फ़िक्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सहित पढ़ने—पढ़ाने का जो पौदा शेख़ अब्दुल हक़

मुहद्दिस देहलवी ने लगाया था दारुल उ़लूम देवबन्द ने उस की पूरी देखभाल की और उसको पूरा पेड़ बना दिया। ह़दीस की शिक्षा की इन्हीं विशेषताओं के आधार पर दुनिया के चप्पे–चप्पे से विद्यार्थीगण ह़दीस की शिक्षा प्राप्त करने के लिये एक सौ पचास साल से यहां खिंचे चले आरहे हैं। अतः इस शैक्षिक माता ने अपने स्थापना दिवस से अब तक हज़ारों ह़दीस के विद्वान इसलामी दुनिया के चप्पे–चप्पे में फ़ैला दिये। इस प्रकार से देवबन्द के विद्वानों का पठन–पाठन, और तस्नीफ़ व तालीफ़ में ह़दीस की ख़िदमात के शीर्षक से हम यहां संक्षिप्त रूप से वर्णन करते हैं: –

क्र.	पुस्तक / लेखक
1	अल अबवाब वत्तराजिम (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना महमूदु हसन देवबन्दी
2	इलाउस्सुन्न (18 खण्ड) मौलाना ज़फ़र अह़मद उस्मानी
3	अलफ़ियतुल ह़दीस ह़ज़रत मौलाना मंज़ूर अह़मद नोमानी
4	अनवारुल बारी शरह सह़ीहुल बुख़ारी ह़ज़रत मौलाना अह़मद रज़ा बिजनौरी
5	अनवारुल महमूद ह़ाशिया सुनन अबी दाऊद ह़ज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी
6	इन्तिख़ाब सिह़ाए सित्ता ह़ज़रत मौलाना ज़ैनुलआ़बिदीन सज्जाद
7	ईज़ाहुल बुख़ारी मौलाना रियासत अली ज़फ़र बिजनौरी
8	बज़लुल मजहूद शरह अबूदाऊद ह़ज़रत मौ. ख़लील अह़मद सहारनपुरी
9	तदवीने ह़दीस ह़ज़रत मौलाना मनाज़िर अह़सन गिलानी
10	तर्जुमानुस्सुन्नह ह़ज़रत मौलाना बदरे आलम मेरठी

क्र.	पुस्तक / लेखक
11	तर्जुमा सह़ी बुख़ारी ह़ज़रत मौलाना बदरे आलम मेरठी
12	अत्तालीकुस्सबीह़ शरह मिश्कात (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना मु. इदरीस कांधलवी
13	अत्तालीकुल मह़मूद ह़ाशिया अबूदाऊद ह़ज़रत मौलाना फ़ख़रुल ह़सन गंगोही
14	तक़रीरे तिरमिज़ी ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन देवबन्दी
15	तरजुमानुस्सुन्नह ह़ज़रत मौ. बदर आलम मेरठी
16	हुज्जियते ह़दीस ह़ज़रत मौलाना इदरीस कांधलवी
17	ह़दीसे रसूल का कुरआनी मेयार ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब
18	अरजुर्रियाह़ीन तर्जुमा बुस्तानुल मुहद्दिसीन ह़ज़रत मौलाना अब्दुस्समी देवबन्दी
19	सुनने सईद बिन मंसूर (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
20	शरह़ तिरमिज़ी ह़ज़रत अल्लामा इब्राहीम बलयावी
21	अलउरफुश्शुज़्जी अला तिरमिज़ी ह़ज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी
22	फ़तहुल मुलहिम शरह़ मुस्लिम (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी
23	फ़ज़लुल बारी शरह़ सह़ी बुख़ारी ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी
24	फ़ैज़ुल बारी अला सह़ीह़िल बुख़ारी ह़ज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी
25	अल क़वलुल फ़सीह़ ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुद्दीन अह़मद

26	तह़क़ीक़ किताबुज़्ज़ुहद वर्रिक़ाक़ ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
27	अल कवकबुद दुर्री ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
28	मुसनदे हुमैदी (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
29	मिश्कातुल आसार ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मियां देवबन्दी
30	मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ (अ़रबी) 11 ख़ण्ड, ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
31	अलमतालिबुल आलिया (अ़रबी) 4 खण्ड ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
32	मज़ाहिरे ह़क़ जदीद शरह़ मिश्कात मौलाना अब्दुल्लाह जावेद
33	मारिफ़ुल ह़दीस ह़ज़रत मौलाना मु. मंजूर नोमानी
34	मआरिफ़ुस्सुनन शरह तिरमिजी (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना यूसुफ़ बिन्नौरी
35	मआरिफ़े मदीना तक़रीर तिरमिज़ी ह़ज़रत मौलाना सय्यद ताहिर ह़सन
36	मआरिफ़ुल मिश्कात शरह मिश्कात ह़ज़रत मौलाना अब्दुररऊफ़ साह़ब आली
37	निबरासुस्सारी अला अतराफ़िल बुख़ारी (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना अब्दुल अज़ीज़ गूजरानाला
38	अन्नफ़ह़ुश शज़ी शरह तिरमिज़ी ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
39	अल वरदुश्शजी अला जामे तिरमिज़ी ह़ज़रत शेख़ुलहिन्द मौ. महमूदु हसन
40	जामिउल आसार ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
41	ताबिउल आसार ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी

42	ह़िफ़्जे अ़रबईन इन्तिख़ाबे मुस्लिम ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
43	अलमिस कुज़्ज़की ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
44	इतफ़ाउल फ़ितन तर्जुमा इह़याउस्सुनन ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
45	अल इदराक वत्तवस्सुल इला ह़क़ीक़तिल इश्तिराक ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
46	मुईनुल्लबीब तालीक़ अलफ़ियतुल ह़दीस मुफ़्ती तौक़ीर आलम पूरनवी
47	अत्तीबुश शजी शरह तिरमिज़ी मौलाना अशफ़ाक़ुर्रहमान साह़ब
48	कश्फ़ुल मुगत्ता अन रिजालिल मुअत्ता मौलाना अशफ़ाक़ुर्रहमान साह़ब
49	शरह शमाइल तिरमिज़ी मौलाना अशफ़ाक़ुर्रहमान साह़ब
50	ह़ाशिया मुअत्ता इमाम मालिक मौलाना अशफ़ाक़ुर्रहमान साह़ब
51	ह़ाशिया इब्न माजा मौलाना अशफ़ाक़ुर्रहमान साह़ब
52	ह़ाशिया सुनने नसाई मौलाना अशफ़ाक़ुर्रहमान साह़ब
53	मुस्तज़ादुल ह़क़ीर अला ज़ादिल फ़क़ीर मौलाना बदरे आलम मेरठी
54	तोह़फ़तुलक़ारी फ़ी मुश्किलातिल बुख़ारी मौलाना इदरीस कांधलवी
55	अलबाक़ियात शरह इन्नमल आमाल······ मौलाना इदरीस कांधलवी
56	तोह़फ़तुल इख़्वान ह़दीस शोबुल ईमान मौलाना इदरीस कांधलवी
57	क़लाइदुल अज़हार शरह किताबुल आसार (3 खण्ड) मुफ़्ती महदी ह़सन शाहजहांपुरी

58	जवाहिरुल उसूल फ़ी उसूलिल ह़दीस मौलाना अब्दुर्रह़मान मरवानी
59	अल अबवाब वत्तराजिम 4 खण्डों में ह़ज़रत मौलाना शेख़ ज़करया साह़ब
60	अवजजुल मसालिाक (6 खण्ड) ह़ज़रत मौलाना शेख़ ज़करया साह़ब
61	शरह जवाहिरुल उसूल क़ाज़ी अतहर मुबारकपुरी
62	तालीक़ व तह़क़ीक़ अला इब्ने खुज़ेमा डाक्टर मुह़म्मद मुस्तफ़ा क़ासमी आज़मी
63	इमदादुल बारी मौलाना अब्दुल जब्बार साह़ब
64	दिरासात फ़िल अह़ादीसिन्नबवी डाक्टर मुह़म्मद मुस्तफ़ा क़ासमी आज़मी
65	तह़क़ीक़ व तालीक़ लामिउद्दुरारी अला जामिइल बुखारी ह़ज़रत मौलाना शेख़ ज़करया साह़ब
66	ह़ाशिया बज़्लुल मजहूद ह़ज़रत मौलाना शेख़ ज़करया साह़ब
67	हुज्जियते ह़दीस ह़ज़रत क़ारी तय्यब साह़ब
68	जमउल फ़ज़ाइल शरहुश्शमाइल मौलाना मुह़म्मद इस्लाम क़ासमी
69	इनआमुल बारी शरह़ बुख़ारी मौलाना मुह़म्मद अमीन चाट गामी
70	ईज़ाहुत्तह़ावी मुफ़्ती शब्बीर अह़मद क़ासमी
71	अल इत्तिह़ाफ़ लि मज़्हबिल अह़नाफ़ अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी
72	तफ़्हीमुल बुख़ारी मौलाना ज़हूरुल बारी
73	ईज़ाहुल मुस्लिम शरह मुक़द्दिमा मुस्लिम मौलाना मुह़म्मद ग़ानिम देवबन्दी

74	नेमतुल मुनइम शरह़ मुक़द्दिमाए मुस्लिम मौलाना नेमतुल्लाह आज़मी
75	फ़ैज़ुल मुनइम शरह़ मुक़द्दिमाए मुस्लिम मुफ़्ती सईद अह़मद पालनपुरी
76	फ़ैजुल मुलहिम शरह़ मुक़द्दिमाए मुस्लिम मौलाना इस्लामुल ह़क़ गोपागंजी
77	दुररे फ़राइद तर्जुमा जामिउल फ़राइद मौलाना आशिक़ इलाही मेरठी
78	ख़साइले नबवी शैख़ुल ह़दीस मौलाना ज़करया साह़ब
79	मआरिफ़ुस्सुन्नह मौलाना अहतशामुल ह़क़ साह़ब
80	किताबते ह़दीस मौलाना सय्यद मिन्नतुल्लाह रह़मानी
81	मज़्हबे मुख़्तार तर्जुमा व ह़वाशी मआनियुल अख़यार मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रह़मान साह़ब
82	अल्लालियुल मंसूरह मौलाना अब्दुल ह़फ़ीज़ बलयावी
83	शरह़ मुक़द्दिमा शेख़ अब्दुल ह़क़ मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
84	तश्रीह़ मुक़द्दिमा शेख़ अब्दुल ह़क़ मौलाना सअद मुश्ताक़ ह़सीरी
85	तोह़फ़तुल अत्क़िया मौलाना अब्दुल माजिद साह़ब
86	शरह़ अबूदाऊद मौलाना अब्दुल माजिद साह़ब
87	रफ़उल ह़ाजा तर्जुमा इब्न माजा मौलाना अब्दुल माजिद साह़ब
88	तंज़ीमुल अश्तात मौलाना अबुल ह़सन चाटगामी
89	इख़्तिलाफ़ुल अइम्मा फ़िल मसाइलि...... मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर संभली

90	तकमिलह फ़तहुल मुलहिम अ़रबी मुफ़्ती तक़ी अस्मानी पाकिस्तान
91	अह़सनुत्तनक़ीह़ लिरकआतित तरावीह़ मौलाना सय्यद ताहिर ह़सन साह़ब गयावी
92	तंशीतुलक़ारी फी हल्लिबुख़ारी मौलाना मुह़म्मद शौकत क़ासमी
93	तोह़फ़तुल अरीब शरह़ अलफ़िया मुफ़्ती तौक़ीर आलम साह़ब पुरनवी
94	दरसे तह़ावी मौलाना जमील अह़मद साह़ब सिकरोढवी
95	तोह़फ़तुल अलमई शरह तिरमिज़ी मुफ़्ती सईद अह़मद पालनपुरी

उलमा ए देवबन्द की फ़िक़्ही खिदमात

उलमाए देवबन्द ने जिस प्रकार दीन के तमाम शोबों (विभागों) को अपने पल्लू में समेट लिया और प्रत्येक की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त किया है। इसी प्रकार शरीअत के बुनयादी शोबे (विभाग) 'फ़िक़्ह' की भी बड़ी सेवा की है। इस विभाग की उन की सेवा इतनी बड़ी है कि इस संक्षिप्त सूची में उन का आना सम्भव नहीं है। उनकी फ़िक़्ही खिदमात ह़नफ़ी फ़िक़्ह व उसूले फ़िक़्ह के चारों ओर ही घूमती है। लेकिन उन के मसलक या तस्नीफ़ात (रचनाओं) में मसलकी तअस्सुब (ईर्ष्या) और कठोरता का कोई निशान नहीं है। उलमाए देवबन्द फ़िक़्हे इस्लामी के चारों मज़हबों को अहले सुन्नत वल जमात का तर्जुमान मानते हैं, और बराबर अक़ीदत व मुहब्बत रखते हैं। नीचे उलमा–ए–देवबन्द की कुछ प्रसिद्ध तस्नीफ़ात (रचनायें) और शरह़ों (कुंजियों) का वर्ण किया जा रहा है:

उलमा–ए–देवबन्द की फ़िक़्ह की कुछ किताबें

1	तालीक़ अल हुज्जह अला अहलिल मदीना (इमाम मुहम्मद) ह़ज़रत मुफ़्ती महदी ह़सन साह़ब
2	अह़कामुल क़ुरआन मौलाना ज़फ़र अह़मद थानवी, मुफ़्ती शफ़ी देवबन्दी, मौलाना इदरीस कांधलवी,
3	अह़कामे ह़ज़ मौलाना व मुफ़्ती शफ़ी देवबन्दी
4	आसान ह़ज़ मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी
5	इस्लाम क्या है? मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी
6	आलाते जदीदा के शरई अह़काम मौलाना व मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी देवबन्दी

7	इमदादुल फ़तावा ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
8	इमदादुल मुफ़्तियीन मौलाना व मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी देवबन्दी
9	बुग्यतुल अलमई तख़रीजि ज़ैलई मौलाना व मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी देवबन्दी
10	बहिश्ती ज़ेवर ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
11	तर्जुमा कु़दूरी ह़ज़रत मौलाना अबुल ह़सन बारह बनकवी
12	तालीमुल इसलाम मौलाना व मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह देहलवी
13	ह़ाशिया सिराजी मौलाना रह़मतुल्लाह सिलहटी
14	ह़ाशिया शरह़ निक़ाया (अ़रबी) मौलाना ऐज़ाज़ अली अमरोहवी
15	ह़ाशिया कंज़ुद दक़ाइक़ मौलाना ऐज़ाज़ अली अमरोहवी
16	ह़ाशिया नूरुल ईज़ाह़ मौलाना ऐज़ाज़ अली अमरोहवी
17	जवाहिरुल फ़िक़ह मौलाना व मुफ़्ती शफ़ी देवबन्दी
18	फ़तावा इमदादियह ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
19	फ़तावा दारुल उ़लूम देवबन्द मौलाना व मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रह़मान
20	फ़तावा मुह़म्मदी मा शरह़ देवबन्दी मौलाना मियां सय्यद असग़र ह़ुसैन देवबन्दी
21	किफ़ायतुल मुफ़्ती मौलाना मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह देहलवी

22	अज़ीज़ुल फ़तावा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी देवबन्दी
23	मुफ़ीदुल वारिसीन मौलाना मियां सय्यद असग़र ह़ुसैन
24	मीरासुल मुस्लिमीन मौलाना मियां सय्यद असग़र ह़ुसैन
25	नूरुल इस्बाह़ शरह़ नूरुल ईज़ाह़ मौलाना मुह़म्मद मियां साह़ब देवबन्दी
26	अल ह़ीलतुन्नाज़िज़ह ह़कीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
27	सबीलुर्रशाद ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
28	दाफ़े बिदअत ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
29	अवसकुल उरा ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
30	ज़ुबदतुल मनासिक ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
31	अत्तज़कीर ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
32	क्या हिन्दुस्तान दारुल ह़रब है ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
33	अर्रायुन नजीह़ ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
34	हिदायतुल मूतदी ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
35	इसलाम का निज़ामे अराज़ी ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी साह़ब
36	रूयते हिलाल ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी साह़ब
37	मसला ए सूद ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी साह़ब

38	बैंक इंशोरेंस और सरकारी क़र्जे मौलाना बुरहानुद्दीन संभली
39	रूयते हिलाल का मसला मौलाना बुरहानुद्दीन संभली
40	इसलामी अदालत क़ाज़ी मुजाहिदुल इसलाम क़ासमी
41	शियर्ज़ और कम्पनी क़ाज़ी मुजाहिदुल इसलाम क़ासमी
42	ज़रूरत व ह़ाजत क़ाज़ी मुजाहिदुल इसलाम क़ासमी
43	जदीद तिजारती शकलें क़ाज़ी मुजाहिदुल इसलाम क़ासमी
44	औक़ाफ़ क़ाज़ी मुजाहिदुल इसलाम क़ासमी
45	निज़ामुल फ़तावा ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साह़ब
46	फ़तावा मह़मूदिया ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मह़मूदुल ह़सन गंगोही
47	मसाइले इमामत ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती ह़बीबुर्रह़मान खैराबादी
48	मसाइल सज्दा सहू ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती ह़बीबुर्रह़मान खैराबादी
49	अशरफुल हिदाया मौलाना जमील अह़मद साह़ब सिकरोढवी
50	अस्सुबहुन्नूरी मौलाना मुह़म्मद ह़नीफ़ गंगोही
51	ईज़ाहुल हुस्सामी मौलाना जमाल अह़द साह़ब मेरठी
52	ग़ायतुस्सिआया शरह़ उर्दू हिदाया मौलाना मुह़म्मद ह़नीफ़ गंगोही
53	दरसे सिराजी मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ तावलवी

54	फ़ैज़े सुबहानी शरह़ उर्दू हुसामी मौलाना जमील अह़मद साह़ब सिकरोढवी
55	मुजल्लह फ़िक़्ह इसलामी क़ाज़ी मुजाहिदुल इसलाम क़ासमी
56	कूतुल अख़्यार शरह़ नूरुल अनवार मौलाना जमील अह़मद साह़ब सिकरोढवी
57	अह़कामे लुहूमिल ख़ैल मौलाना बदरुल ह़सन क़ासमी
58	असरे ह़ाज़िर के जदीद मसाइल मौलाना बदरुल ह़सन क़ासमी
59	मुआशरती मसाइल मौलाना बुरहानुद्दीन संभली
60	तदवीने फ़िक़्ह मुफ़्ती ज़फ़ीरुद्दीन साह़ब
61	जदीद फ़िक़्ही मसाइल मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रह़मानी
62	निकाह़ व तलाक़ व मीरास मुफ़्ती फ़ुज़ैलुर्रह़मान उस्मानी
63	ईज़ाहुल मसाइन मुफ़्ती शब्बीर अह़मद क़ासमी
64	ईज़ाहुन्नवादिर मुफ़्ती शब्बीर अह़मद क़ासमी
65	ईज़ाहुल मसालिक मुफ़्ती शब्बीर अह़मद क़ासमी
66	ईज़ाहुल मनासिक मुफ़्ती शब्बीर अह़मद क़ासमी
67	सिक़ाया शरह़ हिदाया मौलाना उस्मान ग़नी
68	नूरुल अबसार अला शरह़िल मनार मौलाना बिलाल असग़र साह़ब
69	अलजलुलह़वाशी शरह़ उसूलुश्शासी मौलाना जमील अह़मद साह़ब सिकरोढवी

70	इजमा और क़यास की हुज्जियत मौलाना जमील अह़मद साह़ब सिकरोढवी
71	अशरफुल हिदाया (8 जिल्दें) मौलाना जमील अह़मद साह़ब सिकरोढवी
72	मुकम्मल मुदल्लल मसाइले सेट मौलाना मुह़म्मद रफ़अत क़ासमी
74	क़ामूसुलफिक़ह मौलाना खालिद सैफुल्लाह रह़मानी
75	ह़लाल व ह़राम मौलाना खालिद सैफुल्लाह रह़मानी
76	जदीद फ़िक़ही मसाइल मौलाना खालिद सैफुल्लाह रह़मानी

अक़ाइद और कलाम की कुछ किताबें

क.	पुस्तक का नाम/लेखक का नाम
1	तकरीर दिलपज़ीर ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी
2	हुज्जतुलइसलाम ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी
3	अह़सनुल कलाम फ़ी उसूलि अक़ाइदिल इसलाम मौलाना रह़ीमुल्लाह बिजनौरी
4	इसलामी अक़ाइद (उर्दू) मौलाना मुह़म्मद उस्मान दरभंगवी
5	इसलामी अक़ाइद (बंगला) मौलाना मुह़म्मद उस्मान दरभंगवी
6	तर्जुमा शरह़ अक़ाइद मौलाना अब्दुल अह़द देवबन्दी
7	हुदेसे माद्दह व रूह़ मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
8	अद्दीनुल क़य्यिम मौलाना सय्यद मनाजिर अह़सन गीलानी

9	इल्मुल कलाम मौलाना इदरीस कांधलवी
10	अक़ाइदुल इसलाम मौलाना इदरीस कांधलवी
11	अक़ाइदुल इसलाम क़ासमी मौलाना ताहिर क़ासमी देवबन्दी
12	अक़ाइदुल फ़राइद ह़ाशिया शरह़ अक़ाइद मौलाना मुह़म्मद अली चाटगामी
13	ह़ाशिया अक़ीदतुल तह़ावी मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब क़ासमी
14	रह़मतुल्लाह अल–वासिअ़ह (शरह़ हुज्जतुल्लाह अल–बालिफ़ह) ह़ज़रत मौलाना मुफ़ती सईद अह़मद पालनपूरी

ईसाइयत के खंडन में कुछ किताबें

1	इसलाम और मसीह़ियत मौलाना सनाउल्लाह अमरत सरी
2	तौह़ीद, तसलीस और राहे निज़ात मौलाना सनाउल्लाह अमरत सरी
3	अह़सनुल ह़दीस फ़ी इबतालित्तसलीस ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
4	इसलाम और नसरानियत ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
5	इज़हारुल ह़क़ीक़त अ़रबी ह़ज़रत मौलाना रह़ीमुल्लाह बिजनौरी
6	दावते इसलाम ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
7	सबीलुल इसलाम मौलाना डाक्टर मुस्ताफ़ा ह़सन अलवी
8	बशाइरुन्नबिईन ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी

शिईयत के खंडन में कुछ किताबें

1	हदयतुश्शीया ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी

2	इबताले उसूलुश्शिया ह़ज़रत मौलाना रह़ीमुल्लाह बिजनौरी
3	इरशादुस्सक़लेन ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
4	इसलाम और शिया मज़हब मौलाना इमाम अली दानिश क़ासमी
5	दफ़उलमुजादला अन आयातिल मुबाहिला ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
6	अल काफ़ी लिल एतक़ाद फ़िस्साफ़ी मौलाना मुह़म्मद रह़ीमुल्लाह बिजनौरी
7	अलमनार रसाइलुस्सुन्नह व शिया मौलाना मुह़म्मद रह़ीमुल्लाह बिजनौरी
8	मतरफतुल करामह ह़ज़रत मौ. ख़लील अह़मद सहारनपुरी
9	हिदायातुर्रशीद इला इफहामिल अनीद ह़ज़रत मौ. ख़लील अह़मद सहारनपुरी
10	फ़ितना ए रफ़्ज़ ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मंज़ूर नोमानी
11	ईरनी इंक़लाब ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मंज़ूर नोमानी
12	उस्मान ज़ुन्नूरेन ह़ज़रत मौ. सईद अह़मद अकबराबादी
13	सिद्दीक़े अकबर ह़ज़रत मौ. सईद अह़मद अकबराबादी

क़ादियानियत के खंडन में कुछ किताबें

1	अक़ीदतुल इसलाम फ़ी ह़याति ईसा अल्लामह अनवर शाह कशमीरी
2	तहियतुल इसलाम / अल्लामह अनवर शाह कशमीरी
3	इकफ़ारुल मुलह़िदीन / अल्लामह अनवर शाह कशमीरी
4	ख़ातिमुन्नबियीन अल्लामह अनवर शाह कशमीरी

5	अल–जवाबुल फ़सीह़ लि मुनकिरि ...... मौलाना बदरे आलम मेरठी मदनी
6	कलिमतुस्सिर फ़ी ह़याति रूह़िस्सिर मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
7	कलिमतुल्लाह फ़ी ह़याति रूह़िल्लाह मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
8	मिसकुल खिताम फ़ी खत्मि नुबुव्वति ...... मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
9	इसलाम और मिर्ज़ाइयत का उसूली ...... मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
10	अत्तसरीह़ बिमा तवातुर फ़ी नुज़ूलिल मसीह़ मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी उसमानी
11	खतमे नुबुव्वत 3 भाग मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी उसमानी
12	मसीहे मौऊद की पहचान मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी उसमानी
13	साइक़ा आसमानी बर फ़िरका क़ादयानी मौ. मुहम्मद मुर्तज़ा ह़सन चांदपुरी
14	मिर्ज़ाइयत का खात्मा मौ. मुहम्मद मुर्तज़ा ह़सन चांदपुरी
15	तह़क़ीकुल कुफर वल ईमान मौ. मुहम्मद मुर्तज़ा ह़सन चांदपुरी
16	फ़तह क़ादियान का दिल कश नजारह मौ. मुहम्मद मुर्तज़ा ह़सन चांदपुरी
17	इसलाम और क़ादियानियत का ......मुताला मौलाना अब्दुल ग़नी पटयालवी
18	क़ादियानियत पर ग़ोर करने का सीधा रास्ता मौलाना मुह़म्मद मंज़ूर नोमानी
19	खत्मे नुबुव्वत मौलाना हिफ़ज़ुर्रह़मान सिवहारवी
20	अल खिताबुल मसीह फ़ी तह़क़ीक़िल ...... मौलाना अशरफ़ अली थानवी

21	फ़ितना ए क़ादियानियत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ बिन्नौरी
22	कुफ्र व इसलाम की हुदूद और क़ादियानियत मौलाना मुह़म्मद मंज़ूर नोमानी
23	दआविय मिर्ज़ा मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
24	मिर्ज़ाइयत का जनाज़ह बे गोरो कफन मौ. मुह़म्मद मुर्तज़ा ह़सन चान्दपुरी
25	अशद्दुल अज़ाब अला मुसैलिमतिल कज़्जाब मौ. मुह़म्मद मुर्तज़ा ह़सन चान्दपुरी
26	रद्दे मिर्ज़ाइयत के ज़र्री उसूल मौलाना मंज़ूर अह़मद चिनेवटी
27	नुज़ूले ईसा मौलाना बद्रे आलम मेरठी
28	खलीफ़ा क़ादियानी जवाब दें। मौलाना मुह़म्मद अली जालंधरी
29	मिर्ज़ाइयों का सियासी किरदार मौलाना मुह़म्मद अली जालंधरी
30	तोह़फ़ा क़दियानियत मौ. मुह़म्मद यूसुफ़ लुधयानवी
31	कादियानी शुबहात के जवाबात मौलाना अल्लाह वसाया साह़ब
32	पारलियामिन्ट में क़ादियानी शिकनी मौलाना अल्लाह वसाया साह़ब
33	मुहाज़रात ब उनवान रद्दे क़ादियानियत मौ. क़ारी मुह़म्मद उसमान मंसूरपुरी
34	इलहामाते मिर्ज़ा मौलाना सनाउल्लाह अमरतसरी
35	क़ादियानियत का इलमी मुह़ासबा मौलाना मुह़म्मद इलयास बर्नी
36	रद्दे क़ादियानियत के ज़र्री उसूल / मौलाना मुह़म्मद मंज़ूर चिनैवटी हिंदी अनुवादः मौलाना शाह आ़लम गोरखपूरी

बिदअत के खंडन में कुछ किताबें

1	बराहीने क़ातिआ मौलाना ख़लील अह़मद सहारनपुरी
2	अल मुहन्नद अललमुफन्नद यानी अक़ाइद उलमा ए देवबन्द मौलाना ख़लील अह़मद सहारनपुरी
3	अश्शिहाबुस्साक़िब शैखुल इसलाम मौ. हुसैन अह़मद मदनी
4	सबीलुस्सिदाद फ़ी मसअलतिल इमदाद मौलाना मुर्तज़ा ह़सन चांदपुरी
5	अस्सहाबुल मिदरार मौलाना मुर्तज़ा ह़सन चांदपुरी
6	तौज़ीहुल बयान फ़ी हिफज़िल ईमान मौलाना मुर्तज़ा ह़सन चांदपुरी
7	तरीक़ा मौलूद शरीफ़ ह़कीमुलउम्मत मौ. अशरफ़ अली थानवी
8	हिफ़ज़ुल बयान ह़कीमुलउम्मत मौ. अशरफ़ अली थानवी
9	मुफ़ीदुल मूमिनीन फ़ी रद्दिल मुबतदिईन ह़कीमुलउम्मत मौ. अशरफ़ अली थानवी
10	आंखों की ठण्डक (हाज़िर व नाज़िर) मौलाना सरफ़राज़ खां साह़ब सफ़दर
11	इज़ालतुलरैब अन अक़ीदति इल्मिल ग़ैब मौलाना सरफ़राज़ खां साह़ब सफ़दर
12	राहे सुन्नत मौलाना सरफ़राज़ खां साह़ब सफ़दर
13	नूरो बशर मौलाना सरफ़राज़ खां साह़ब सफ़दर
14	दिल का सुरूर मौलाना सरफ़राज़ खां साह़ब सफ़दर
15	ह़क़ पर कौन है? मौलाना इमाम अली दानिश

16	ज़लज़लह दर ज़लज़लह मौलाना इमाम अली दानिश
17	कलिमतुल ईमान और सुन्नत व बिदअत मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी साह़ब देवबन्दी
18	बरेलवी फ़ितने का नया रूप मौलाना मुह़म्मद आरिफ़ साह़ब सम्भली
19	इल्मे ग़ैब क़ारी मुह़म्मद तय्यब सहब क़ासमी
20	बरेलवी कुरआन का इल्मी तजज़ियह मौलाना अख़लाक़ हुसैन क़ासमी
21	अशरफुल जवाब ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
22	बवारिकुल ग़ैब मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी
23	फ़तह़ बरेली का दिल कश नज़ारा मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी
24	साएक़ऐ आसमानी बर ...... रज़ाख़ानी मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी
25	इमआनुन्नज़र फ़ी अज़ानिल क़बर मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी
26	बरेलवियत का शीश मह़ल मौलाना ताह़िर हुसैन गयावी
27	रज़ाखानियत के अलामती मसाइल मौलाना ताह़िर हुसैन गयावी
28	अंगुश्त बोसी से बाईबिल बोसी तक मौलाना ताह़िर हुसैन गयावी
29	शमअे तौह़ीद मौलाना सनाउल्लाह अमरत सरी
30	अल जन्नह लि अहलिस्सुन्नह मौलाना अब्दुल ग़नी पटयालवी
31	बरैली मज़हब पर एक नज़र मौलाना अब्दुल्लाह क़ासमी ग़ाज़ी पुरी

32	मुख़तारे कुल मौलाना सरफ़राज़ खां सफ़्दर
33	समाए मौता मौलाना सरफ़राज़ खां सफ़्दर
34	चराग़ की रौशनी मौलाना सरफ़राज़ खां सफ़्दर
35	गुलदस्ताए तौह़ीद मौलाना सरफ़राज़ खां सफ़्दर
36	तारीख़ मीलाद मौलाना अ़बदुश्शकूर मिर्ज़ापूरी

इह़सान व तसव्वुफ़ की कुछ किताबें

1	इह़सान व तसव्वुफ़ (बंगला) मौलाना अमीनुल ह़क़ मेमन संघी
2	आदाबुश्शेख़ वलमुरीद ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
3	तबवीब तरबियतुस्सालिक ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
4	तरबियतुस्सालिक ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
5	तर्जुमा अनफ़ासुल आरिफ़ीन मौलाना यूशा सहारनपुरी
6	अत्तशर्रुफ़ बिमारिफ़ति अह़ादीसि तसव्वुफ़ ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
7	अत्तसर्रुफ़ फ़ी तह़क़ीक़ित्तसव्वुफ़ ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
8	अत्तकश्शुफ़ अन मुहिम्मातित्तसव्वुफ़ ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
9	खुसूसुल कलिम ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
10	शरह़ मसनवी मौलाना रूम मौलाना अब्दुल क़ादिर डेरवी

11	शरीअत व तसव्वुफ़ मौलाना मसीहुल्लाह खां अलीगढ़ी
12	उनवानुत्तसव्वुफ़ ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
13	कलीदे मसनवी मौलाना रूम ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
14	मबादिउत्तसव्वुफ़ ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
15	मसइलुस्सलूक कलामे मलिकुल मुलूक ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी

ज़बान व अदब (सहित्य) की कुछ किताबें

1	क़सीदह लामिअतुल मूजिज़ात (अ़रबी) मौलाना ह़बीबुर्रह़मान उस्मानी देवबन्दी
2	तर्जुमा मक़ामाते ह़रीरी मा ह़ाशिया मौलाना अब्दुस्समद सारिम
3	तौज़ीह़ात शरह़ सबआ मुअल्लिक़ात मौलाना क़ाज़ी सज्जाद हुसैन
4	अत्तालीक़ात शरहुल मक़ामात मौलाना नूरुल ह़क
5	ह़ाशिया दीवाने ह़मासा (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना ऐज़ाज़ अली अमरोहवी
6	ह़ाशिया दीवाने मुतनब्बी ह़ज़रत मौलाना ऐज़ाज़ अली अमरोहवी
7	ह़ाशिया मक़ामाते ह़रीरी ह़ज़रत मौलाना इदरीस कांधलवी
8	ह़ाशिया मुफ़ीदुत्तालिबीन ह़ज़रत मौलाना ऐज़ाज़ अली अमरोहवी
9	ह़ाशिया मुफ़ीदुत्तालिबीन मौलाना ज़हूरुल ह़क़ देवबन्दी
10	ह़ाशिया मुफ़ीदुत्तालिबीन मौलाना मुह़म्मद अली चटगामी

11	अल क़िराअतुल वाज़िह़ा (अ़रबी) मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा केरानवी
12	अल–बैयनात तर्जुमा उर्दू क़साइदे लामियातुल मूजिज़ात ह़ज़रत मौलाना ऐज़ाज़ अली अमरोहवी
13	कलामे अ़रबी (दो जिल्द) ह़ज़रत मौ. ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद
14	मुईनुल लबीब फ़ी क़साइदिल ह़बीब मौलाना ह़बीबुर्रह़मान उस्मानी देवबन्दी
15	नफ़ह़तुल अ़रब (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना ऐज़ाज़ अली अमरोहवी
16	नफ़ह़तुल अदब (अ़रबी) मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा केरानवी
17	ह़ाशिया मुक़द्दिमाते ह़रीरी मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा केरानवी
18	अल इफ़ादातुल जमालियह मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा केरानवी

लुगात (शब्द कोष) की कुछ किताबें

1	उर्दू अ़रबी डिक्शनरी मौलाना अब्दुल ह़फ़ीज़ बलयावी
2	बयानुल्लिसान (अ़रबी उर्दू लुग़त) क़ज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद मेरठी
3	क़ामूसुल कुरआन क़ज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद मेरठी
4	अल क़ामूसुल जदीद (उर्दू से अ़रबी) मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा साह़ब कैरानवी
5	अल क़ामूसुल जदीद (अ़रबी से उर्दू) मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा साह़ब कैरानवी
6	अल क़ामूसुल इस्तलाह़ी (उर्दू से अ़रबी) मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा साह़ब कैरानवी
7	अल क़ामूसुल इस्तलाह़ी (अ़रबी–उर्दू) मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा साह़ब कैरानवी

8	अल क़ामूसुल वह़ीद (अ़रबी से उर्दू) मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा साह़ब कैरानवी
9	मिस्बाहुल्लुग़ात मौलाना अब्दुल ह़फ़ीज़ बलयावी
10	अलमोजमुल वह़ीद मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा साह़ब कैरानवी

तारीख व सीरत (इतिहास) की कुछ किताबें

1	इसलाम का निज़ामे तालीम व तरबियत ह़ज़रत मौ. मनाज़िर अह़सन गीलानी
2	इसलाम का निज़ामे ह़ुकूमत ह़ज़रत मौलाना ह़ामिदुल अनसारी ग़ाज़ी
3	इसलाम में गुलामी की ह़क़ीक़त ह़ज़रत मौलाना सईद अकबराबादी
4	इसलाम और मग़रबी तहज़ीब ह़ज़रत मौलाना क़ारी मु. तय्यब क़ास्मी
5	इशाअते इसलाम ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान उस्मानी
6	आयानुल ह़ुज्जाज ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
7	इमाम अबू ह़नीफ़ा की सियासी ज़िन्दगी ह़ज़रत मौ. मनाज़िर अह़सन गीलानी
8	अनवारे क़ास्मी (ह़. नानौतवी की जीवनी) मौलाना अनवारुल ह़सन शेरकोटी
9	बलागुल मुबीन फ़ी मकातिबि सैयदिल मुर्सलीन ह़ज़रत मौलाना ह़िफ़्ज़ुर्रह़मान सिवहारवी
10	पानीपत और बुज़ुर्गाने पानीपत ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मियां देवबन्दी
11	तारीख़े इसलाम ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मियां साह़ब
12	तारीखुत्तफ़्सीर मौलाना अब्दुस्समद सारिम साह़ब

13	तारीखुल ह़दीस मौलाना अब्दुस्समद सारिम साह़ब
14	तारीखुल क़ुरआन मौलाना अब्दुस्समद सारिम साह़ब
15	तारीखे मिल्लत (तीन भाग) क़ाज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद मेरठी
16	तजल्लियाते उस्मानी मौलाना अनवारुल ह़सन शेरकोटी
17	तज़किरतुल ऐजाज़ मौलाना सैयद अनज़र शाह कश्मीरी
18	तज़किरह शाह वलीयुल्लाह देहलवी ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी
19	तज़किरह ह़ज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मंजूर नौमानी
20	तर्जुमा सीरते ह़लबियह मौलाना मुह़म्मद असलम साह़ब रमज़ी
21	ह़ुज़ूरे अकरम की सियासी जिन्दगी मौलाना अख़लाक़ ह़ुसैन क़ासमी
22	ह़याते इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
23	ह़याते इमदाद मौलाना अनवारुल ह़सन शेरकोटी
24	ह़याते शेख़ुल हिन्द ह़ज़रत मौ. सय्यद असग़र ह़ुसैन देवबन्दी
25	ह़याते शेख़ुल इसलाम ह़ज़रत मौ.सय्यद असग़र ह़ुसैन देवबन्दी
26	ह़याते नबवियह ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती महमूद नानौतवी
27	ख़ातिमुल अम्बिया ह़ज़रत मौ. मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी देवबन्दी
28	ख़ातिमुन्नबियीन ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद तय्यब क़ासमी

29	खालिद बिन वलीद मौलाना अब्दुस्सबूह़ पेशावरी
30	खुल्क़े अज़ीम ह़ज़रत मौलाना ह़ामिदुल अंसारी ग़ाज़ी
31	रसूले करीम ह़ज़रत मौलाना ह़िफ़्ज़ुर्रह़मान सिवहारवी
32	ज़ुब्दतुस्सियर ह़ज़रत मौलाना इमादुद्दीन शेरकोटी
33	सफ़र नामा शेख़ुल हिन्द ह़ज़रत मौ. सय्यद ह़ुसैन अह़मद मदनी
34	सीरत ख़ालिद बिन वलीद मौलाना ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद मेरठी
35	सफ़र नामा बरमा ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब
36	सफ़र नामा अफ़ग़ानिस्तान ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब
37	सफ़र नामा मिश्र व ह़िजाज़ ह़ज़रत मौलाना मिन्नतुल्लाह रह़मानी
38	सवानह अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी ह़ज़रत मौ. मनाज़िर अह़सन गीलानी
39	सवानह उवेसे क़रनी ह़ज़रत मौ. मनाज़िर अह़सन गीलानी
40	सवानह ह़ज़रत मौलाना मुह़म्म्द मियां ह़ज़रत मौ. सय्यद अख़्तर ह़ुसैन देवबन्दी
41	सवानह क़ासमी ह़ज़रत मौ. मनाज़िर अह़सन गीलानी
42	सीरते तैयबह मौ. ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद मेरठी
43	सीरते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम ह़ज़रत मौ. मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
44	सीरते मुबारका मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम ह़ज़रत मौलाना सय्यद मुह़म्मद मियां देवबन्दी

45	सीरते रसूल सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद असलम रमज़ी
46	शाह वली युल्लाह की सियासी तह़रीक ह़ज़रत मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी
47	शहीदे करबला ह़जरत मौ. क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब
48	शहीदे करबला ह़जरत मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी देवबन्दी
49	शहीदे करबला क़ाज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद मेरठी
50	शोहदा ए इसलाम ह़जरत मौलाना अख़लाक़ ह़ुसैन गीलानी
51	सिद्दीक़े अकबर ह़जरत मौ. सईद अह़मद अकबराबादी
52	अ़रबी किताबों के तराजिम मौलाना अब्दुस्सबूह़ पिशावरी
53	उलमाए ह़क़ ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मियां देवबन्दी
54	उलमाए हिन्द का शानदार माज़ी ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मियां देवबन्दी
55	गुलामाने इसलाम ह़ज़रत मौ. सईद अह़मद अकबराबादी
56	फ़क़ीहे मिश्र ह़ज़रत मौ. डाक्टर मुस्तफ़ा ह़सन अलवी
57	मशाहीरे उम्मत ह़ज़रत मौ. क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब
58	मोह़तसिबे इसलाम ह़ज़रत मौ. डाक्टर मुस्तफ़ा ह़सन अलवी
59	मुरक़्क़ा सीरत ह़ज़रत मुफ़्ती जमीलुर्रह़मान सिवहारवी
60	मुसलमानों का उरूजो व ज़वाल ह़ज़रत मौ. सईद अह़मद अकबराबादी

61	मोलवी मानवी ह़ज़रत मौ. सय्यद असग़र हुसैन देवबन्दी
62	मेरी डायरी ह़ज़रत मौलाना उबैदुल्लाह सिन्धी
63	अन्नबियुल ख़ातिम ह़ज़रत मौ. मनाज़िर अह़सन गीलानी
64	नशरुत्तिब ह़ज़रत मौ. अशरफ़ अली थानवी
65	नक़्शे ह़यात ह़ज़रत मौ. सय्यद हुसैन अह़मद मदनी
66	वफ़ातुन्नबी ह़ज़रत मौलाना अख़लाक़ हुसैन क़ासमी
67	हज़ार साल पहले ह़ज़रत मौ. मनाज़िर अह़सन गीलानी
68	हिन्दुस्तान अहदे मुग़ल्या में ह़ज़रत मौ. सय्यद मुह़म्मद मियां देवबन्दी

इल्मे कलाम ह़क़ाइक़े इसलामिया और फ़न असरारे दीन और दूसरे विभिन्न ज्ञान–विज्ञान में देवबन्द के पूर्वजों की हज़ारों शोध पूर्ण रचनायें हैं जिन की गणना और परिचय इन संक्षिप्त पृष्ठों में आना कठिन है। दारुल उ़लूम देवबन्द की रचनाओं और संकलनों और अनुवादकों का एक बहुत ही सीमित ख़ाका है। जिस में केवल कुछ विषयों की किताबों के नाम दिये जा सके हैं नहीं तो एक अनुमान के अनुसार देवबन्द के विद्वानों की रचनाओं की संख्या बारह हज़ार के लग भग है। केवल एक विद्वान ह़कीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अली थानवी की पुस्तकें एक हज़ार से अधिक हैं। दिल्ली की प्रकाशन संस्था "नदवतुल मुसन्निफ़ीन" और ढाबेल में मजलिस इलमी फ़ुजला–ए–दारुल उ़लूम ही के स्थापित किये हुए हैं, जिन से अब तक बहुत सी महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हो कर पाठकों की प्रशंसा प्राप्त कर चुकी हैं।

इस से पूर्व कासमी प्रकाशन देवबन्द और ताजुल मआरिफ़, शेखुल हिन्द एकेडमी और मरकजुल मआरिफ़ आदि संस्थाओं से भी बहुत सी किताबें छप चुकी हैं। हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, और बंगलादेश में देवबन्द के विद्वानों की और भी बहुत सी तस्नीफ़ी और इशाअती संस्थायें हैं जिन

की संख्या जानना बहुत कठिन है। ये संस्थायें उप महाद्वीप के विभिन्न स्थानों और विभिन्न भाषाओं में अपने–अपने तौर पर दीनी व इल्मी खिदमत में लगी हुई हैं, जिन में विभिन्न ज्ञान–विज्ञान के अतिरिक्त दरसे निज़ामी (निज़ामे पाठय क्रम) की बहुत सी किताबों की शरहें (कुंजियें) व नोट भी लिखे गये हैं और विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किये गये हैं।

देवबन्द के लगभग साठ कुतबखाने देवबन्द के विद्वानों की रचनाओं को प्रकाशित करने में लगे हैं। इनमें पुस्तकों के प्रकाशन का अनुमान इस से किया जा सकता है कि देवबन्द में आफ़सैट प्रेस की कई मशीने किताबों के छापने में लगी हैं। इन कुतबखानों के कथनानुसार काम की यह दशा है कि बहिश्ती ज़ेवर (ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी) के कई–कई एडिशन एक समय में विभिन्न कुतुबख़ानों से निकलते रहते हैं। बहिश्ती ज़ेवर के तर्जुमें अब तक कई भाषाओं में छप चुके हैं। पढ़े लिखे मुसलमानों के बहुत कम घर ऐसे होगें जहां बहिश्ती ज़ेवर मौजूद न हों। तालीमुल इस्लाम (लेखक मुफ़्ती मुह़म्मद किफ़ायतुल्लाह) की उपयोगिता का भी यही हाल है। इस के भी कई एडिशन छप चुके हैं। हिन्दी और दूसरी भाषाओं में इस का भी अनुवाद है।

देवबन्द के विद्वानों की रचनायें उप महाद्वीप के मुल्कों के अलावा अफ़गानिस्तान, बरमा, नेपाल, सेलोन, दक्षिणी अफ़्रीक़ा, ब्रिटेन, अमेरिका और दूसरे देशों तक पहुंचती है जहां ये रचनायें शौक़ से पढ़ी जाती हैं। दीनी पुस्तकों के प्रकाशन के कारण देवबन्द भारत वर्ष में बड़ा केन्द्र समझा जाता है, अतः इन पुस्तकों द्वारा बहुत से देशों में दीनी ज्ञान के प्रकाशन और प्रसार की बड़ी सेवा हो रही है।

दारुल उ़लूम की उर्दू सहित्य की सेवायें

हिन्दुस्तान में ज्ञान–विज्ञान, आत्मज्ञान और धार्मिक उन्नति का प्रकाशमान स्तम्भ 'दारुल उ़लूम देवबन्द' की लगातार कोशिश एक सौ पचास साल पर आधारित है। दारुल उलूम जिन ह़ालात (परस्थितियों) में स्थापित हुआ था उस से ज्ञात होता है कि ब्रिटिश शासन ने ईसाइयत के प्रचार और प्रसार के लिये जिन हथकण्डों का प्रयोग किया दारुल उ़लूम देवबन्द ने दीनी, तालीमी, सियासी, समाजी, सक़ाफ़ती और भाषाई प्रत्येक मोर्चे पर अंग्रेज़ों के प्रोपैगण्डों को असफल बना दिया। मुसलमानों के अन्दर से दीनी रूह़ को मुर्दा और इस्लामी विशिष्ठता को समाप्त कर देने के लिये पश्चिम से जो आंधी उठी तो ऐसा अनुभव हो रहा था कि हिन्तुस्तान में अब इस्लाम की स्थिरता कच्चे धागे से लटक रही है। लेकिन उलमा–ए–हिन्द विशेष रूप से दारुल उ़लूम देवबन्द के उलमा (विद्वानों) ने मुसलमानों के अन्दर से मायूसी के भाव को निकाल कर उम्मीद की रोशनी पैदा की और हर प्रकार से इस्लाम और मुसलमानों की रक्षा की।

विद्वानों की दूर दृष्टि देख रही थी कि मुसलमानों की मज़हबी ज़ुबान (भाषा) अ़रबी है और हिन्दुस्तान में फ़ारसी का बोलबाला है लेकिन भविष्य में हिन्दुस्तान का भाषाई नक़शा कुछ और होगा। ब्रिटिश सरकार हिन्दुस्तानियों की भाषा पर आक्रमण करके अंग्रेज़ी भाषा और सहित्य के फ़रोग़ (उन्नति) का हर सम्भव प्रयत्न कर रही थी।लेकिन हिन्दुस्तान पर शासन करने के लिये यहां की भाषायें जानना भी आवश्यक था। उस समय उर्दू अनुन्नत भाषा थी। अंग्रेज़ अ़रबी इस कारण नहीं सीख सकते थे कि वह मुसलमानों की खालिस धार्मिक भाषा थी। और फ़ारसी ज़ुबान भी धार्मिक रंग अपना कर मुसलमानों की ज़ुबान

बन चुकी थी। इसलिये उन्हों ने उर्दू भाषा की ओर ध्यान दिया। अतः अंग्रेज़ों ने अपने नापाक इरादे को पूरा करने के लिये उर्दू सीखना शुरू किया और उसकी शिक्षा को आसान बनाने के लिये क़वाइद (ग्रामर) लिखवाये।

दारुल उ़लूम देवबन्द की स्थापना का जो समय है वह उर्दू का उन्नतिशील समय कहलाता है, उस समय उर्दू भाषा अपने आप को बनाने और संवारने में लगी थी। इस का भविष्य कैसा होगा कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन देवबन्द के विद्वानों ने अनुभव किया कि यद्यपि अ़रबी मुसलमानों की धार्मिक भाषा है और फ़ारसी पर भी धर्म का लबादा डाल दिया गया है, लेकिन निकट भविष्य में उर्दू का बोलबाला होने वाला है। हिन्दुस्तान में अगर किसी भाषा द्वारा इस्लाम की ख़िदमत हो सकती है तो वह उर्दू ज़ुबान है। अब सवाल यह है कि देवबन्द के पूर्वजों (अकाबिरीन) ने अ़रबी और फ़ारसी जैसी मीठी और उन्नतिशील भाषाओं को अचानक नकार कर उर्दू ही को शिक्षा का मध्यम क्यों बनाया? विदित है कि इसे देवबन्द के उलमा की बुद्धिमत्ता ही कहा जा सकता है। या दूसरे शब्दों में इल्हाम से उपमा दी जा सकती है, आज अगर देवबन्द की शिक्षा का माध्यम अ़रबी या फ़ारसी होता उसका क्षेत्र सिमटकर कितना कम हो जाता इसका अनुभव हिन्दुस्तान के भाषाई वातावरण में किया जा सकता है।

दारुल उ़लूम देवबन्द की स्थापना के नतीजे में हिन्दुस्तान के चप्पे–चप्पे में दीनी मदरसों का जाल फैला हुआ है और अधिकतर मदरसे दारुल उ़लूम के नक़्शे क़दम पर चलते हुए अपनी शिक्षा का माध्यम उर्दू को बनाये हुए है। यद्यपि हिन्दुस्तान की विभिन्न रियासतों (प्रान्तों) की भाषा भिन्न है लेकिन हर स्थान पर शिक्षा का माध्यम उर्दू ही है। यहां तक कि पश्चमी बंगाल और आसाम सहित, बंग्ला देश में भी दारुल उ़लूम के आधार पर उर्दू ही में शिक्षा दी जाती है। अगर यह कहा जाय तो ग़लत न होगा कि देश के बंटवारे के पश्चात हिन्दुस्तान में जिस प्रकार का सौतेला व्यवहार अपनाया गया है और उर्दू भाषा ज़ुबानी बंटवारे का शिकार हो गई अगर इस्लामी मदरसे न होते या मदरसे वालों का ध्यान उर्दू भाषा की ओर न होता तो इसका अस्तित्व हिन्दुस्तान में इसी तरह होता जैसा इस समय फ़ारसी भाषा का है।

उर्दू भाषा मुसलमानों की भाषा है, यह कहना बिल्कुल ग़लत है। हिन्दुस्तान की स्थानीय भाषायें, प्राकृति, अपभ्रंश, संस्कृत और पंजाबी के साथ, अ़रबी, फ़ारसी के आपसी मेल मिलाप से उर्दू बनी है। और इस के जन्म से लेकर उन्नति तक तमाम मंजिलों को तय करने में, हिन्दू, मुसलमान, बुद्ध, जैन, ईसाई और पादरियों का बराबर का योगदान है। लेकिन उर्दू भाषा धार्मिक ईर्ष्या का शिकार उस समय हुई जब आज़ादी से पहले ही हिन्दुओं का एक वर्ग हिन्दू राष्ट्र की विचारधारा लेकर सामने आया और देश की एकता को नष्ट कर दिया। उस वर्ग ने हिन्दुओं को यह समझाने का प्रयत्न किया कि उर्दू की लिपि अ़रबी की लिपि के अनुसार है और मुसलमानों के धार्मिक नेता इस भाषा को अपनी भाषा बनाये हुए हैं। हिन्दू समर्थक संगठन अपने इस आन्दोलन में अधिक सीमा तक सफल हो गयीं। इस से उर्दू जो हिन्दुस्तान की रिवायत की अमीन ओर क़ौमी एकता की अलामत है मज़हबी घृणा का शिकार हो गई।

आज अगर उर्दू में ज़िन्दगी ही नहीं बल्कि वह उन्नति की राहें तय कर रही हैं तो वह इन मदरसों की ही देन है। दारुल उ़लूम के पढ़े लिखे देश विदेश के विभिन्न मदरसों में, शेरो–शायरी, लेखन कार्य, काव्य संकलन, अनुवाद, व्याख्याएं, मासिक और साप्ताहिक पत्र पत्रिकाओं के द्वारा उर्दू की भरपूर सेवा कर रहे हैं। ह़दीस, तफ़सीर फ़त्वे आदि के जो काम उलमा–ए–देवबन्द के द्वारा हुए हैं वह उर्दू भाषा को परवान चढ़ाने में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि दूसरी संस्थाओं का उर्दू भाषा से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है। अगर पूरे तौर पर देखा जाय तो उर्दू भाषा और उससे सम्बंधित बातों का ताल्लुक़ तीन बड़ी संस्थाओं से है। एक ओर देवबन्द और उसके शरई मसलक का पालन करने वाले इदारों (संस्थाओं) को है। दूसरी तरफ़ अलीगढ़ और उसकी वर्तमान शिक्षा को है। तीसरी तरफ़ नदवतुल उलमा और उस की विचारधारा को मानने वाले आते हैं। लेकिन उर्दू ज़ुबान व अदब की खिदमत में देवबन्द को महत्व इस कारण है कि यहां के उलमा की रचनायें दूसरो के मुक़ाबले में कहीं अधिक हैं। जब कि दूसरी संस्थाओं में यह बात नहीं है। फिर यह कि वह विशेषता जो दारुल उ़लूम देवबन्द को दूसरी संस्थाओं से अलग करती है वह इसी की रूप रेखा पर

मदरसों का जाल है। भारत, पाकिस्तान, बंग्लादेश में तो लगभग नब्वे प्रतिशत मदरसे ऐसे है जो अपना सम्बन्ध देवबन्द से रखते हैं। वह उर्दू के माध्यम से क़ुरआन और ह़दीस की शिक्षा देते हैं।

उर्दू की सेवा के सम्बन्ध से केवल इतना ही नहीं है कि इस्लामी मदरसे उर्दू को अपना शिक्षा का साधन बनाये हुए हैं बल्कि अधिकतर मदरसे उर्दू में अपना मासिक भी निकालते हैं, और उर्दू पत्रकारिता बनाने, संवारने और निखारने का भ्रसक प्रयत्न करते हैं। उर्दू के साथ यह लगाव वहां के उलमा को अपने पूर्वजों से विरासत में मिला है। दारुल उ़लूम देवबन्द सबसे पहले आत्मिक संरक्षक ह़ाजी इमदादुल्लाह साह़ब की उर्दू रचनायें और उनकी आत्मा को झिनझोरने वाली शायरी इस कारण भी उर्दू की महान सेवा बन जाती है कि उस दौर में उर्दू भाषा अनुन्नत थी। देवबन्द के आन्दोलन के संस्थापक ह़ज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी उर्दू की रचनायें और उर्दू शायरी मे महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। आप के कुछ शेर तो उर्दू के ऊंचे से ऊंचे शायर को भी मात देते हैं।

दारुल उ़लूम के पहले सदर मुदर्रिस मौलाना मुह़म्मद याक़ूब नानौतवी ने ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी की जीवनी उस समय लिखी जब के स्वयं सहित्य लेखन से खाली था। यह जीवनी लेखन उर्दू अदब का बेहतरीन नमूना है। दारुल उ़लूम देवबन्द की महान हस्ती विद्वान मौलाना रशीद अह़मद गंगोही की लेखन शैली आज भी महत्व रखती है। उनकी आरासतः व पैरासतः तह़रीर आज भी उर्दू अदब का एक नमूना है। दारुल उ़लूम देवबन्द के पहले शागिर्द ह़ज़रत शैख़ुल हिन्द मह़मूदुल ह़सन उच्च कोटि के सहित्यकार थे। उन्हों ने अपनी इल्मी रचना और दर्द भरी शायरी के द्वारा उर्दू की ज़बरदस्त सेवा की है। मुहावरों और प्रतिदिन के प्रयोग से भरी हुई आपकी तह़रीरें उर्दू की एक नई शैली की अमूल्य निधि है। दारुल उ़लूम देवबन्द के पूर्व मोहतमिम मौलाना ह़बीबुर्रह़मान उस्मानी की प्रसिद्ध कृति 'इशाअते इस्लाम' अपनी सादगी और साधारण उर्दू में अलग शान रखती है। ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानावी की एक हज़ार से अधिक उर्दू की रचानायें उर्दू भाषा को उन्नति देने में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। बिना विरोध मसलक उप महाद्वीप का वह कौन सा मुस्लिम

घर होगा जहाँ आप की प्रसिद्ध संग्रह 'बहिश्ती ज़ेवर' उर्दू भाषा में न पहुंची हो। आपने अपने विशेष साथी मौलाना सय्यद सुलेमान नदवी के पत्रों के उत्तर अधिकतर शायरी में दिये हैं।

अल्लामा शब्बीर अह़दम उस्मानी के क़ुरआन शरीफ़ के ह़ाशिये उर्दू में निराले अन्दाज़ पर क़ुबूलियत प्राप्त कर चुके हैं। सऊदी अ़रब सरकार ने तर्जुमा शैख़ुल हिन्द के साथ आपके ह़ाशियों को लाखों की संख्या में छपवाकर घर–घर में पहुंचाने की पूरी कोशिश की है। मौलाना मानाज़िर अह़सन गीलानी भी दारुल उ़लूम ही के पढ़े हुए थे जिन्हों ने उर्दू ज़बान व अदब पर अपनी सेवा के गहरे चिन्ह स्थापित किये हैं। इनके अतिरिक्त मारिफ़ुल क़ुरआन लिखने वाले मुफती मुह़म्मद शफ़ी साह़ब, मौलाना इदरीस साह़ब कांधलवी, मौलाना बद्रे आलम मेरठी, मौलाना ह़िफ़ज़ुर्रह़मान, मौलाना मुह़म्मद मियां देवबन्दी, ह़कीमुल इस्लाम मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब मौलाना मंजूर नोमानी, मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी, मौलाना सईद अह़मद अकबराबादी, क़ाज़ी ज़ैनुल अ़ाबिदीन मेरठी, मौलाना ह़ामिद अंसारी ग़ाज़ी, मौलाना रज़ा अह़मद बिजनौरी और बेमिसाल अदीब मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा कैरानवी आदि देवबन्द के उलमा ने उर्दू के इल्मी व अदबी सरमाये में रंगा रंग इज़ाफ़ा कर के उर्दू भाषा और सहित्य की अमूल्य सेवा की है। ज़िन्दा लोगों में भी ह़ज़ारों देवबन्दी फ़ुजला न केवल हिन्द, पाक बल्कि दुनिया के चप्पे–चप्पे में उर्दू भाषा को प्रवान चढ़ा रहे हैं।

शेख़ुल हिन्द एकेडमी दारुल उ़लूम का एक इल्मी विभाग है जहां से अबतक दर्जनों किताबें उर्दू भाषा में छप चुकी हैं और यह सिलसिला बहुत ही तेज़ी के साथ जारी है। इस विभाग के आधीन उर्दू सह़ाफ़त (पत्रकारिता) की तालीम दी जाती है। प्रतिवर्ष बहतरीन पत्रकार व लेखक यहां से तैयार होकर निकलते हैं। अब तक दर्जनों सह़ाफ़ी इस एकेड़मी से तैयार हो चुके हैं। जिन्हें ने क़ौमी, (राष्ट्रीय) अख़बारों में बहुत शीघ्र आपना स्थान बनाया है।

विभिन्न दिशाओं से उर्दू भाषा और सहित्य के सिल–सिले में दारुल उ़लूम देवबन्द की बे मिसाल सेवाओं का अगर पूरी जानकारी के साथ जायज़ा लिया जाये तो हज़ारों पृष्ठ की एक मोटी पुस्तक बन सकती है। हमें बताना केवल यह है कि दारुल उ़लूम देवबन्द ने जहां इल्मी, दीनी,

सियासी और समाजी ख़िदमत अंजाम दी है वहीं उर्दू भाषा और सहित्य पर भी बड़ी ख़िदमत की है। दारुल उ़लूम देवबन्द यद्यपि एक अ़रबी और इस्लामी संस्था है इसलिये अ़रबी अदब (सहित्य) के अनुरूप है, लेकिन इससे यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि हिन्दुस्तानी मुसलमानों की उर्दू के द्वारा अधिक सेवा हो सकती है और दारुल उ़लूम इस से बे खबर है। उर्दू भाषा में देवबन्द की लाखों की संख्या में रचनाओं से अनुमान लगया जा सकता है कि लेखक उर्दू भाषा को ही प्रथमिकता देते हैं।

इस कार्य में देवबन्द के पचास से अधिक कुतबख़ाने लगे हुए हैं। देवबन्द के विद्वानों की रचनायें उपमहाद्वीप के मुल्कों के अलावा अफ़गानिस्तान, बरमा, नेपाल, सेलोन, दक्षिण अफ़्रीक़ा, ब्रिटेन, अमेरिका और दूसरे देशों तक पहुंचती है जहां ये रचनायें शौक़ से पढ़ी जाती हैं। चूंकि देवबन्द से प्रकाशित होने वाली किताबें अधिकतर उर्दू भाषा में होती हैं, इसलिये इन किताबों के द्वारा उर्दू भाषा का क्षेत्र भी दिन प्रति दिन विस्तार पकड़ता जा रहा है। एशिया, अफ़्रीक़ा और यूरोपियन देशों में करोड़ों मुसलमान इन पुस्तकों से लाभ उठा रहे हैं। प्रोफ़ेसर हुमायूं कबीर, के अनुसार इस साधन से दुनिया में हिन्दुस्तान के सम्मान को बहुत अधिक बढ़ावा मिल रहा है। और इस प्रकार उर्दू अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बन गयी है।

स्वतन्त्रता संग्राम में दारुल उ़लूम का योगदान

1857 में पूरे मुल्क में स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी गई। 1857 देश का पहला स्वतन्त्रता संग्राम था। उलमा ने संग्राम में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहब मुहाजिर मक्की के प्रसिद्ध ख़लीफ़ा हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही और हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी आदि ने एक इस्लामी फौजी यूनिट स्थापित करके अंग्रेज़ों के विरुद्ध शामली, थाना भवन, और कैराना आदि में युद्ध का मोर्चा खोल दिया। हज़रत हाजी इमदादुल्ला साहब अमीरुल मोमिनीन, मौलाना रशीद अहमद गंगोही वज़ीर लामबन्दी, हाफिज़ ज़ामिन साहब अमीर जिहाद, मौलाना मु. क़ासिम नानौतवी कमाण्डर इनचीफ़, मौलाना मुनीर साहब हज़रत नानौतवी के फौजी सैक्रेट्री और सय्यद हसन असकरी दिल्ली के क़िले में सियासी मेम्बर चुने गये।

जिहाद शामली के पश्चात, अंग्रेज़ों ने थानाभवन पर आक्रमण कर दिया और पूरे क़स्बे को जलाकर राख के ढेर में बदल दिया। स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले वीरों को फांसी पर लटकाया जाने लगा। हाजी इमदादुल्लाह साहब, मौलाना क़ासिम नानौतवी और मौलाना रशीद अहमद गंगोही के वारन्ट जारी कर दिये गये और बन्दी बनाने वालों या पता देने वालों के लिये असंख्य पुरस्कारों की घोषणा की गयी।

आलिमों के साथ इतना कठोर अत्याचार और ज़ुल्म किया गया कि इतिहासकारों की लेखनी उन को लिखने से कांपती है। गोया पशुता और अत्याचार का न समाप्त होने वाला सिलसिला लेकर आरम्भ हुआ था। अंग्रेज़ों ने मुसलमानों को दबाने, कुचलने, तबाह व बरबाद करने में विशेष रुप से मौलवियों को क़त्ल करने में तनिक भी झिझक अनुभव नहीं की। 1857 ई, के स्वतन्त्रता संग्राम में लगभग दो लाख मुसलमान

शहीद हुए जिन में पचपन हज़ार से अधिक उलमा (मोलवी) थे।

1857 ई. के स्वतन्त्रता संग्राम की असफलता के बाद उलमा ने हिन्दुस्तानियों के दिलों में आज़ादी की शमा रोशन की और अंग्रेज़ों से हिन्दुस्तान को आज़ाद करने के लिये एक ठोस प्रोग्राम तैयार किया। दारुल उ़लूम देवबन्द की स्थापना जहां मुसलमानों के अन्दर सभ्यता संस्कृति को बहाल करने, धार्मिक शिक्षा का ज्ञान देकर इसलाम धर्म के गुण उत्पन्न करने और उस के बनाये हुए सीधे रास्ते पर चलने के लिये हुआ था, वहीं हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ों की कोशिश को असफल करना भी एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य था। जिसे यूं कहा जा सकता है कि अंग्रेज़ों के अन्याय को समाप्त करने के लिये दारुल उ़लूम एक ठोस हथौड़ा मारने वाला था, जिसकी आवाज़ ने अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान में जीना दूभर कर दिया। दारुल उ़लूम के विद्यार्थियों ने अंग्रेज़ों के विरूद्ध मोर्चा खोल कर जिस प्रकार के कार्य किये हैं वे इतिहास के प्रकाशमान अध्याय हैं।

हज़रत नानौतवी, दारुल उ़लूम की आत्मा थे, हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता के लिये आपके कार्य स्वर्णाक्षारों से लिखने के योग्य हैं। आपने हिन्दुस्तानियों के दिलों में स्वतन्त्रा की रूह फूंक कर ऐसी रक्तपाति जंग (युद्ध) को आरम्भ किया था जिस को माने बग़ैर अंग्रेज़ भी नह रह सके। लेकिन अफ़सोस कि आप अभी जीवन की पचास बहारें भी न देख पाये थे कि स्वतन्त्रा के विभिन्न मोर्चों पर अपना बेमिसाल कार्य पूरा करके और कुर्बानी की राह डाल कर वास्तविक मालिक से जा मिले (स्वर्गवास होगया)।

हज़रत नानौतवी के देहान्त के समय दारुल उ़लूम देवबन्द, राजनितिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप में अनेकों कार्य कर चुका था। इस के पश्चात 1323/1905 में हज़रत शेख़ुल हिन्द की अध्यक्षता का दौर आरम्भ होता है। आपको दारुल उ़लूम का प्रथम विद्यार्थी होने का सौभाग्य प्राप्त है। अपने उस्ताद हज़रत नानौतवी के बाद स्वतन्त्रता की कमान अपने हाथ में ले ली, और पहला काम यह किया कि दारुल उ़लूम देवबन्द के फ़ारिग़ हुए विद्यार्थियों की शक्ति को इकट्ठा करने के लिये जमीयतुल अंसार के नाम से एक संगठन बनाया जिसमें भारत और भारत से बाहर के तमाम पुरातन विद्यार्थियों को शामिल किया। आप ने 1914 ई॰ के प्रथम महायुद्ध में तुर्की के शामिल हो जाने के बाद अपनी

जमीअत (संगठन) की पूरी शक्ति को ख़िलाफ़त–ए–उस्मानिया के पक्ष में प्रयोग करने का निर्णय किया। आप का यह अहम क्रान्तिकारी क़दम दुनिया की तारीख़ का अहम अध्याय है।

ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द ने जिस युग में हिन्दुस्तान की पूर्ण आज़ादी का विचार दिया, उस वक्त कोई राष्ट्रीय जमाअत या आन्दोलन पैदा नहीं हुआ था। ह़ज़रत मौलाना असद मदनी की तहरीर (लेख) के मुताबिकः ''आज़ादी की तीसरी जंग ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के नेतृत्व में लड़ी गई, और आप के प्रयत्न से यह तय पाया कि एक मिला जुला प्लेटफ़ार्म आज़ादी प्राप्त करने के लिये बनाया जाये। अतः इस काम के लिये गांधी जी को मौलाना ने परिचित कराया और उन को लीड़र बनाया। मुसलमानों ने अपने निजी फ़ण्ड से गांधी जी को पूरे देश का भ्रमण कराया। (हफ़्त रोज़ह अल जमीअत पृष्ठ 18, 1970)

ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के आन्दोलन को तह़रीक रेशमी रूमाल के नाम से जाना जाता है। 1915 ई० से पहले हिन्दुस्तान के लगभग सभी लीडर ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द की तह़रीक (आन्दोलन) में शामिल रह कर उन्हीं के आधीन थे, और उनकी हिदायत के मुताबिक़ विभिन्न मोर्चों पर काम कर रहे थे। यह अलग बात है कि बाद में लीड़रों ने उनका नाम भुला कर उन को याद नहीं रखा। आप का आन्दोलन कोई मामूली आन्दोलन नहीं था, बल्कि अपने अन्दर सम्पूर्ण आन्दोलन पैदा करने की योग्यता रखता था। आप हिन्दुस्तान में एक बड़ा आन्दोलन करके अंग्रेज़ों की जाबिरानह (कष्टमय) हुकूमत का तख़्ता पलटना चाहते थे जिसके लिये आपने 1905 ई० से 1914 ई० तक देश के अन्दर केंद्र स्थापित करने, अपने स्वंय सेवक तैयार करने और दूसरे विभिन्न देशों का सहयोग प्रप्त करने के लिये हजा़रों क्रांतिकारियों के साथ काम शुरू कर दिया था। देश के अन्दर आन्दोलन के विभिन्न केन्द्र और एक हैड क्वार्टर स्थापित करके आन्दोलन की भावना रखने वाले बड़े–बड़े मतवालों को काम पर लगा दिया था। मुख्य कार्यालय दिल्ली में था जिसमें ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द, मौलाना मुह़म्मद अ़ली, मौलाना शौकत अली, मौलाना आज़ाद, मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी, महात्मा गांधी, डॉक्टर अंसारी, जवाहर लाल नेहरू, लाला लाजपत राय और राजेन्द्र प्रसाद काम करते थे। इस के अतिरिक्त उप–केन्द्र पानीपत, लाहौर, दीनपुर,

कराची, और ढाका आदि में स्थापित किये गये थे। इनके अलावा सहयोग प्राप्त करने के लिये देश से बाहर भी आफ़गानिस्तान, मदीना, इस्ताम्बुल और कुस्तुनतुनिया आदि में विभिन्न केन्द्र स्थापित किये गये थे। प्रत्येक स्थान पर चोटी के उलमा लीडर आपकी देख–रेख में महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा कर रहे थे। (शेख़ुल हिन्द मौलाना मह़मूदुल ह़सन पृष्ठ 272–76)

ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द ने अपने आन्दोलन और मिशन को सफल करने के लिये बहुत ही राजनितिक दृष्टि के साथ विदेशों जेसे चीन, बर्मा, जापान, फ्रांस और अमेरिका आदि में अपने प्रतिनिधि मंडल भेजे और हर स्थान पर ब्रांच स्थापित करके इन देशों की हिमायत (सहयोग) प्राप्त करने का प्रयत्न किया और सहयोग न देने पर तटस्थ रहने की प्रार्थना की गई। इसमें एक सीमा तक सफलता भी मिली। ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द हर क़दम फूंक–फूंक कर बडी ही सवधानी के साथ रखते थे। उनकी राजनितिक सूझ–बूझ का पता मौलाना मुह़म्मद अली के इस बयान से भली भांति लगाया जा सकता है– ''इन वुफ़ूद के सिलसिले में हमारी राय यह थी कि अमेरिका हमारा हमख़्याल होगा और तुर्की का ह़िमायती होगा; लेकिन शेख़ुल हिन्द साह़ब की राय यह थी कि हमनवा (सहयोगी) तो क्या तटस्थ भी नहीं रहेगा। अतः यही हुआ; महायुद्ध में अमेरिका अंग्रेज़ों का सहयोगी बनकर सामने आया। उस समय हमारी समझ में आया।" (तह़रीक रेशमी रूमाल पृष्ठ 170)

ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के स्थापित किये गये शिक्षा केन्द्र अंग्रेज़ों के विरुद्ध संगठित आन्दोलन का रूप लिये हुए थे सावधानी इतनी थी कि अंग्रेज़ों के जासूस ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द की योजनाओं को भांपने में पूरी तरह असफल थे, फिर यह कि ह़ज़रत शैख़ुल हिन्द जैसे एक खालिस मोलवी से किसी बड़ी योजना की उन को बिल्कुल आशा नहीं थी। जबकि वास्तविकता इससे उलटी थी। स्वतन्त्रता संग्राम की सभी आन्दोलन इसी मोलवी की चलाई हुई थी। आपने बहुत ही तात्विकता और पूरी सियासत के साथ विदेशी युद्ध का नक़्शा तैयार किया। तुर्की सरकार को आक्रमण करने में जो रुकावटें आ रही थीं उन को दूर किया। मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी को क़ाबुल भेजा और खुद ह़ज (मक्का शरीफ़) में तशरीफ़ ले गये और हमलों के लिये चार रास्तों को तय

करके हर मोर्चे पर तजुर्बेकार आदमी को नियुक्त किया। आपकी इस फ़ौजी कार्यवाही की यात्रा में दारुल उ़लूम के जो सिपाही तन–मन–धन की बाज़ी लगा कर आप के साथ थे वे हैं मुह़म्मद मियां अंसारी, मौलाना मुर्तज़ा ह़सन चांदपुरी, मौलाना उज़ैरगुल पेशावरी, हाजी जान मुह़म्मद, मौलाना मतलूबुर्रह़मान देवबन्दी, मौलाना मुह़म्मद सहूल भागलपुरी, ह़ाजी अब्दुल करीम सरौंजी, मौलाना वह़ीद अह़मद फ़ैज़ाबादी, ह़कीम नुसरत हुसैन साह़ब, और मदीनह मुनव्वरह से शेखुल इसलाम मौलाना हुसैन अह़मद मदनी आप के साथ हो गये थे। यहां तक कि मालटा की क़ैद में भी आपके साथ रहे। अतः स्वतन्त्रता संग्राम के लिये दारुल उ़लूम से फ़ारिग़ों में मौलाना हुसैन अह़मद मदनी का विशेष स्थान है।

ह़ज़रत शेखुल हिन्द अन्दरूनी और बाहरी ह़मलों की तारीख़ निश्चित करके बाहर ह़ज की यात्रा पर गये थे। मक्का मुकर्रमह में तुर्की के अनवर पाशा से मुलाक़ात करके उनसे कुछ तह़रीरें लीं जिन में एक तह़रीर हिन्दुस्तान के मुसलमानों के नाम जंग की अपील की थी। अनवर पाशा की इन तह़रीरों को बहुत ही सावधानी के साथ आपने भारत भेज दिया, जिसकी फ़ोटो कापी हिन्दुस्तान के तमाम केन्द्रों पर पहुंचा दी गयी और पुलिस को हवा भी न लगी।

इधर मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी ने क़ाबुल में अमीर ह़बीबुल्लाह से तुर्की ह़मले की आज्ञा प्राप्त करली और उन्हों ने इसकी सूचना शेखुल हिन्द को पहुंचाने के लिये एक रेशमी रोमाल बनवाया जिसमें अमीर ह़बीबुल्लाह से किये गये मुआहदे की पूरी रिपोर्ट और तारीख़ का खुलासा था मगर दुर्भाग्य से रास्ते ही में यह रूमाल अंग्रेज़ों के हाथ लग गया और पूरी योजना की पूर्णता के समय यह भेद खुल गया।

क़िस्मत की ख़ूबी देखिये टूटी कहां कमंद
दो चार हाथ जब कि लबे बाम रह गया

अंग्रेज़ों ने ख़त में आन्दोलन का खुलासा देख़ कर तमाम रक्षा के कार्य कर डाले चूंकि तमाम केन्द्रों को इन्क़लाब की तारीख़ याद थी लेकिन आदेश के बग़ैर कोई ह़रकत करने की इजाज़त नहीं थी और खत के पकड़े जाने की वजह से अंतिम आदेश की बात समाप्त हो गयी थी। भेद खुलते ही हिन्दुस्तान के तमाम इन्क़लाबी लीड़रों को अंग्रेज़ों के अत्याचार का शिकार होना पड़ा। मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी अमीर

ह़बीबुल्लाह के क़त्ल तक जेल में रहे। ह़ज़रत शेखुल हिन्द को शरीफ़ मक्का ने एक फ़त्वे पर हस्ताक्षर न करने के बहाने गिरफतार कर लिया। एक महीने तक जद्दा में क़ैद रहे फिर आपको 12 जनवरी 1917 ई॰ को मिस्र की क़ैद में बदल दिया। इस के बाद 16 फरवरी 1917 ई॰ को मालटा में जंगी क़ैदी की हैसियत से भेज दिया। आपके साथ मौलाना हुसैन अह़मद मदनी, मौलाना उज़ैरगुल और ह़कीम नुसरत हुसैन भी मालटा जेल में रहे।

जमीअत उलमा–ए–हिन्द

ह़ज़रत शेखुल हिन्द की गिरफ़्तारी के बाद यद्यपि इन्क़लाब के तमाम मंसूबे (योजनायें) ख़त्म हो गये मगर आप से सम्पर्क रखने वाले हिम्मत नहीं हारे और आरम्भ से आन्दोलन छेड़ने की जिद्दो–जुहद में लगे रहे। जमीअत उलमा–ए–हिन्द की स्थापना इसी आन्दोलन का हिस्सा था। असफलता से इन शेर दिल इन्क़लाबी लीड़रों के पग नहीं डगमगाये बल्कि असफलता से कार्य करने का जोश और अधिक उभरा। ह़ज़रत शेखुल हिन्द ने मालटा से वापसी के बाद नई राजनीतिक कोशिशें आरम्भ कर दीं। आप ने ख़िलाफ़त आन्दोलन और इण्ड़ियन नेशनल कांग्रेस के मोर्चे पर दूसरी जंग छेड़ने का इरादा बना लिया। इस के साथ 'नान कोआप्रेशन' (सहयोग ना करने) का फ़त्वा देकर जमीअत उलमा–ए–हिन्द के सामूहिक फ़ैसले की हैसियत से 500 उलमा के हस्तक्षर ले कर जारी किया जो काफ़ी प्रभावकारी रहा। मौलाना सिंधी ने अस्थाई हुकूमत के नाम पर अफ़गानिस्तान ह़कूमत से संधि की। मौलाना मुह़म्मद अली और मौलाना आज़ाद आदि ने बहुत तेज़ी से मुक़ाबला आरम्भ कर दिया। जिससे पूरे हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ का विरोध और आज़ादी का एक तूफ़ान खडा हो गया। ह़ज़रत शेखुल हिन्द का 'नान कोआप्रेशन' का फ़त्वा बहुत प्रभावकारी रहा, यह एक ऐसी चिंगारी थी जो कांग्रेस के इन्क़लाबी तूफ़ान से अंगारा बन रही थी। (तारीख गोल मेज कॉफ्रेंस पृष्ठ 48)

ह़ज़रत शेखुल हिन्द ने मालटा से वापसी के बाद जमीअत उलमा–ए–हिन्द के पलेटफार्म से जुड गये जिसे आप के शागिर्दों ने क़ायम किया था। ह़ज़रत शेखुल हिन्द जमीअत उलमा–ए–हिन्द के

अध्यक्ष दारुल उ़लूम देवबन्द की आत्मा और कांग्रेस के वास्तविक मार्गदर्शक की हैसियत से दिलों में आज़ादी की शमा रोशन करके 30 नवम्बर 1920 ई॰ को स्वर्ग सिधार गये।

1920 ई॰ के बाद जंग आज़ादी का दूसरा दौर आरम्भ हुआ, जिस की कमान शेख़ुल इसलाम मौलाना हुसैन अह़मद मदनी संभालते हैं। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और डाक्टर मुख़्तार अह़मद अंसारी के राजनितिक मार्गदर्शन में आप ने अपने उस्ताद ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द की जलाई हुई शमा को बुझने नहीं दिया और तेज़ तूफ़ानी आंधियों में शत्रुओं से इस शमा की रक्षा की। 1930 ई॰ की आज़ादी की जंग में मुसलमानों ने जान की बाज़ी लगादी, जिसमें 14 हज़ार मुसलमानों ने जेल के कष्ट सहे, और अंतिम जंग 1942 ई॰ में मुसलमानों ने भाग लिया। अंततः 1947 ई॰ में शाह वलीउल्लाह के युग से चली आ रही आज़ादी की यह तहरीक दारुल उ़लूम के उलेमा के लगातार प्रयत्नों और कुर्बानियों की बदौलत सफल हुई और पूरे देश में आज़ादी का सूरज रौशन हुआ।

(7)

दारुल उ़लूम प्रसिद्ध व्यक्तियों की नज़र में

दारुल उ़लूम दुनिया के प्रसिद्ध व्यक्तियों की नज़र में

दारुल उ़लूम देवबन्द ने अपने सुदृढ़ मसलक में ह़दीस, तफ़सीर, फ़िक़ह, उसूल फ़िक़ह, कलाम, तसव्वुफ़ और मारिफ़त और दूसरे दीनी उ़लूम को विभिन्न प्रकार के फूलों का एक ह़सीन गुलदस्ता बना कर सुन्दरतम अंदाज़ में पेश किया है जिस से तमाम मसलकी वर्गों के लिये एक केन्द्र पर इकट्ठा होने की सूरत पैदा हो गई। यही कारण है कि दारुल उ़लूम देवबन्द की तालीमी, तरबियती और तहज़ीबी सेवा की स्वीकृति मशाहीर (प्रसिद्ध व्यक्ति) उलमा और विभिन्न राष्ट्रों के उच्च पदीय लोग और इसलामी दुनिया के सम्मनित बुद्धिजीवी, विचारकों ने खुल कर की है। और देवबन्द के निरंतर इल्मी व दीनी प्रभाव और कार्यों को सराहा है। ग़ैर मुस्लिम विद्वानों के लेखों में भी देवबन्द के इल्मी व मज़हबी उपयोगिता स्थान–स्थान पर मिलती है।

यहां नीचे हम इस प्रकार के कुछ मिसालें और प्रभाव नक़ल कर रहे हैं, जो देवबन्द की महानता के प्रमाण और उसकी बरकतों की सच्चाई पर दर्शाते हैं।

इन महान लोगों ने दारुल उ़लूम आ कर दारुल उ़लूम के मुआ़इना रजिसटर में अपने प्रभाव लिखे हैं। यह संकलन अनेक रूप से आ चुके हैं। तारीख दारुल उ़लूम और आदि किताबों में यह प्रभाव छप भी चुके हैं। साथ ही सालाना रूदादों में भी यह प्रभाव छपते रहे हैं।

मुह़म्मद ज़ाहिर शाह दुर्रानी (पूर्व अफ़ग़ानिस्तान पादशाह)

"मैं बहुत खुश हूँ कि आज मुझे दारुल उ़लूम देखने का अवसर प्रप्त हुआ। यह दारुल उ़लूम, अफ़ग़ानिस्तान में विशेष रूप से वहां के मज़हबी क्षेत्रों में बहुत प्रसिद्ध है। अफ़ग़ानिस्तान के उलमा दारुल उ़लूम के संस्थापकों और यहां के अध्यापकों को सदैव सम्मान की दृष्टि से देखते

आये हैं।"

सरदार नजीबुल्लाह खां (राजदूत अफ़ग़ानिस्तान) नई दिल्ली 1950

दारुल उ़लूम देवबन्द अफ़ग़ानिस्तान की नज़र में एक अवामी, इल्मी, और इस्लामी शिक्षा संस्था है। मगर मैं अपने अनुमान के आधार पर कह सकता हूं कि यह केवल एक शिक्षा संस्था ही नहीं बल्कि इस्लामी कल्चर का केन्द्र भी है। दारुल उ़लूम ने उस ज़माने में जब कि हिन्दुस्तान से इस्लामी हुकूमत समाप्त हो चुकी थी, दीन और दीनी उ़लूम की हिफ़ाज़त की। मुझे विश्वास है कि दारुल उ़लूम भविष्य में भी इसी प्रकार ज्ञान और शिक्षा की सेवा करता रहेगा। अफ़गानिस्तान की जनता, उलमा और इल्म दोस्त व्यक्ति इस के क़द्रदान (प्रशंसक) ही नहीं बल्कि शुभ चिंतक और मददगार भी हैं। दारुल उ़लूम इस्लामी कल्चर की एक बड़ी संस्था है। और अपनी मिसाल आप है। इस्लामी कल्चर की नीव, सच्चाई, मुहब्बत, समानता, भाई चारा और सत्यता को पहचानने पर आधारित है, यह संस्था इन तमाम गुणों से भरपूर है। दारुल उ़लूम की तारीख़ इस बात की गवाह है कि इस ने सदैव सच्चे मुजाहिद और सच बोलने वाले व्यक्ति पैदा किये हैं जिन पर दारुल उ़लूम पूर्ण रूप से गर्व करता है। दारुल उ़लूम अकेला हिन्दुस्तान की विरासत नहीं है बल्कि पूरी इस्लामिक दुनिया की धरोहर है।"

अनवर अल–सादात (पूर्व अध्यक्ष जमहूरिया मिस्र)

इस महान और तारीख़ी दर्सगाह की ज़ियारत (दर्शन) ने मुझे विवश किया कि मैं ठंडे दिल से अपने उन भाइयों की सेवा में मुबारकबाद पेश करूं जो इस को चला रहे हैं। मैं अल्लाह से दुआ करता हूं कि वह इस इदारह को ज्ञान का मीनारा बनाये और सदैव–सदैव मुसलमानों को इस से लाभान्वित होने का अवसर प्रदान करे।

सय्यद रशीद रज़ा मिस्री (एडिटर अलमिनार मिस्र)

जो महान और अमूल्य शिक्षा और दीन की सेवा आप कर रहे हैं, उनके लिये आप मेरे और तमाम मुसलमानों के धन्यवाद के पात्र हैं। मुझे इस दारुल उ़लूम को देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं आप लोगों को यक़ीन दिलाता हूँ कि अगर मैं दारुल उ़लूम को न देखता तो मैं हिन्दुस्तान से दुखी वापस जाता।

एम. आई. शाह केवन

(अध्यक्ष चीनी मिशन जामिया अज़हर मिस्र 12–10–1938)

मैं ने हिन्दुस्तान के बहुत से शहरों की यात्रायें की लेकिन मैं ने दारुल उ़लूम से बड़ा मदरसा इस मुल्क में नहीं देखा।

ईसा सिराजुद्दीन–(मिश्र देश के सफ़ीर 2 फ़रवरी 1969)

मैं बड़ा सौभाग्यशाली हूं कि मुझे इस संस्था को देखने का अवसर मिला जो ऐसे शान्दार उद्देश्य के लिये बनाई गयी है जिस से इंसानियत को वास्तविक शान्ति मिलती है। इस संस्था के द्वारा इस के विद्वानों ने पूरी दुनिया में इस्लाम का वह पैग़ाम फैला दिया है जो संसार में शान्ति और एकता की नीव है, और इस कर्तव्य को पूरा करने के लिये अपना जीवन दान किये हुए हैं। मैं इन सब के लिये और कर्मचारियों के लिये शुभकामना और अल्लाह की ओर से भलाई की दुआ़ करता हूं।

अब्दुल ह़लीम मह़मूद (प्रधानाआचाय अल–अज़हर 26 अप्रैल 1975)

मैं ने दारुल उ़लूम देवबन्द के दार्शन किये और यहां कुछ समय व्यतीत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं ने विद्यार्थियों को देखा कि वे मेह़नत और प्रयत्न के साथ शिक्षा प्राप्त करने में लगे हुए हैं। दूसरी तरफ़ अध्यापकों के बारे में भी अन्दाज़ह हुआ कि पवित्र ह्रदय के साथ शिक्षा के लाभ के लिये प्रयत्न के साथ कमर कसे बैठे हैं। दारुल उ़लूम में जो प्रबन्ध चल रहा है उस के आधीन विद्यर्थी आसानी के साथ शिक्षा प्राप्त करते रहते हैं।

मैं यह माने बग़ैर नहीं रह सकता कि दारुल उ़लूम के मोहतमिम साह़ब के ज़ोहद व तक़्वा व लिल्लाहियत ही के यह आसार हैं जो इस संस्था में दिखाई देते हैं और इसी का नतीजह है कि दारुल उ़लूम के फ़ाज़िल तमाम शहरों और मुल्कों में जाकर इस्लामी शिक्षा का प्रसार कर रहे हैं। हम सब की यह दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला दारुल उ़लूम के ज़िम्मेदारों और अध्यापकों और विद्यार्थियों और शुभ चिंतकों को अधिक सवाब प्रदान करे।

मुह़म्मद अल–फ़हाम (प्रधानाआचाय – शेख़ुल अज़हर)

मुद्दत से दारुल उ़लूम के सम्बंध में सुन रखा था और मैं यह भी

जानता था कि इस के अध्यापक अ़रबी भाषा को भारत में चारों ओर पूरे प्रयत्न के साथ फैला रहे हैं तो यह बातें मेरे लिये बड़ी ख़ुशी का कारण बनती थीं। एक ज़माने से इस के दर्शन का और उलमा–ए–देवबन्द से मिलने का इच्छुक था। जब मैं ने सुना कि वहां के विद्यार्थी अ़रबी में बड़ी मेहनत से लगे हुए हैं यहां तक कि उन के अध्यापक लेख और पुस्तकें भी अ़रबी में लिखते हैं तो मेरी इच्छा और बढ़ गयी यहां तक कि दिन रात बढ़ती गयी, और अल्लाह से दुआ़ की के मेरी मौत उस वक़्त तक न हो जब तक मैं दारुल उ़लूम न देख लूं और इस के विद्वानों और विद्यार्थियों से न मिल लूं।

अल्लाह का शुक्र है कि मेरी तमन्ना पूरी हुई और मैं ने अपनी मुराद पाली और और इसकी ज़ियारत एक दिन नसीब हुई जिस को ता क़यामत भी नहीं भूल सकता और वह दिन 26 अप्रैल यक शम्बः 1975 ई. का दिन था। मैं ने अपनी आंख से जो कुछ देखा वह कानों के सुने हुए से बहुत अधिक था। एक ओर विद्यार्थी अपने सबक़ में तल्लीन तो दूसरी तरफ़ अध्यापक अपनी ज़िम्मेदारी में डूबे हुए और अ़रबी भाषा जो कि क़ुरआन और ह़दीस की भाषा है उस को अपना सरमाया समझते हैं। इस के महान कुतुबख़ाने को भी देखने का अवसर मिला तो देखा लुग़ात (शब्द कोश) और तारीख़ की असंख्य पुस्तकें पाई।

दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला दारुल उ़लूम देवबन्द और इस के उलमा को हर प्रकार की उन्नति से नवाज़े। इक़रार करना पड़ता है कि यह संस्था इस्लाम के क़िलों में से एक सुरक्षित क़िला है। अल्लाह तआ़ला इन लोगों की पूरी सहायता फ़रमाये जो इस में लगे हुए हैं, और वह दीन इस्लाम की ख़ूब–ख़ूब ख़िदमत करें।

शेख़ अब्दुल फ़त्ताह़ अबू ग़ुद्दह (19 अगस्त 1962)

वह चीज़ जिसके लिये मैं अल्लाह तआला का शुक्र अदा करता हूं कि मुझे दारुल उ़लूम देवबन्द देखने का अवसर मिला जो वास्तविक रूप से अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिये दीन का घना सायेदार वृक्ष, इल्म व तक़वा का केन्द्र और इस्लाम की रक्षा का ज़ामिन है। बहुत दिनों इस शैक्षिक केन्द्र को देखदे की तमन्ना थी अल्लाह तआला का शुक्र है कि आज पूरी हुई। गुणों से मालामाल इस महान संस्था के उलमा की सेवा का वर्णन करते हुए एक प्रार्थना करना चाहता हूँ कि इन विद्वानों का

कर्तव्य है कि अपने ज्ञान के नतीजों और इल्मी उपयोगिता व तह़क़ीक़ात को अ़रबी भाषा में अनुवाद करके इस्लाम के दूसरे उलमा के लाभ के लिये तैयार करें।

शेख़ मुह़म्मद अल ह़कीम– (मुफ़ती हल्ब शाम 24 नवम्बर 1974 ई)

आज मुझे दूसरी बार दारुल उ़लूम को देखने का अवसर मिला। मैं ने पहली उपस्थिति से अब तक दो साल की मुद्दत में होने वाली इस संस्था की उन्नति को देख कर बड़ी ख़ुशी हुई कि इस के अध्यापकों का प्रयत्न बड़ा सराहनीय है और इस के विद्यार्थियों की उन्नति प्रशंसनीय है। अल्लह से दुआ़ है कि वह हम सबको इस्लाम और तमाम मुसलमानों विशेष रूप से हिन्दुस्तान के क़ाबिल उलमा ह़ज़रात की सेवा करने का अवसर प्रदान हो जिन्हों ने इस्लामी सभ्यता और संस्कृति और आत्मिक ज्ञान के विकास के लिये अपने को वक़्फ़ कर दिया है।

जे,पी,एस, ओबराय

(प्रोफ़ेसर समाज शास्त्र दिल्ली विश्वविद्यालय 23–2–1973)

मैं ने अफ़ग़ानिस्तान में समाज शास्त्र पर जो रिसर्च (शोध) किया उससे मुझे ज्ञात हुआ कि दारुल उ़लूम का प्रभाव मध्य एशिया में कहां तक फैला हुआ है।

गोपी वन्ट (प्रोफ़ेसर इतिहास आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी 27 मार्च 1939)

मेरा बड़ा सौभाग्य है कि मैं देवबन्द आया और यहां आकर देखा कि क़दीम (पुराना) इस्लामी कल्चर अब भी पूरी शक्ति के साथ हरा–भरा है किसी इतिहासकार के लिये इससे अधिक जानकारी देने वाले अवसर बहुत कम मिलते हैं,

अब्दुल वहाब नजार, मुह़म्मद अह़मद अल अदवी (अ़रब वफ्द)

दारुल उ़लूम के दर्शन का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ और विभिन्न जमातों का निरीक्षण किया, उनका पढ़ना देखा। उस्ताद मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी और दूसरे अध्यापक साहिबान के साथ बैठने का सौभाग्य मिला। इन ह़ज़रात के चेहरों पर नूर देखा। हम ने यहां वह जमातें देखी जिस न, तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़ह, उसूले फ़िक़ह आदि उ़लूम दीनीया की ख़िदमत के लिये अपने जीवन को वक़्फ़ कर दिया है। इस

के साथ ही साथ, लुग़ात, मंतिक, फ़लसफ़ा, हैअत की इतनी बढ़ोतरी कर दी है कि हमको यक़ीन है कि तमाम इस्लामी उम्मत को इस से लाभ पहुंचेगा। इस संस्था के अध्यापकों के साथ हमारी बातचीत हुई तो हमने देखा कि इल्मी सेवा (अध्यपन) में उन को पूरी महारत है। हमने विद्यार्थियों का ध्यान अपने पाठ (सबक़) अपने दीन, और चरित्र की ओर इतना देखा कि हमारी ज़ुबान ने अल्लाह का शुक्र अदा किया, और दुआ़ कि आंतरिक और बाहरी नेमतें हम पर उतरती रहें, हम अपने और उन के लिये कुबूलयत की दुआ करते हैं कि हमारे कार्यों में इख़्लास (सदभाव) हो।

ड़ाक्टर जोलीनस जरीमस अब्दुल करीम

(प्रोफ़ेसर दीनीयात बुडापेस्ट यूनिवर्सिटी हंगरी 10 नवम्बर 1931)

मैं ने दारुल उ़लूम देवबन्द की प्रसिद्धि अपने देश हंगरी के बुडापेस्ट में सुनी थी और सदैव इसकी इच्छा रहा करती थी कि इल्म और सही इस्लामी रूह़ के इस किले (दुर्ग) के दर्शन करूं। अन्ततः मेरी तमन्ना पूरी हुई। अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से इस महान संस्था को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तुर्की और मिश्र की पुराने ढंग की संस्थाओं के मुक़ाबले में इस दारुल उ़लूम की चार दिवारी में अ़रबी और इस्लामी उ़लूम की ताक़त और गहराई को देख कर मैं आश्चर्यचकित रह गया। इस संस्था के प्रिंसिपिल, अध्यपक और विद्यार्थियों ने मुझ जैसे नाचीज़ के साथ जिस मुह़ब्बत और सदभाव के साथ मुआमला किया उससे मैं बहुत प्रभावित हूं।

अब्दुल्लतीफ़ वज़ीर इंसाफ़ व सेह़त (न्याय व स्वास्थ्य) हुकूमत बर्मा

मुझे दारुल उ़लूम देखने का सौभाग्य मिला। मैं इस संस्था और इस के काम से जो इस इदारे में उलमा कर रहे हैं बहुत अधिक प्रभावित हुआ। यह एक ऐसी संस्था है जिसमें न केवल एक वर्ग के लिये बल्कि पूरे देश के लिये लीडर पैदा किये हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि यह इदारा ऐसे योग्य व्यक्ति पैदा करता रहे गा जो क़ौम और देश की अमूल्य सेवा करके हिन्दुस्तान को एक बहुत बड़ा देश बना देंगे।

अ़ली असग़र हिकमत (राजदूत इरान भारत)

अल्लाह का शुक्र है कि उसने इस कमज़ोर व्यक्ति को इस महान

संस्था को देखने का अवसर दिया और यहां अध्यापकों और विद्वानों के सम्पर्क का सौभाग्य मिला, इनके पवित्र वाक्यों से दिल व जान को ख़ुशी मिली। इनकी बाक़ी रहने वाली रचानाओं और संकलनों से प्रसन्नता मिली।

नियाज़ बरकीज़– (तुर्की 9 मार्च 1959)

मैं इस महान इदारे की शोहरत (ख्याति) सुना करता था और अब मुझे इस को देखने का मौक़ा (अवसर) मिला है, मैं दारुल उ़लूम के कार्यकर्ताओं का बड़ा आभारी हूं कि उन्हों ने मुझे इस प्रकार की सुविधा प्रदान की और इस प्रकार अतिथि सत्कार किया। पुस्तकालय और उसकी अमूल्य हस्त–लिखित पुस्तकों की संख्या ने मुझे विशेष प्रभावित किया। मैं ने यहां इतनी सदभावना देखी कि उस के धन्यवाद के लिये मेरे पास शब्द नहीं। मैं इस अच्छे काम पर यहां के कार्यकर्ताओं और अध्यापकों को मुबारक बाद पेश करता हूं और दुआ़ करता हूं कि भविष्य में इसी प्रकार सफ़लता मिले।

शेख़ सअ़द शेख़ हुसैन – (ह़िजाज़, अरब)

यह दारुल उ़लूम इस्लामी दुनिया में एक बेमिसाल जामिआ़ है, हमारे वहम व गुमान में भी नहीं था कि भारत में ऐसी बड़ी दीनी संस्था और ऐसी इस्लामी व अख़लाक़ी तरबियतगाह मौजूद होगी।

सालूजी (जुनूबी अफ़्रीक़ा 5 सितम्बर 1959)

मैं ने इस संस्था का निरीक्षण किया और यह देखकर बहुत ख़ुशी हुई कि नियमानुसार कक्षाओं में शिक्षा का उचित प्रबन्ध है। यहां है जो दुनिया के प्रत्येक भाग से छात्र आते हैं। दारुल उ़लूम उन लोगों के लिये शिक्षा का मुफ़्त प्रबन्ध करता है जो अपने ख़र्च स्वयं नहीं उठा सकते। ऐसे लोगों को कमरा, खाना, कपड़ा, किताबें और कपड़े धोने का साबुन मुफ़्त दिया जाता है। उलमा अपने फ़राइज़ में तन मन से लगे रहते हैं। इसी कारण यह संस्था बहुत आसानी से चल रही है। मेरी जानकारी में यह अकेली संस्था है जो इस्लाम की मुकम्मल शिक्षा देती है, और ऐसे विद्वान तैयार करती है जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का ठीक सच्चा नमूना हो। मैं दुआ करता हूं कि अल्लाह तआ़ला इस मदरसे, यहां के तमाम उलमा और विद्यार्थियों के

शुभचिंतकों पर अपनी रह़मतों की बारिश करे। अल्लाह करे यह मदरसा क़यामत तक इसी जोश के साथ जारी रहे।

डाक्टर पी हारडी (लेक्चरार, यूनिवर्सिटी आफ़ लन्दन इंगलैंड 21 दिसम्बर 1960)

मैं हिन्दुस्तान में यह आशा लेकर आया था कि यहां मुझे दारुल उ़लूम के सम्बन्ध में अमूल्य सामग्री मिल जायेगी, अतः यहां आने के बाद मैं ने दारुल उ़लूम देवबन्द आने का इरादा किया कि मैं यहां अपना उद्देश्य पूरा कर सकूं। यहां आने के बाद न यही कि मेरी आशायें पूरी हुई बल्कि यहां के शिष्टाचार और मेहमान नवाज़ी ने मुझे बहुत अधिक प्रभावित किया। यहां के विद्वानों ने मेरा मार्गदर्शन किया। मैं न केवन अपने छोटे से प्रोग्राम के दौरान की बेहतरीन यादें अपने साथ ले जाऊँगा बल्कि इस बात का प्रयत्न करूंगा कि मुझे एक बार फिर आने की इजाज़त दी जाये।

जे. डी. एण्डरसन (डारेक्टर इंस्टिटयूट आफ़ एडवांस लीगल स्टडीज़ एण्ड हैड डिपार्टमेंट आफ लॉ स्कूल आफ़ औरेंटल एण्ड अफ़्रीक़न स्टडीज़ यूनिवर्सिटी आफ लंदन इंग्लैंड)

मैं दारुल उ़लूम को जिस के बारे में मैं ने बहुत कुछ पढ़ा था, देख कर असीम प्रसन्नत हुई। मुझे इस बारे में बिलकुल अनुमान नहीं था कि इतना बड़ा होगा, जितना मैं ने इसे पाया। मैं यहां के आवभगत से असीम प्रभावित हुआ और तमाम ह़ज़रात का बडा आभारी हूं। विशेष रूप से इस्लामी क़ानून के निकात पर विभिन्न विद्वानों से बात चीत करने का अवसर मिला, इस से मैं बहुत खुश हूं।

मुह़म्मद यूसूफ़ फरांस

(15 लिवरपुर स्ट्रीट आफ़ स्पेन ट्रान्डाड वैस्ट इण्डेटर वाये साउथ अमेरिका 10 जनवरी 1961)

दारुल उ़लूम में आकर और इसको देखकर मुझे अनुमान हुआ कि यह हिन्दुस्तान में बहुत अधिक आकर्शक इस्लामी संस्था है। मैं इस संस्था को देखकर बेहद ख़ुश हुआ जो इस्लाम की इतनी अधिक सेवा कर चुकी है। इस संस्था में जिसे लगभग शताब्दी पूर्व स्थापित किया

गया था बहुत अच्छी और बड़ी लाइब्रेरी है जिस में अमूल्य इस्लामी सामग्री मौजूद है, सब से आश्चर्य की बात यह है कि यह संस्था हुकूमत के सहयोग के बग़ैर कोई आर्थिक सहायता न लेकर इतने समय से निहायत सफलता के साथ अपना काम कर रहा है। मुझे उम्मीद है और मैं अल्लाह से दुआ़ करता हूं कि इस संस्था पर अल्लाह का एह़सान व कृपा की बारिश होती रहे, और यह सदैव इस मुल्क के मुसलमानों को ठीक इस्लामी शिक्षा देने का सफल प्रयास करती रहे।

अब्दुस्सत्तार अमीन

(सफ़ारत खाना संयुक्त अ़रब अमीरात 24 जमदिउस्सानी 1383)

हमें इस बात का एहसास हुआ बल्कि पता चला कि यह महान संस्था उन विशेष केन्द्रों में से है जिन्हों ने इस अज़ीम (महान) देश और दूसरे देशों में केवल दीन के प्रचार और प्रसार को अपना उद्देश्य बनाया है। मैं मदरसे के ज़िम्मेदारों का उनकी हिम्मत पर दाद देता हूँ और शिक्षा आम करने पर और ज़मीन पर इस्लाम के सुतूनों को स्थिरता देने पर ये ह़ज़रात जो प्रयत्न कर रहे हैं उस पर धन्यवाद देता हूँ।

अमर अबू रेशः (शाम के सफ़ीर 31 अगसत 1968)

मैं ने अ़रब मुत्ताहिदा जुमहूरिया के सफ़ीर जानाब ईसा सिराजुद्दीन के साथ पुस्तकालय का निरीक्षण किया, मेरे दिल में उस वक़्त पुस्तकालय ने गहरा प्रभाव छोड़ा है जब देखा कि ह़ज़रात उलमा ने पुराने समय में हस्तलिखित पुस्तकों को इकट्ठा करने में जो अथाह प्रयत्न किया है हमारे दिल में उस की बड़ी क़दर (सम्मान) है और हम इसे एक बड़ा धन समझते हैं। यह तमाम दुनिया के शिक्षा प्रेमियों के लिये सदैव बहने वा स्रोत है।

अनस यूसुफ़ यासीन (सऊदी अ़रब के सफ़ीर 2 फ़रवरी 1969)

अल्ला का शुक्र है कि मुझे इस महान केन्द्र को देखने का मौक़ा मिला जिस में अल्लाह का नाम लिया जाता है, और अल्लाह की किताब की शिक्षा दी जाती है। मैं अल्लाह से दुआ़ करता हूं कि वह इस केन्द्र को एसे लोग पैदा करने का अवसर दे जो इस्लामी आन्दोलन का नेतृत्व और दुनिया भर के मुसलमानों की इ़ज़्ज़त और सम्मान बढ़ाने का कार्य

करें।

जंरल सिक्रेटरी राबता आलमे इस्लामी मक्का मुकर्रमा, नाज़िम दफतर वज़ारात ह़ज व औक़ाफ़ 31 अगस्त 1983

यह हमारा सौभाग्य है कि आज हम को महान संस्था देखने का सुअवसर मिल रहा है। यह इल्म व मारफ़त का मिनारा और स्रोत समझा जाता है, और उपदेश और मअ़रफ़त का केन्द्र समझा जाता है, जिस ने उपमहाद्वीप में उलमा और मुहद्दिस्सीन की एक बहुत बड़ी जमात तैयार की जिस के द्वारा अल्लाह तआ़ला ने भ्रम व बिदअ़त को बिल्कुल समाप्त करादिया, और अपने दीन की हि़फ़ाज़त का काम लिया।

आज इस संस्था की चार दीवारी में हमें बहुत सी चीज़ों को देखने का सौभाग्य मिला। विशेष रूप से असंख्य किताबों से भरी हुई लाइब्रेरी, और सम्मानित अध्यापकों से मुलाक़ात, जिस ने दारुल उ़लूम की इज़्ज़त व उद्देश्यों के समझने में भरपूर जानकारी मिली। हमारे दिल प्रसन्नता और खुशी के मिले जुले जज़बात (भावनाओं) से भरपूर हैं। हम इन तमाम ह़ज़रात के हार्दिक रूप से शुक्रगुज़ार हैं जिन्हों ने हमारे लिये अपनी बेमिसाल मेहमान नवाज़ी और हार्दिक स्वागत का प्रदर्शन किया और जिस के परिणाम स्वरूप हम इस महान संस्था को देखने का अवसर प्राप्त कर सके।

विलियम आर.राफ (प्रोफ़ेसर इतिहास, कोलम्बिया यूनीवर्सिटी न्यूयार्क 24 फ़रवरी 1973)

दक्षिण पूर्व एशिया के विद्यार्थी की हैसियत से मुझे दारुल उ़लूम देवबन्द में चौबीस घन्टे व्यतीत करने पर असीम प्रसन्नता हुई क्योंकि मेरे और मेरे साथियों के साथ बहुत मेहरबानी का सुलूक किया गया। मैं दारुल उ़लूम की बहुत सी वस्तुओं से बहुत प्रभावित हुआ। इसका बढ़िया पुस्तकालय, इसका सुन्दर भवन, संसार के हर कोने से आने वाले विद्यार्थी और प्रत्येक दशा में इस संस्था को चलाने का इरादा रखने वाले स्थापकों के नियुक्ति किये गये इल्म के उसूल। मैं यहां से निःस्वार्थ सेवा, डिससिपलिन की सख़्ती से पाबन्धी और मुसलमानों और ग़ैर–मुस्लिमों के साथ सहृदयता की भावनाओं की एक ऐसी यादगार ले

जारहा हूं जो सदैव मेरे दिल पर नक़्श रहेगी।

डाक्टर मुह़म्मद इसह़ाक़, एम.ए.पी.एचडी (प्रोफ़ेसर और चियरमैन शोबा अ़रबी व इस्लामिक स्टडीज़ यूनिवर्सिटी आफ़ ढाका 21 जनवरी 1974)

दारुल उ़लूम देवबन्द इस्लामी आकाश का चमकता हुआ सितारा है। अल्लाह का शुक्र है कि दारुल उ़लूम एक शताब्दी से अधिक इस्लाम का प्रचार और इस्लामी ज्ञान की सुरक्षा कर रहा है। यही नहीं बल्कि इस्लाम के प्रत्येक कोने में आ़लिम (विद्वान) पैदा कर रहा है। जो हमारे नबी की सुन्नत पर कठोरता से पाबन्द हैं, जिस का कोई अन्दाज़ा नहीं किया जा सकता। मुझे इस बात का फ़ख़र है कि मैं दारुल उ़लूम की रूहानी और तालीमी बिरादरी के साथ रहा हूं और जमातों, दफ़तरों, लाइब्रेरी और उस के पवित्र अहाते से लाभ उठाया है। इस के पूरे वातावरण पर रूह़ानियत और इल्मियत का दौर दौरह है। मेरे साथ बड़ी इज़्ज़त का मामला किया गया है, जिस का प्रभाव सदैव मेरे मस्तिष्क पर ताज़ा रहेगा, और मेरे जीवन का मार्गदर्शन करता रहेगा।

सोइस वान–डब्लू – मग़रबी जर्मनी 27 मार्च 1974

अफ़सोस कि मैं दो दिन से भी कम ठहर सका, लेकिन यहां बहुत कम ठहरने के समय मुझे बहुत अधिक तजरबा प्राप्त हुआ। मैं ने दारुल उलूम देवबन्द के सम्बन्ध में काफ़ी सीखा और पढ़ा। मौलाना क़ासिम नानौतवी के सम्बंध में एक खास दिलचस्पी पैदा हुई जो कुछ मैं ने देखा और अनुभव किया, उलमा के वास्तविक स्वागत और हमदर्दाना संगति और उलमा की सादगी और साफ़ दिली ने मुझे बहुत प्रभावित किया। यहां की बहुत अच्छी लाब्रेरी ने मुझे बहुत अधिक प्रभावित किया, और मैं उम्मीद करता हूं कि भविष्य के काम में इस लाब्रेरी को अधिक प्रयोग कर सकूंगा। लाइब्रेरी में एक घंटा में मैं ने चार किताबें निकालीं जो मेरे मौजूदह काम में बहुत उपयोगता रखती हैं, मैं ने हिन्दुस्तान से बाहर और अन्दर बहुत सी लाइब्रेरियों में किताबें देखी हैं।

दिल की गहराइयों से में इस संस्था का बहुत अधिक शुक्रिया अदा करता हूं कि इस के अध्यापकों ने मेरा स्वागत किया। यह संस्था इस्लामिक दीनयात और धार्मिक साइंस में बड़ा काम कर रही है। खुदा

की बड़ीकृपा इस संस्था पर है।

डाक्टर मुह़म्मद यूजल तुर्की

(सिविल इंजीनियर इस्तम्बोल 5 शाबान 1394/23 अगस्त 1974)

हमने दारुल उ़लूम देवबन्द के दर्शन किये और हम को बेहद खुशी हुई कि इसको अपने तसव्वुर से ऊंचा पाया, अल्लाह तआ़ला से हमारी दुआ है कि वह दारुल उ़लूम के लिये शिक्षा प्रदान करने की सआ़दत (सौभाग्य) प्रचलित रखे, और दारुल उ़लूम इसी प्रकार अपनी सफल ज़िन्दगी गुज़ारता रहे। अल्लाह तआ़ला से हमारी यह भी दुआ़ है कि वह हमें अहले सुन्नत वल–जमात के अक़ीदे से सदैव जोड़े रखे और गुमराह (पथ भृष्ट) गरोहों के शर (बुराई) से सुरक्षित रखे। दुनिया में मज़ीद इस जैसे मदरसों कों स्थापित करें, और सारी सृष्टि के लिये इस के लाभ को सामान्य कर दें, जिस से आशा है कि इन्शाअल्लाह समस्त संसार पर इस्लाम को सुनहरा अवसर फिर प्राप्त होगा।

ह़ाजी अब्दुल ख़ालिक़

(भारत में मलेशिया के सफीर 29 मार्च 1975)

इस संस्था यानी जामिआ़ दारुल उ़लूम ने इस्लाम की बहुत सेवा की है। इस लिये मुझे ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद तय्यब साह़ब और संस्था के दूसरे प्रोफ़ेसर ह़ज़रात से अपनी मुलाक़ात पर फ़ख़ है। मैं संस्था का आभारी हूं कि यहां मलेशिया के विद्यार्थी को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया जाता है।

अ़ली उ़बैद मुह़म्मद ग़ज़ाली (संयुक्त अ़रब अमारात 1975)

मैं ने दारुल उ़लूम की ज़ियारत (दर्शन) की और इसकी शैक्षिक सरगरमियां मालूम करने का अवसर सौभाग्य प्राप्त हुआ, विशेष रूप से, ह़दीस, तफ़सीर के सम्बन्ध में इसकी सेवायें प्रशंसनीय हैं। बड़ी प्रसन्नता हुई जब इन ह़ज़रात के प्रवचन अ़रबी ज़ुबान में सुनने का अवसर मिला। दुआ़ है अल्लाह तआ़ला इस संस्था को अधिक समय तक क़ायम रखे, और इस के संस्थापकों को मग़फ़िरत से नवाज़े, और इसी प्रकार जो इस की ख़िदमत में लगे हुए हैं, और मुसलमानों को इस बात की तौफ़ीक़ दे कि इस अ़वामी इदारे की ख़ूब–ख़ूब मदद करें।

यूसुफ़ अस्सय्यद हाशिम रफ़ाई (पूर्व मंत्री कुवैत, 7 नवम्बर 1975)

अल्लाह तआ़ला ने मुझे और मेरे साथ अध्यापक अब्दुर्रह़मान को – जो कि अ़रबी दीनी पर्चे 'अल–बलाग़' के संम्पादक हैं जो कुवैत से निकलता है – इस इस्लामी बड़े दुर्ग के दर्शन का सौभाग्य मिला जिसे हम दारुल उ़लूम देवबन्द अज़हरुल हिन्द (हिन्दुस्तान का जामिआ़ अज़हर) से याद करते हैं।

यह दर्शन बरोज़ जुमा (शुक्रवार) 11 नवम्बर 1975 ई. को उस समय हुआ जब कि हम सब नदवतुल उ़लमा लखनऊ के त़ालीमी जश्न (समारोह) के सम्बंध में इस्लामी वफ़द की सूरत में ह़ाज़िर हुए थे। अल्लाह इस संस्था को ह़नफ़ी मसलक की सेवा और इस्लामी दावत की ख़ूब–ख़ूब तौफ़ीक़ दे।

अबुल मअ़ज़ (क़त़र 11 नवम्बर 1976)

मिश्र और अ़रब में इस संस्था का खूब चर्चा है और सब ही इसका वर्णन करते हैं और अज़हरे हिन्द से याद करते हैं और यह समझते हैं। यह संस्था अपनी ज़िन्दगी और सरगर्मि को इस्लाम की सेवा के लिये विशेष किये हुए है और इस्लाम का झण्डा इस के कारण ऊँचा है, और पूरे आलम में इस का प्रकाश पहुंच रहा है। जितना सुना था उस से कहीं अधिक पाया और इसी तरह यहां के उलमा की लगातार लगन और अपने विद्यार्थियों के साथ हमदर्दी अल्लाह और उस के रसूल और दीन के लिये नेक जज़बा मेरे लिये ख़ुशी का कारण है। और मेह़मानों के साथ इन का अख़लाक़, बोलने का ढंग और संजीदगी, ये चीज़े और भी हुस्न को दो गुना करने वाली हैं।

अल्लाह तआ़ला से प्रार्थना है कि जिस तरह इस संस्था ने इस क्षेत्र में कुरआन और ह़दीस का ज्ञान फैलाया इसी प्रकार इस को अपने उद्देश्य में सफलता दे और इसका हर अगला दिन पिछले दिन से अच्छा सिद्ध हो जिस प्रकार आज का दिन कल पिछले से अच्छा है। और इस के विद्यार्थी जो इसकी पैदावार हैं उन को दीन इसलाम का सही वारिस बनाये। और मैं अपने उन भाइयों की ओर से जो क़त़र में रहते हैं उन की तमन्नायें पेश करता हूं।

अश्शेख़ नूरी, अश्शेख़ मंसूरुल असअ़दी आदि

(वफ़्द राबता उलमा–ए–इराक़ बग़दाद 16 नवम्बर 1974)

आज इस मरकज़ी दरसगाह (केन्द्रीय शिक्षा घर) दारुल उ़लूम देवबन्द को देख कर बड़ी ख़ुशी हुई, जो अपने सच्चे ज़िम्मेदारों और कार्यकर्ताओं के साथ दीन की सेवा में लगा हुआ है। देवबन्द की इस इस्लामी यूनिवर्सिटी में उपस्थिति वास्तव में हमारा सौभाग्य है। एक रक़म (धन) जो इस महान संस्था की शान की तो नहीं फिर भी इस्लामी भाई चारह व मुहब्बत और इस के साथ हमारे सच्चे सम्बंध का आइनादार ज़रूर है, इसकी सेवा में सम्मिलित होने की सआ़दत (सौभाग्य) प्राप्त कर रहे हैं। अल्लाह हमारे यह उलमा को जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाये और हम सब को नेक काम करने की तौफ़ीक़ बख़्शे।

दारुल उ़लूम भारत के प्रसिद्ध व्यक्तियों की नज़र में

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

हिन्दुस्तान के इस्लामी शिक्षा के इस बड़ी संस्था में न केवल हिन्दुस्तान के हिस्सों से विद्यार्थी खिंचे चले आते हैं बल्कि इण्डोनेशिया, मलेशिया, अफ़ग़ानिस्तान, मध्य एशिया और चीन जैसे सुदूर मुल्कों से भी यहां विद्यार्थी आते हैं। इतने लम्बे चौड़े क्षेत्र में दारुल उ़लूम की लोकप्रियता इस की महानता का सुबूत है। यह संस्था उचित अर्थों में इस्लामी शिक्षा की अन्तर्राष्ट्रीय यूनिवर्सिटी है।

मौलाना शौक़त अली (7 जनवरी 1941)

जो प्रभाव मेरे दिल पर देवबन्द को देख कर हुआ वह बहुत मन को प्रसन्न करने वाला था। मैं वह प्रभाव देवबन्द में पाता हूँ जिन से किसी क़ौम के ज़िन्दा होने का सुबूत मिलता है।

मौलाना अब्दुल बारी फरंगी महल

मैं ने जितने क़ौमी और सरकारी संस्थायें देखी हैं उन सब का हाल यह है कि उन की प्रसिद्धि उन से अधिक है जितने उनके कार्य प्रकाशित कियें जाते हैं लेकिन दारुल उ़लूम देवबन्द को देखने के बाद मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि इस की वास्तव में सेवा इस के प्रकाशन से बहुत अधिक है।

डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद (राष्ट्रपति भारत 13 जुलाई 1957)

आप के दारुल उ़लूम ने केवल इस मुल्क के बसने वालों ही की ख़िदमत नहीं की बल्कि आपने अपनी सेवा से इतनी प्रसिद्धि प्राप्त करली है कि विदेशों के विद्यार्थी भी यहां आये हैं, और यहां से शिक्षा प्राप्त करके जो कुछ यहां सीखा है अपने मुल्क में उसका प्रसार किया है। यह

इस मुल्क के सभी निवासियों के लिये सम्मान की बात है। दारुल उ़लूम के बजुर्ग इल्म को अमल के लिये पढ़ते हैं। ऐसे लोग पहले भी हुऐ हैं, मगर कम। उन लोगों का सम्मान बादशाहों से भी अधिक होता था। आज दारुल उ़लूम के बजुर्ग इस रास्ते पर चल रहे हैं। और मैं समझता हूं कि यह केवल दारुल उ़लूम या मुसलमानों ही की सेवा नहीं बल्कि पूरे मुल्क और पूरी दुनिया की ख़िदमत है। आज दुनिया में भौतिकता का बोल बाला है, जिस से बेचैनी फैली हुई है, और हृदयों में शांति समाप्त हो गई है, इस का ठीक इलाज आत्मज्ञान है, मैं देखता हूं कि सुकून और शांति का वह सामान यहां के बुजुर्ग प्रदान कर रहे हैं। अगर खुदा को इस दुनिया को रखना मंजूर है तो दुनिया को अन्ततः इसी मार्ग पर आना है।

फ़ख़रुद्दीन अ़ली अह़मद (राष्ट्रपति भारत 24 अप्रैल 1976)

मुझे दारुल उ़लूम को देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। इस संस्था ने इल्मो इरफ़ान की रोशनी से दुनिया वालों के दिलों को प्रकाशमान किया और इस की सम्मानित हस्तियों ने देश की राजनीति में नुमायां काम किया है और अपनी महानता का झण्डा ऊंचा किया है। इस बात को भी सभी जानते हैं कि यह संस्था मुल्क में अपनी इल्मी और सियासी सेवा में अ़ग्रे रही है।

मैं इस के कुतबख़ाने में अमूल्य किताबों के बड़े ज़ख़ीरे को देख कर प्रभावित हुआ। मुझे मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब उन के कार्यकर्ता अध्यापक और विद्यार्थियों से मिल कर बहुत खुशी हुई। मेरी दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला दारुल उ़लूम देवबन्द को नई रोशनी में पुरानी रिवायत (परम्प्रा) को क़ायम रखते हुए आगे बढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये और मुल्क व मिल्लत की सेवा में हमेशा इस को नुमायां मक़ाम हासिल हो। (आमीन)

नवाब बहादुर यार जंग (हैदराबाद दकन 30 अक्तूबर 1939)

इस युग में जब कि प्रकृतिवाद और दहरियत (नास्तिकता) ने दिलों और बुद्धि पर अधिकार कर लिया है और दुनिया में हर तरफ़ अधर्म का बोल बाला है वे पवित्र आत्मायें धन्यवाद की पात्र हैं जिन्हों ने इस संस्था की नींव रखी या जो लोग अब इसको सफलतापूर्वक चला रहे हैं।

पिछले 70–75 सालों से इस संस्था के सपूतों ने हिन्दुस्तान ही में नहीं बल्कि तमाम एशियाई मुल्कों में इल्म की रोशनी को जिस प्रकार फैलाया उस से सभी वाक़िफ़ हैं।

शेख़ अब्दुल्लाह (28 जनवरी 1968 ई.)

वर्तमान समय में दुनिया हर प्रकार के संघर्ष विशेष रूप से अस्तित्व के संघर्ष से दोचार हो रही है। यदि हम मदरसे के संस्थापकों में मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी और ह़ज़रत मौलाना मह़मूद ह़सन के किरदार को अपना मार्गदर्शक बनायें और संस्था के उद्देश्यों को ज़िन्दा रखें तो मुझे यक़ीन है कि इंशाअल्लाह तआला किरदार के संघर्ष और दूसरे हर प्रकार के कष्टों से छुटकारा प्राप्त करने में मानव जाति की बेमिसाल सेवा करें गे।

ख़्वाजा ख़लील अह़मद

(दरगाह ह़ज़रत सय्यद सालार मसूद ग़ाज़ी, बहराइच)

दारुल उ़लूम देवबन्द जो हिन्दुस्तान ही में नहीं बल्कि सारी दुनिया में इस्लामी ज्ञान और शिक्षा का एक बेमिसाल केन्द्र है और जामे अज़हर के पश्चात दुनिया में इसका विशेष स्थान है। यही मदरसा है जिस ने हिन्दुस्तान में इस्लामी ज्ञान का जो अ़रबी भाषा में है दरिया बहा दिये। हिन्दुस्तान के कोने–कोने में यहां के फ़ुज़ला (पढ़े हुए) दीनी इल्म की शिक्षा और इस्लाम की सेवा में लगे हुए हैं। दारुल उ़लूम देवबन्द ने दीन और ज्ञान की जो सेवा की वह आफ़ताब (सूर्य) की भांति प्रकाशमान है। हां कोई हठधर्मी सच्चाई की दुश्मनी से अपनी आंखें बन्द करले तो उसका इलाज नहीं।

ह़कीम अब्दुल ह़मीद (संस्थापक जामिया हमदर्द दिल्ली)

हिन्दुस्तान की यह इल्मी (शैक्षिक) और रूह़ानी संस्था इल्म दीन की ख़िदमत में तल्लीन है। अपनी एक सौ तेरह साल की ज़िंदगी में इस ने इस्लामी शिक्षा के बहुत से शोबों में हज़ारों एसे विद्वानों को जन्म दिया है जिन के प्रभाव उपमहाद्वीप में ही नहीं बल्कि दूसरे देशों में मौजूद रहे हैं, और अभी तक मौजूद हैं।

जे,पी,एस, ओबराय (प्रोफ़ेसर समाज शास्त्र दिल्ली विश्वविद्यालय)

मैं ने अफ़ग़ानिस्तान में समाज शास्त्र पर जो रिसर्च (शोध) किया

उससे मुझे ज्ञात हुआ कि दारुल उ़लूम का प्रभाव मध्य एशिया में कहां तक फैला हुआ है।

अजीत प्रसाद जैन (राज्यपाल केरल 8 सितम्बर 1965)

इस्लामी देशों में जब हिन्दुस्तान का जिक्र आता है तो दारुल उ़लूम देवबन्द का नाम भी ज़रूर लिया जाता है। मिस्र के जामिया अज़हर में जब मैं ने अपने आप को देवबन्द के समीप का रहने वाला बताया तो वहां के उलमा ने बड़ी प्रसन्नता जताई, जिस से मैं ने अपने सम्मान में बढ़ोतरी पाई।

नवाब लतीफ़ यार जंग बहादुर (हैदराबाद दकन 27 अप्रेल 1929)

मैं ने विभिन्न कोटि की जमातों और उन की जमातों में ठहर कर उन की बातों को सुना और देखा, दिल बहुत खुश हुआ। मालूम होता है कि अल्लाह की कृपा इस दरसगाह पर है। इस वक़्त लगभग छह सौ से अधिक विद्यार्थी हैं, और अधिकतर मदरसे ही में रहते हैं। सब मस्जिद में नमाज़ पढ़ने आते हैं। जीवन सादा और साफ़ है। रातों को बारह बजे तक आम विद्यार्थी और उसके बाद भी कुछ विद्यार्थी अध्यन करते हैं। जब, कोई व्यक्ति, किसी स्तर का हो उन के सामने आये तो अदब से सलाम करते हैं और विनम्र भाव से झुक कर पेश आते हैं। यह इस्लामी नूरानी शमा दूसरे स्थानों पर हिन्दुस्तान में तो समाप्त है। कहीं किसी पवित्र स्थान में हो तो हो।

ख़ूराक तक़सीम (भोजन वितरण) के समय मैं ने देखा कि एक नियमित तरीक़े पर खामोशी से बिना शोरगुल के तक़सीम हो जाती है। रोटी और सालन को चख कर देखा, अच्छा और मज़ेदार था। भवन निर्माण को भी देखा भली–भांति कराया गया था। सफ़ाई इतनी अच्छी कि सरकारी दफ़्तर जिन पर हज़ारों रूपये ख़र्च होते हैं उस से किसी तरह कम नहीं। तात्पर्य यह कि मुझे मेरी उम्मीद से अधिक दर्सगाह नज़र आई। अध्यापकगण अपने विषयों में प्रवीण हैं। मेरे दिल से दुआ निकलती है कि अल्लाह तआला कार्यकर्ताओं की उमर बढ़ाये और ईमान में बरकत दे। अफ़सोस है कि जो कुछ मैं ने देखा उसको प्रकट करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं।

सय्यद मुहीउद्दीन

(प्रिंसिपल उस्मानिया कालेज दकन 18 अग. 1938)

मैं ने कुछ जमातों की शिक्षा का निरीक्षण किया। माशा अल्लाह उन्नतिशील पाया। विद्यार्थियों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। दर्जा तह़तानियह, तजवीद और फ़ारसी की जमातों को विशेष रूप से देखा। तह़तानियह जमातों की शिक्षा भी ऊंची जमातों की भांति बहुत अच्छी ह़ालत पर है। अल्लाह तआला से दुआ है कि दिन प्रति दिन इस में उन्नति हो। यह जामिआ़ जो हिन्दुस्तानी मुसलमानों का अकेला बड़ा दीनी मदरसा है, बराबर तरक़्क़ी करता रहे, और मुसलमानों की भविष्य की नस्लों को लाभ पहुंचाता रहे, और इस्लाम की रोशनी पूरी दुनिया में फैले।

एम. ए. अमीन

(डिप्टी डाइरेक्टर आल इण्डिया रेडियो 10/09/1950)

मेरे लिये यह प्रसन्नता की बात है कि मुझे इस पुरानी संस्था को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहां पर सादा जीवन उच्च विचार अपनी वास्तविक आत्मा के रूप में मिलती हैं। मुझे मौलाना सय्यद हु़सैन अह़मद और मौलाना मुबारक अ़ली ने दारुल उ़लूम की सैर अपने साथ कराई। मैं ने कुछ लेक्चरों को सुना और देखा कि कक्षाओं में किस प्रकार शिक्षा दी जाती है। और यह भी देखा कि विद्यार्थियों को किस अनुशासन के साथ खाना तक़सीम किया जाता है। मतबख (रसोई) बड़ा साफ़ सुथरा था। दारुल उ़लूम की मालियात का ह़िसाब बड़े सुन्दर ढंग से रखा जाता है। दरुल उ़लूम में एक बहुत बड़ा पुस्तकालय है जिसमें विभिन्न विषयों पर असंख्य पुस्तकें हैं। वास्तविकता यह है कि यह इदारा एक छोटी सी यूनिवर्सिटी है। मुअज़्ज़िन की आवाज़ पर जिस प्रकार विद्यार्थी और अध्यापकगण नमाज़ के लिये जमा हो जाते हैं इस ने मुझे बड़ा प्रभावित किया। शारीरिक व्यायाम भी कराया जाता है, शाम के समय विद्यार्थी एक बड़े मैदान में खेलने के लिये इकट्ठा हो जाते हैं। मैं दारुल उ़लूम के समस्त कार्यकर्ताओं का आभारी हूं विशेष रूप से मौलाना हु़सैन अह़मद मदनी और मौलाना मुबारक अ़ली का कि इन ह़ज़रात ने बड़ा सम्मान दिया।

मुह़म्मद अब्दुल फ़त्ताह़ औदह (नाज़िम नशरयात अ़रबी दिल्ली रेडियो)

यह एक वास्तविकता है कि मैं ने देवबन्द में इस्लाम का एक क़िला पाया, ईमान और सुन्नते नबवी की एक पनाहगाह पाई। यहां आकर मैं ने ज्ञात किया कि दुनिया व आख़रत दोने के लिये किस प्रकार योग्यतायें रखी जाती हैं और यह कि पूर्वजों का अनुकरण जिस की बड़े–बड़े बुज़ुर्गों ने रक्षा की है और जिन से विद्यार्थीगण लाभ उठा रहे हैं यह बड़ी मूल्यवान मीरास है जिस को मानना हमारे लिये ज़रूरी है। और यह भी अनिवार्य है कि हम भविष्य के निर्माण के लिये इसे सुतून बनालें और यक़ीनन हिन्दुस्तान की आज़ादी में बड़े–बड़े बुज़ुर्गों की कोशिश और देश की स्वतन्त्रता के मार्ग में महान अध्यापक मौलाना हुसैन अह़मद मदनी के नतृत्व में इन बज़ुर्गों के चेहरे की रोशनी हिन्दुस्तान में मुसलामानों और इस्लाम को ऐसी दीनी और दुनियावी बड़ी शक्ति पैदा कर देगी जिसपर आज़ादी और ईमान के बड़े क़िलों का निर्माण किया जा सके।

अली अमीर मइज़ (नाज़िम नशरयात फ़ारसी दिल्ली रेड़ियो)

यही स्थान है जहां मैं ने वास्तविक इस्लाम का बड़प्पन और पवित्रता का अनुभव किया, और इस प्रकार पाया कि मुसलमानों की सफ़ें नमाज़ में खाली नहीं और प्रत्येक आगे बढ़ने और एक दूसरे का स्थान लेने की कोशिश करता है। आख़िर कार एक दिन आये गा कि इस्लाम के संगठन और सादगी का साया मुसलमानों की पवित्रता और निःस्वार्थ भाव के परिणाम में 'नूरे मुहम्मदी' यानी इस्लाम का प्रकाश पूरी दुनिया में छा जायेगा। इस्लाम, यानी रसूले खुदा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के बताये हुए तरीक़े के अनुसार खुदा की इबादत जिस से हम मध्य एशिया के देश दूर हो गये थे और दुनियावी माल दौलत और वैभव ने हमारी आंखों को अंधा कर दिया था उस इसलाम को हमने इस पवित्र स्थान पर देखा और पाया, और इस्लाम की बड़ाई से हम दो बारा आगाह (जानकार) हुए।

एच. एम. एस. हुसैन (सिकन्दराबाद 15 नवम्बर 1958)

उम्र भर में तवक्कुल (अल्लाह का भरोसा) का फ़लसफ़ा आज

दारुल उ़लूम का अमल (कार्य) देख कर समझ में आया है। मदरसे के प्रबन्धकों की वह पहली मिसाल है जो मैं ने अपनी उमर में देखी है। अल्लाह तआ़ला तमाम मुसलमानों को ऐसे नेक अमल करने की तौफ़ीक़ प्रदान करें। मैं दारुल उ़लूम के तमाम कार्यकर्ताओं और विशेष रूप से जनाब अल्लामा क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब की सेवा में इस नेक काम पर मुबारकबाद पेश करता हूं।

सी. एल. माथुर (स्टाफ़ रिपोर्टर दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्ज़ दिल्ली)

इस महान अद्वितीय संस्था को देखकर मेरा मानसिक स्तर ऊँचा हो गया मैं अपनी भावनाओं को हिन्दुस्तान टाइम्ज़ में व्यक्त करूंगा।

प्रोफ़ेसर हुमायू कबीर (वज़ीर साइंसी तह़क़ीक़ात, भारत सरकार)

मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि आज जब कि दुनिया भर की यूनिवर्सिटियां करोड़ों रूपय ख़र्च करती हैं, यह दारुल उ़लूम बहुत ही कम खर्च से इतनी बड़ी और क़ाबिले क़दर ख़िदमात (सेवायें) अंजाम दे रहा है। यह सच है कि अगर इस के संस्थापकों और कार्यकर्ताओं में ईश्वर भक्ति और जन सेवा की भावना न होती तो वह इस पर हर साल करोड़ों रूपय ख़र्च करते मगर इन की क़ुर्बानी और सदभावना की यह दशा है कि इन्हों ने कभी हुकूमत से इमदाद के लिये एक पैसा नहीं मांगा, और केवल अल्लाह के भरोसे और ग़रीब मुसलमानों की इमदाद पर इसे चलाते रहे और आज तक चला रहे हैं। अगर ऐसे दारुल उ़लूम को कोई मिश्नरी सोसाइटी चलाती तो उस का सालाना बहजट किसी रियासत के बजट से कम न होता, मगर दुनिया सुनकर आश्चर्य करेगी कि दारुल उ़लूम एक सौ साल से कम से कम ख़र्च के साथ ऊंची से ऊंची सेवा कर रहा है, वह उलमा जो किसी सरकारी यूनिवर्सिटी में प्रोफ़ेसर बन कर हाज़ारों रूपयें प्रतिमाह तनख्वाह (वेतन) पाते वह इसमें बहुत कम तनख्वाह लेकर काम करते हैं और बोरिया पर बैथ कर वह काम करते हैं जो इयर कण्डीशण्ड कमरों और कुर्सियों पर भी नहीं किया जा सकता।

यह दारुल उ़लूम दूसरी यूनिवर्सिटियों के लिये एक मिसाली यूनिवर्सिटी है, इसकी सादगी और इस के कार्यकर्ताओं का खुलूस व क़ुर्बानी और उद्देश्य को प्राप्त करने की लगन दूसरों के लिये नमूना है।

जो लोग यह समझते हैं कि यह संस्था साम्प्रदायिकता फैलाती है वे चमकते हुए सूर्य की किरणों का इनकार करते हैं, न केवल यह संस्था बल्कि इस के विद्वान और अध्यापकगण साम्प्रदायिकता के सदैव मुख़ालिफ़ रहे हैं। साम्प्रदायिकता की मुख़ालफ़त बहुत मामूली बात है इस संस्था ने तो सारे मुल्क में देश की स्वतन्त्रता की शमा प्रज्वलित की और क़ौम को आज़ादी के लिये जगाया। अगर इस के बुजुर्ग उस समय आज़ादी का नारा न लगाते जब की कांग्रेस का वुजूद तक न था तो आज हिन्दुस्तान का इतिहास यह न होता जो आज है। यह संस्था आज़ादी का मार्गदर्शक और देश की प्रभुसत्ताा का पोषक है। आज़ादी का जो बीज इस ने बोया आज हम उसका फल खा रहे हैं।

जगदीश सहाय (जस्टिस इलाहाबाद 12 मई 1936)

हृदय में विश्वास भावना लिये हुए मैं ने दारुल उ़लूम की सैर की जो कुछ मैं ने देखा वह इस से कहीं अधिक था, जो मैं ने सुना था। यह एक एसी संस्था है जिस पर हिन्दुस्तान को फ़ख (अभिमान) करना चाहिए, सिर्फ़ यही नहीं कि यह संस्था सारी दुनिया में अपने प्रकार की अकेली संस्था है, बल्कि यह इल्म का एक बहुत बड़ा केन्द्र है जो पृथ्वी पर चारों ओर अपना प्रकाश फैला रहा है। यह संस्था हर प्रकार की इमदाद और सहायता के योग्य है।

बी. गोपाल रेडी–(यू. पी. के राज्यपाल 22 सितम्बर 1969)

मुझे खुशी है कि मैं दारुल उ़लूम देवबन्द देख सका जो आज अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर इस्लामी शिक्षा की एक प्रसिद्ध संस्था है। इस केन्द्र में एक बहुत बड़ी लाइब्रेरी है, और डेढ़ हज़ार से अधिक विद्यार्थी यहां शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। संख्या में विद्यार्थियों को खाना, रहना, किताबें मुफ़त दी जाती हैं। मेरी इच्छा है कि यह संस्था धार्मिक शिक्षा के एक केन्द्र की हैसियत से अपनी आन बान को बाक़ी रखे और देश की सेवा की भावना को भी बढ़ावा देने में और ज़ोर दे।

अकबर अ़ली खां (गवर्नर उत्तर प्रदेश 12,13 दिसम्बर 1973)

मैं आज इस दारुल उ़लूम में हाजरी को अपने लिये सौभाग्य समझता हूं। मेरी नेक तमन्नायें इस शैक्षिक केन्द्र, और हिन्दुस्तान की आज़ादी के मर्कज़ के साथ हैं और हमेशा रहेंगी। खुदा करे यह दारुल

उ़लूम दिन–प्रतिदिन तरक़्क़ी करे और ज्ञान के विकास में और जन सेवा की भावना में तरक़्क़ी देने और देश प्रेम के एहसास को अधिक शक्तिशाली करने में अपनी पुरानी कोशिश को जारी रखे।

शहबाज़ हुसैन (तरक़्क़ी उर्दू बोर्ड वज़ारते तालीम हकूमत हिन्द)

दारुल उ़लूम एक ऐसी राष्ट्रीय संस्था है जिस पर बड़ा अभिमान किया जा सकता है। यहां आकर मुझे बेहद खुशी हुई। यहां की शिक्षा पद्धती, विद्यार्थियों की सुविधायें और अध्यापकों का ज्ञान लग भग पूरे देश में अलग है। इस संस्था ने बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है। और मुझे यक़ीन है कि भविष्य में भी इस से देश को मूल्यवान लाभ पहुंचेंगे।

मंजूर आ़लम कुरैशी (अ़रब में भारत के सफ़ीर 5 मार्च 1976)

मैं अपने आप को बहुत खुश क़िस्मत ख़्याल करता हूं कि अल्लाह की कृपा से आज मेरी यह बहुत पुरानी इच्छा इस प्रसिद्ध संस्था दारुल उ़लूम देवबन्द की ज़ियारत (दर्शन) की पूरी हुई। यह संस्था इस्लाम, अ़रबी ज़ुबान और मुल्की ज़ुबानों की अनथक सेवा कर रही है। शिक्षा, रिहाइश और खूराक (भोजन) का प्रबंध अनुकरणीय है। मुझे यह जानकारी कर के यह आश्चर्य हुआ कि विद्यार्थियों को भोजन, कमरा, किताबें मुफ़त दी जाती हैं। यह संस्था 1866 ई. में लग भग सात सौ रूपय सालाना आमदनी से आरम्भ हुइ थी और इस का बजट 26 लाख रूपयों का है और ये तमाम ख़र्चे प्रांतीय या केन्द्रीय हूकूमत की किसी इमदाद के बग़ैर केवल जनता के द्वारा पूरे होते हैं। मैं खास तौर से मौलाना मुहम्मद तय्यब साहब मोहतमिम और उनके स्टाफ़ का आभारी हूं कि उन्हों ने मेरे निरीक्षण के सम्बन्ध में तकलीफ़ उठाई।

लाब्रेरी को देख कर मुझे असीमित खुशी प्राप्त हुई जिस में अ़रबी, फ़ारसी और उर्दू के नायाब लेख हैं, कुरआन शरीफ़ के कुछ हस्थलेख पुरातन आर्ट के अमूल्य नमूने हैं। दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला इस संस्था को और तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाये, आमीन!

बसुदेव सिहं (स्पीकर उत्तर प्रदेश असम्बली 16 मई 1975)

आज मैं ने दारुल उ़लूम देखा, यहां इल्म के तअ़ल्लुक़ से जो काम हो रहा है इस की मुकम्मल सफलता का मैं इच्छुक हूं। मुझे असीम

प्रसन्नता मिली है। यह संस्था जनता की वास्तविक सेवा करती रहे यह मेरी दिली इच्छा है।

ज़रूरी नोट

21, 22, 23 मार्च 1980 (जुमादऊला 1400 हिजरी) को दारुल उ़लूम का सौ साला जलसा हुआ जिसमें 15 से 20 लाख मुसलमान, और पूरी दुन्या के आठ हज़ार से अधिक प्रतिनिधि मण्डल शरीक हुए।

इस के अतिरिक्त भारत, पाकिस्तान, बंग्लादेश के साथ ऐशिया, अफ़्रीक़ा, अमेरिका, यूरोप के अनेक प्रतिनिधि मण्डल, सफीर, उलमा, सरकारी सदस्य और मेहमान बराबर पधारते रहते हैं। दारुल उ़लूम में अनेक इमाम हरम मक्की जैसे शेख़ मुह़म्मद बिन अब्दुल्लाह अल–सुबैयिल, शेख़ अब्दुल रहमान बिन अब्दुल अज़ीज अल–सुदैस, शेख़ सउद बिन इबराहीम अल–शुरैम पधार चुके हैं।

अमेरिका में 9–11 हमलों के बाद तालिबान के देवबन्दी विचारों के कारण दारुल उ़लूम का नाम वैश्विक मीडिया में आने लगा। इसी कारण बहुत से विदेशी और इंटरनेशनल मीडिया के लोग दारुल उ़लूम आने लगे।